शब्द साधना

और

संस्कृति के युग पुरुष

सुरेश चौधरी 'इंदु'

अमृत महोत्सव

सम्पादन

रचना सरन

रचनाकार परिवार की भेंट

अनु
क्रमिका

- संपादकीय
- सुरेश चौधरी जी का परिचय
- सुरेश चौधरी का रचना संसार
- अभिव्यक्तियाँ
- संस्मरण
- काव्यात्मक अभिव्यक्ति
- शुभकामनाएं
- समीक्षा
- पत्र संदेश
- लोगों के विचार
- चित्र दीर्घा

संपादकीय :-

रचना सरन
अध्यक्ष
रचनाकार भारत फाउंडेशन
कोलकाता

ईश्वर कुछ लोगों को विलक्षण गुणों के आशीर्वाद के साथ धरती पर भेजते हैं; ऐसी ही प्रतिभा के धनी हैं आदरणीय सुरेश चौधरी सर।
सुरेश चौधरी सर से हमारा परिचय सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार आदरणीय दीक्षित दनकौरी सर के माध्यम से 2018 में हुआ था। जब पहली बार सुरेश सर से किसी कार्यक्रम में भेंट हुई तो वे हमें अत्यंत सरल और विनोदप्रिय लगे। हम अपनी ग़ज़ल प्रस्तुत कर रहे थे ।तब मुख्य अतिथि के रूप में मंचासीन सुरेश सर को हमने ताल मिलाते देखा तो बहुत अच्छा लगा। उसके बाद यद्यपि की कार्यक्रमों में मुलाकात हुई किंतु अधिक संवाद स्थापित नहीं हुआ था।
वे एक साहित्यिक समूह की स्थापना का मन बना रहे थे और योग्य रचनाकारों की तलाश में थे ।तब किसी ने उन्हें हमारे नाम का सुझाव दिया। इस दिशा में कुछ हो पाता, उससे पहले ही कोरोना ने दस्तक दे दी और शुरू हुआ ऑनलाइन कार्यक्रमों का सिलसिला।सुरेश सर के संयोजन और हमारे संचालन में एक के बाद एक अनेक सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए। सुरेश सर लगातार मेहनत करते रहे। " रचनाकार - एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रांति" की भारत के विभिन्न राज्यों और विदेशों में अनेक इकाइयों का गठन हुआ। सभी इकाइयां अपनी सक्रियता के चलते साहित्यकारों में अपनी पहचान बनाने लगीं।
सुरेश सर के परिचितों में बड़े नामी लेखकों, कवियों, शायरों के साथ साथ राजनेताओं, समाजसेवियों और उद्योगपतियों के नाम शुमार हैं। सर बहुत सहजता से उनको कार्यक्रमों में आमंत्रित करते रहे हैं।
प्रथम वार्षिकोत्सव ज़मीनी तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया। जिस दिन कार्यक्रम तय हुआ, उस दिन कोलकाता में इतनी बारिश हुई कि ऑरेंज अलर्ट जारी कर दिया गया। तमाम परेशानियों के बावजूद कोलकाता के तत्कालीन मेयर की अध्यक्षता में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और इतना सफल हुआ जिसका

आशा भी नहीं की जा सकती थी। सुरेश सर की सकारात्मक सोच किसी का हौसला पस्त नहीं होने देती।

उनका स्वास्थ्य प्रायः उन्हें परेशान रखता है। बार बार अस्पताल में भर्ती होकर ईलाज करवाना पड़ता है। साहित्य के प्रति उनका समर्पण उनकी ऊर्जा को घटने नहीं देता।

रचनाकार संस्था अपने पॅांच वार्षिक अधिवेशन एवं सम्मान समारोह सफलतापूर्वक आयोजित कर चुकी है। इसके अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक व काव्य संध्याओं तथा नियमित रूप से स्व. दुर्गावती चौधरी स्मृति काव्यगोष्ठियों का आयोजन होता रहता है, जिनमें नवांकुरों से लेकर प्रतिष्ठित साहित्यकार अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं।

सुरेश सर संस्था के सभी सदस्यों को अपने परिजनों जैसा मान देते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमें अपनी पुत्री मानते हैं और वैसा ही स्नेह भी देते हैं।

उनका सृजन कार्य अनवरत् चल रहा है। प्रतिदिन एक भजन लिखकर " इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स" में अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं। भाषा और साहित्य के साथ-साथ उनके जैसा भारतीय दर्शन, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और वेद-पुराणों का ज्ञान मुश्क़िल से ही पाया जाता है। इन विविध विषयों पर वे असंख्य पुस्तकें लिख चुके हैं।

रचनाकार के पटल पर प्रत्येक रविवार "ज्ञानगंगा" नामक कार्यक्रम प्रसारित होता है जिसमें वे धर्म, दर्शन, पुराणों, कर्मकाण्डों और संबंधित भ्रान्तियों पर चर्चा करते हैं तथा जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान भी करते हैं। विषयों पर गहरी पैठ और उल्लेखनीय स्मरण शक्ति चकित कर देती है।

उनके ७५वें जन्मदिन के शुभ अवसर पर जब इस पत्रिका को निकालने का निर्णय लिया गया, सभी सदस्यों ने सहर्ष अपने भाव कविताओं और आलेखों के माध्यम

से प्रेषित किए। सभी परिचितों ने भी प्रेमपूर्वक अपनी बात रखी । एक बात जो तक़रीबन सभी के आलेखों में थी _ सुरेश सर की विद्वता और विनम्रता का ज़िक्र। सुरेश सर बहुत सहजता से सबको अपना बना लेते हैं और फिर नि: स्वार्थ प्रेम भी देते हैं। सम्भवतः यही एक कारण है कि वे साहित्य जगत में इतने लोकप्रिय हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा चौधरी मैम का शीतल सानिध्य उनकी शक्ति है।

आज उनके ७५वें जन्मदिवस के अवसर पर ईश्वर से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों , उनकी कलम पर मॉं सरस्वती की कृपा बनी रहे और उनका आशीर्वाद हमारे साथ सदैव बना रहे।

रचना सरन,
सदस्य - पश्चिम बंग हिंदी अकादमी

सुरेश चौधरी ‘इंदु’
साहित्यिक जीवन वृतांत

प्रलेख

कवि • दार्शनिक • साहित्यिक पुनर्जागरण के पुरोधा • अनुवादक • फेलो चार्टर्ड अकाउंटेंट
45 प्रकाशित ग्रंथों के रचनाकार
इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्मानित
संस्थापक-अध्यक्ष : रचनाकार
संस्थापक : शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन

भाग–1
व्यक्तिगत एवं शैक्षिक परिचय
व्यक्तिगत विवरण
नाम : सुरेश कुमार चौधरी
साहित्यिक नाम : ‘इन्दु’
जन्मतिथि : 14 जुलाई 1952 (शासकीय अभिलेखों में : 4 अगस्त 1952)
जन्मस्थान : जमशेदपुर, झारखंड
पिता : स्वर्गीय श्री भोला राम चौधरी
माता : स्वर्गीय श्रीमती दुर्गावती चौधरी
निवास : कोलकाता, पश्चिम बंगाल
शैक्षिक योग्यता
विज्ञान स्नातक (भौतिकी, रसायन एवं गणित)
जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज
फेलो चार्टर्ड अकाउंटेंट (FCA)
भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान
मैट्रिकुलेशन
ए.डी.एल.एस. उच्च विद्यालय,

जमशेदपुर

प्रारम्भिक शिक्षा *भारतीय मॉडल स्कूल (आर्य समाज), जमशेदपुर*

व्यावसायिक यात्रा

1977–1982

प्रबंधक (वित्त) — उषा एलॉयज़ एंड स्टील्स

1982–1983

उपाध्यक्ष (वाणिज्य) — बिहार एलॉय स्टील्स लिमिटेड

1983–2008

वडोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल तथा कोलकाता सहित विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में इस्पात एवं सहायक उद्योगों से सम्बद्ध अठारह औद्योगिक इकाइयों के संस्थापक एवं प्रवर्तक।

2008–2011

आर्थिक सलाहकार

2011 से वर्तमान तक पूर्णकालिक साहित्यकार, दार्शनिक, चिंतक एवं समाजसेवी।

भाग–2

साहित्यिक यात्रा एवं योगदान

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' की साहित्यिक यात्रा विद्वत्ता, अध्यात्म, दार्शनिक चिंतन और काव्य-साधना का अद्वितीय समन्वय है।

उद्योग, वित्त एवं उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक दशकों तक सक्रिय रहने के पश्चात् उन्होंने स्वयं को साहित्य और अध्यात्म के प्रति समर्पित कर दिया। आत्मान्वेषण से प्रारम्भ हुई यह साधना कालांतर में भारत की आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार का व्यापक साहित्यिक अभियान बन गई।

अल्प समय में ही उन्होंने पैंतालीस प्रकाशित ग्रंथों की ऐसी समृद्ध श्रृंखला का सृजन किया, जो विविध विषयों को समेटे हुए है—

काव्य, भक्तिकाव्य,भारतीय दर्शन, वेदान्त

उपनिषद् अध्ययन,शास्त्रीय ग्रंथों की व्याख्या, साहित्यालोचना, काव्यानुवाद, सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन, भारतीय सांस्कृतिक विरासत, उनकी समस्त साहित्य-साधना तीन मूलभूत जीवन-**मूल्यों पर आधारित है—**

सत्य, करुणा, आत्मज्ञान

इन्हीं मूल्यों ने उनके साहित्य को वैचारिक गहराई, आध्यात्मिक ऊँचाई तथा मानवीय संवेदना प्रदान की है।

भारतीय शास्त्रीय काव्य-परम्परा के संरक्षण का संकल्प

श्री सुरेश कुमार चौधरी ‘इन्दु’ के साहित्यिक अवदान का एक अत्यंत विशिष्ट पक्ष भारतीय काव्य-परम्परा के शास्त्रीय छन्दों के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन का उनका सतत प्रयास है।

ऐसे समय में, जब समकालीन साहित्य का एक बड़ा भाग परम्परागत छन्दबद्ध काव्य से दूर होता जा रहा है, उन्होंने संस्कृत तथा हिन्दी की प्राचीन छन्द-परम्परा का गंभीर अध्ययन कर उसे आधुनिक साहित्य में पुनः प्रतिष्ठित करने का सार्थक प्रयास किया है।

उनकी रचनाएँ इस तथ्य की सशक्त पुष्टि करती हैं कि भारतीय काव्यशास्त्र की शास्त्रीय संरचनाएँ आज भी आधुनिक युग की आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा मानवीय अनुभूतियों को समान प्रभाव एवं सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ हैं।

'शब्द-साधना से शिवत्व तक': एक ऐतिहासिक साहित्यिक उपलब्धि

श्री चौधरी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों में 'शब्द-साधना से शिवत्व तक' का विशेष स्थान है।

इस ग्रंथ में उन्होंने संस्कृत के अनेक सुप्रसिद्ध स्तोत्रों का हिन्दी में ऐसा छन्दानुवाद प्रस्तुत किया है जिसमें मूल रचनाओं के—

अर्थ, छन्द, लय, संगीतात्मकता, तथा आध्यात्मिक भाव

—इन सभी का यथासंभव संरक्षण किया गया है।

यह कार्य केवल भाषान्तर नहीं, बल्कि संस्कृत और हिन्दी—दोनों भाषाओं की काव्य-परम्पराओं का सृजनात्मक समन्वय है।

यह कृति संस्कृत साहित्य, हिन्दी काव्यशास्त्र तथा भारतीय छन्द-विज्ञान पर लेखक की गहन पकड़ का प्रमाण प्रस्तुत करती है और आधुनिक हिन्दी साहित्य में छन्दानुवाद की एक विरल एवं उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

'६८ शरद रवीन्द्र की शरण'

बांग्ला और हिन्दी साहित्य के मध्य एक सांस्कृतिक सेतु

श्री सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' की एक अन्य महत्त्वपूर्ण कृति '६८ शरद रवीन्द्र की शरण' है।

इस ग्रंथ में उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अड़सठ चयनित काव्य-रचनाओं का हिन्दी में छन्दबद्ध रूपान्तरण प्रस्तुत किया है।

यह केवल शब्दानुवाद नहीं है, अपितु मूल काव्य की भाव-गरिमा, सौन्दर्य, लयात्मकता तथा कलात्मक अनुशासन को सुरक्षित रखते हुए हिन्दी पाठकों के समक्ष उसका पुनर्सृजन है।

यह कृति हिन्दी और बांग्ला साहित्य के मध्य एक सशक्त सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती है तथा अनेक विद्वानों, साहित्यकारों एवं समीक्षकों द्वारा सराही जा चुकी है।

विश्व रिकॉर्ड की साहित्यिक उपलब्धि

श्री चौधरी की साहित्य-साधना का एक अत्यन्त प्रेरणादायी अध्याय है—

ग्यारह सौ दिनों की अवधि में एक हजार मौलिक भक्तिगीतों (भजनों) की रचना।

यह अद्वितीय साहित्यिक उपलब्धि इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता प्राप्त कर चुकी है।

यह केवल संख्या का कीर्तिमान नहीं, बल्कि उनकी—

साहित्यिक अनुशासन, सृजनात्मक निरन्तरता, आध्यात्मिक साधना, तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण

—के प्रति अटूट समर्पण का प्रमाण है।

इस महायोजना की चयनित रचनाएँ 'भक्तिरस', 'इन्दु पदावली (निर्गुण)' तथा 'इन्दु पदावली (कृष्ण)' शीर्षकों से प्रकाशित हो चुकी हैं।

दर्शन और साहित्य का समन्वय

समकालीन साहित्यकारों में अनेक ऐसे हैं जो या तो कविता तक सीमित रहते हैं अथवा केवल दार्शनिक विमर्श तक; किन्तु श्री सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' की विशिष्टता यह है कि उन्होंने इन दोनों धाराओं का अत्यन्त संतुलित एवं सृजनात्मक समन्वय किया है।

वेदान्त, उपनिषद्, भागवत परम्परा, संस्कृत साहित्य तथा भारतीय दर्शन पर आधारित उनकी रचनाओं का उद्देश्य जटिल आध्यात्मिक अवधारणाओं को सामान्य पाठकों तक सरल, सरस एवं साहित्यिक शैली में पहुँचाना है।

उनकी लेखनी में—काव्य और दर्शन, भक्ति और तर्क, परम्परा और आधुनिकता, विद्वत्ता और संवेदनशीलता

—का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

भाग–3

सम्मान, अलंकरण एवं मान्यताएँ

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' की साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक साधना को देश की अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं ने समय-समय पर विविध सम्मान एवं अलंकरणों से विभूषित किया है। ये सम्मान उनके व्यापक साहित्यिक अवदान, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण तथा हिन्दी भाषा के संवर्धन में उनके उल्लेखनीय योगदान के प्रमाण हैं।

प्रमुख सम्मान एवं अलंकरण

राजभाषा सम्मान

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा प्रदत्त सम्मान।

'यू इंस्पायर अस' (You Inspire Us) सम्मान

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान (ICAI) की ईस्टर्न इंडिया रीजनल काउंसिल द्वारा अपने व्यावसायिक जीवन से परे साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया सम्मान।

हनुमान प्रसाद पोद्दार सम्मान

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, पूर्वी सिंहभूम द्वारा भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के संवर्धन में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदत्त सम्मान।

भारत गौरव सम्मान

साहित्य एवं सार्वजनिक जीवन में विशिष्ट योगदान के
लिए प्रदान किया गया प्रतिष्ठित सम्मान।

विद्या वाचस्पति (मानद उपाधि)

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा साहित्य एवं भारतीय ज्ञान-परम्परा में योगदान के लिए प्रदत्त मानद उपाधि।

साहित्य मार्तण्ड सम्मान

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना द्वारा हिन्दी साहित्य की समृद्धि में योगदान के लिए प्रदान किया गया सम्मान।

हिन्दी साहित्य शिरोमणि सम्मान

साहित्य मण्डल, नाथद्वारा द्वारा हिन्दी साहित्य की उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रदत्त सम्मान।

हिन्दी सेवा सम्मान

श्रवण शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए प्रदान किया गया सम्मान।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान

हिन्दी साहित्य एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संवर्धन में विशिष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया सम्मान।

वैदिक हिन्दी साहित्य में मानद डॉक्टरेट

भारतीय दर्शन, वैदिक चिन्तन एवं हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड रिसर्च टेक्नोलॉजी द्वारा मानदडॉक्टरेट(Honorary,Doctorat) से अलंकृत।

साहित्यिक प्रतिष्ठा

समकालीन हिन्दी साहित्य में श्री सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' को विशेष रूप से निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए जाना जाता है—

भारतीय शास्त्रीय छन्द-परम्परा के संरक्षण एवं पुनर्जीवन का सतत प्रयास।

संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर को छन्दानुवाद के माध्यम से हिन्दी पाठकों तक पहुँचाने का अभिनव कार्य।

भक्ति, दर्शन, अध्यात्म और साहित्य का संतुलित एवं सृजनात्मक समन्वय।

इन विशिष्ट योगदानों के कारण श्री चौधरी समकालीन हिन्दी साहित्य के उन रचनाकारों में प्रतिष्ठित हैं, जिन्होंने भारतीय ज्ञान-परम्परा, सांस्कृतिक विरासत और शास्त्रीय काव्य-संवेदना को आधुनिक युग में नई प्रासंगिकता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

भाग–4

वर्गीकृत ग्रंथ-सूची (Classified Bibliography)

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' का साहित्यिक अवदान विषय-वस्तु की दृष्टि से अत्यंत व्यापक एवं बहुआयामी है। उनके प्रकाशित ग्रंथों को निम्नलिखित प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(क) शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद एवं व्याख्या

इस वर्ग में संस्कृत के स्तोत्रों, वैदिक एवं दार्शनिक ग्रंथों के छन्दबद्ध अनुवाद तथा व्याख्यात्मक कृतियाँ सम्मिलित हैं। इनका उद्देश्य भारतीय ज्ञान-परम्परा के गूढ़ तत्त्वों को सामान्य पाठकों तक सरल एवं साहित्यिक रूप में पहुँचाना है।

(ख) दर्शन एवं आध्यात्मिक चिन्तन

इस श्रेणी में वेदान्त, उपनिषद्, आत्मविद्या, ईश्वर, जीव, ब्रह्म तथा भारतीय दार्शनिक परम्पराओं पर आधारित ग्रंथ सम्मिलित हैं। इनमें जटिल दार्शनिक अवधारणाओं का सहज, तार्किक एवं भावपूर्ण निरूपण मिलता है।

(ग) काव्य एवं भक्तिकाव्य

इस वर्ग में दोहा, गीत, पदावली, भजन तथा विविध छन्दों में रचित काव्य-संग्रह सम्मिलित हैं। इन रचनाओं में भक्ति, मानवीय संवेदना, आध्यात्मिक अनुभव तथा जीवन-दर्शन का सुंदर समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

(घ) साहित्यिक अनुवाद एवं सांस्कृतिक सेतु-निर्माण

इस वर्ग की कृतियाँ भारतीय भाषाओं के मध्य सांस्कृतिक संवाद स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। विशेषतः रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्य-रचनाओं का छन्दबद्ध हिन्दी रूपान्तरण हिन्दी और बांग्ला साहित्य के मध्य सृजनात्मक सेतु का निर्माण करता है।

(ङ) साहित्य, समाज एवं समसामयिक चिन्तन

इस श्रेणी में साहित्यालोचना, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर आधारित चिंतनपरक ग्रंथ सम्मिलित हैं, जिनमें लेखक ने साहित्य को समाज-निर्माण का प्रभावी माध्यम माना है।

भाग–5

'रचनाकार': एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' का साहित्यिक योगदान केवल लेखन तक सीमित नहीं है। उन्होंने साहित्य, संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में संस्थागत कार्य को भी समान महत्त्व दिया है।

इसी उद्देश्य से उन्होंने 'रचनाकार' की स्थापना की, जो आज एक सशक्त साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन के रूप में विकसित हो चुका है।

'रचनाकार' का ध्येय साहित्य, संगीत, नाट्यकला, चित्रकला तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए एक सृजनात्मक मंच प्रदान करना है।

यह संस्था समय-समय पर—

साहित्यिक संगोष्ठियों, कवि-सम्मेलनों, पुस्तकों के प्रकाशन, प्रतियोगिताओं, सम्मान समारोहों, तथा विविध सांस्कृतिक आयोजनों का आयोजन करती रही है।

इसके माध्यम से भारत सहित अनेक देशों के साहित्यकारों, कलाकारों एवं नवोदित रचनाकारों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन तथा परस्पर संवाद का अवसर प्राप्त हुआ है।

आज 'रचनाकार' एक वैश्विक साहित्यिक परिवार के रूप में विकसित हो चुका है, जो विभिन्न देशों के रचनाकारों को भारतीय सांस्कृतिक चेतना के सूत्र में जोड़ने का कार्य कर रहा है।

भाग–6

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक भी हैं।

यह संस्था साहित्य, संस्कृति और सामाजिक उत्तरदायित्व—इन तीनों क्षेत्रों का समन्वित मंच है।

फाउंडेशन की प्रमुख गतिविधियों में सम्मिलित हैं—

साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन के कार्यक्रम,

भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु पहल,

वार्षिक साहित्यिक सम्मान,

विशिष्ट साहित्यकारों एवं सांस्कृतिक विभूतियों का अभिनन्दन,

आर्थिक रूप से कमजोर कैंसर रोगियों की सहायता।

इस प्रकार शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन साहित्यिक चेतना को मानवीय सेवा से जोड़ने का एक प्रेरक प्रयास है। इसके माध्यम से श्री चौधरी ने यह सिद्ध किया है कि साहित्य केवल बौद्धिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के प्रति संवेदनशील दायित्व का भी माध्यम है।

भाग–7

सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' का साहित्यिक अवदान केवल पुस्तकों के प्रकाशन तक सीमित नहीं है। उनके लेखन और संस्थागत प्रयासों ने साहित्य, संस्कृति तथा समाज के विविध क्षेत्रों में सार्थक प्रभाव उत्पन्न किया है।

उनकी कृतियों ने विशेष रूप से निम्न वर्गों को प्रेरित एवं लाभान्वित किया है—

भक्तिकाव्य एवं आध्यात्मिक साहित्य के पाठक, भारतीय दर्शन के अध्येता.हिन्दी छन्द-काव्य के साधक, नवोदित कवि एवं साहित्यकार,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाएँ,भारतीय ज्ञान-परम्परा को सरल रूप में समझने के इच्छुक सामान्य पाठक

उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने भारतीय दर्शन जैसे गम्भीर विषयों को विद्वानों की सीमित परिधि से निकालकर सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। साथ ही, उन्होंने छन्दबद्ध काव्य की उस समृद्ध परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित करने का सतत प्रयास किया, जो आधुनिक साहित्य में धीरे-धीरे उपेक्षित होती जा रही थी।

उनकी साहित्य-साधना भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण के प्रति एक सतत एवं समर्पित अभियान का रूप धारण कर चुकी है।

भाग–8

वर्तमान एवं भावी साहित्यिक परियोजनाएँ

सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' निरन्तर साहित्य-सृजन में संलग्न हैं। उनकी अनेक महत्त्वपूर्ण परियोजनाएँ वर्तमान में निर्माणाधीन हैं, जिनसे हिन्दी साहित्य को नवीन आयाम प्राप्त होने की सम्भावना है।

1. चित्तौड़ महाकाव्य

लगभग पन्द्रह शताब्दियों के चित्तौड़ के इतिहास, शौर्य, त्याग, बलिदान, सांस्कृतिक वैभव एवं सभ्यतागत विकास पर आधारित एक महत्त्वाकांक्षी महाकाव्य।

इस ग्रंथ का उद्देश्य केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा, राष्ट्रचेतना और मानवीय मूल्यों की विकास-यात्रा को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना है।

2. 108 माणिकों में रामकथा

रामायण की विविध परम्पराओं का तुलनात्मक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।
इस परियोजना में कथा, चरित्र, नीति, दर्शन, सौन्दर्यबोध तथा भारतीय जीवन-दृष्टि के विविध आयामों का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

3. संस्कृत ग्रंथों का छन्दानुवाद

संस्कृत के महत्त्वपूर्ण स्तोत्रों तथा दार्शनिक ग्रंथों का हिन्दी में छन्दबद्ध अनुवाद करने की उनकी दीर्घकालिक योजना निरन्तर प्रगति पर है।
इस परियोजना का उद्देश्य भारतीय ज्ञान-परम्परा की अमूल्य धरोहर को मूल छन्द, लय और आध्यात्मिक भाव के साथ भावी पीढ़ियों तक पहुँचाना है।

भाग–9

साहित्यिक अवदान का समग्र मूल्यांकन
सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' का साहित्यिक महत्त्व केवल उनकी प्रकाशित पुस्तकों की संख्या में नहीं, अपितु उनके साहित्य की विशिष्टता, मौलिकता और सांस्कृतिक दृष्टि में निहित है।
उनकी साहित्य-साधना का मूल्यांकन चार प्रमुख आयामों में किया जा सकता है—

(1) संरक्षण

संस्कृत तथा भारतीय शास्त्रीय साहित्यिक परम्परा के संरक्षण, पुनर्स्थापन और लोकप्रियकरण का सतत प्रयास।

(2) छन्दानुवाद

संस्कृत के महत्त्वपूर्ण स्तोत्रों एवं काव्य-रचनाओं का ऐसा हिन्दी रूपान्तरण जिसमें मूल छन्द, लय, काव्य-सौन्दर्य और भाव-संवेदना सुरक्षित रहे।

(3) दर्शन

भारतीय दर्शन, वेदान्त एवं उपनिषदों के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल, साहित्यिक एवं जनसुलभ भाषा में प्रस्तुत करने का अभिनव प्रयास।

(4) सांस्कृतिक सेवा

लेखन के साथ-साथ साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना, सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन तथा समाजसेवा के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ बनाने का निरन्तर प्रयत्न।
इन चारों आयामों का समन्वय श्री चौधरी के साहित्य को समकालीन हिन्दी साहित्य में विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। उनका साहित्य अतीत की ज्ञान-परम्परा और वर्तमान की सामाजिक चेतना के मध्य एक जीवंत सेतु का कार्य करता है।

उपसंहार
सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' एक ऐसे साहित्यकार हैं, जिनके व्यक्तित्व में कवि, दार्शनिक, अनुवादक, सांस्कृतिक चिन्तक, समाजसेवी तथा संस्थान-निर्माता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।
उनकी पैंतालीस प्रकाशित कृतियाँ, इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता प्राप्त साहित्यिक उपलब्धि, संस्कृत स्तोत्रों के छन्दानुवाद का अभिनव कार्य, रचनाकार जैसे वैश्विक साहित्यिक आन्दोलन की स्थापना तथा शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के माध्यम से साहित्य और समाजसेवा का समन्वय—ये सभी उनके बहुआयामी जीवन-कार्य के सशक्त प्रमाण हैं।
उनकी साहित्यिक यात्रा भारतीय ज्ञान-परम्परा, आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत को समकालीन समाज से जोड़ने का एक सतत एवं समर्पित प्रयास है।
काव्य, दर्शन, भक्ति, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का जो समन्वित स्वर उनके साहित्य में प्रतिध्वनित होता है, वही उन्हें समकालीन हिन्दी साहित्य के विशिष्ट रचनाकारों की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित करता है।

सुरेश चौधरी का रचना संसार

अनुवादित कार्य का विवरण
1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी: श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।
1.2 प्रांजलि (भाग-2): श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।
1.3 वेद से वेदांत तक- मूल पाठ सहित 9उपनिषद: ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद |
समीक्षा : अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।
1.4 आदिशंकर रसमाधुरी:
मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद
1. भजगोविंद चौपाई एवं दोहों में अनुवाद:

2. महिषासुर मर्दिनी: कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्: हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम: कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत: लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत: मूल छंद में
आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव: मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद: विषय की विषद व्याख्या स्व- लिखित

1. शिव स्तुति - स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र: धनाक्षरी में
3. शिव पंचार मंत्र: चतुष्पदी में
4. द्वादश ज्योर्तिलिंग: चतुष्पदी में
5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्र

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र: चतुष्पदी एवं लावणी छंद
7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित): चतुष्पदी में
8. शिव मानस पूजा स्त्रोत: षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम: मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108-108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद

1.7 गोपी गीत: यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई की छूता दृष्टिगत है। इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी: देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1. 9 अप्रकाशित: भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद|

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण: रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प. बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठीजी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प. बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय, अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प. बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प. बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन: भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन: भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 ब्रह्म वाक्य: आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण-परिचय एवं समीक्षा: श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली-मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनोंपर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा: चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है । इनका भाष्य किसने-किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है । समुचित जानकारी जिसे एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति-परिचय एवं समीक्षा: कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ: सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से ।

शोध पुस्तक

4.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत: संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर

क्रमशः आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

4.19 लघु उपनीषद त्रयी: तीन सबसे छोटे उपनिषदों की विस्तृत समीक्षा एवं भाष्य, शंकर भाष्य के साथ साथ ही संस्कृत के मूल मंत्रों के साथ काव्यानुवाद (ईशोपनिषद, केनोपनिषद, माण्डूक्य उपनीषद)

काव्य

5.20 तिमिर ढलेगा: आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

5.21 बुलबुले- सी जिंदगी: 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

5.22 कुछ माणिक कुछ मोती: प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग-अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

5.23 प्रांजलि: जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

5.24 शून्य से शून्य तक: दृश्य काव्य की 101 रचनाएं जिन्हे बहुत सराहा गया है, इसकी समीक्षा लिखी है, रचना सरन ने।

5.25: इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है। छन्दों की भाषा प्रांजल है एवं समीक्षा लिखी है चंदा प्रह्लादका जी ने।

5.26: मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंदबद्ध गीतों का संग्रह भूमिका लिखी है

5.27 इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) :- ... भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.28: इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद: कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.29: दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

5.30 भक्तिरस - 1100 दिनों में 1000 भजन लिख कर विश्वकीर्तिमान बने भजनों म् से चुने हुए 125 भजनों का संग्रह

बाल गीत

6.31 आसमान को छू लें: जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

7.32 हे माँ: कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

7.33 माँ: मेरी जननी को हर वर्ष काव्याभ्ली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

अन्य विषय पर

7.34 मूल्यांकन: भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्रीकार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

7.35 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित: समय - समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लिखे लेखों का संग्रह। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

7.36 भारतीय काव्य संहिता: भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें - छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

8.37 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन: यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

शोध, सामाजिक एवं आध्यात्मिक

9.38 ऋग्वेदीय उपनिषद: ऐतिरिय उपनिषद, एवं कौशिकतीय उपनिषद का मूलमन्त्रों के साथ छन्द मुक्त काव्यानुवाद।

9.39 अथर्व वेदीय उपनिषद: प्रश्नोपनिषद, मंडूक उपनिषद का मूल मंत्रों के साथ छनाद मुक्त काव्यानुवाद।

9.40 यजुर्वेदीय उपनिषद: कठोपनिषद, तैतरीय उपनीषद, श्वेताश्वर उपनीषद के मूल मंत्रों के साथ अतुकांत छंदमुक्त काव्यानुवाद।:

9.41बून्द बून्द सागर: क्षणिकाओं की पुस्तक जिसकी समीक्षा विद्या भंडारी जी एवं डॉ उर्वशी श्रीवास्तव ने लिखी है।

9.42 Echo of souls: English translation of book Pranjali translated by Dr (pro) R K Gupta and Sri Ganesh Datt Bajaj of Haryana. published by sparrow publications

9.43 छन्द साधना, आत्मानुभूति और शिवत्व: यह लेखक की एक कल्पना है जिसमे लेखक ने 11 संस्कृत के विभिन्न स्तोत्रों का अनुवाद किया है परंतु खास बात है अनुवाद उन्ही छन्दों में किया है जिसमे वे मूल स्तोत्र हैं, इस तरह का विश्व में शायद यह पहला प्रयास है। (प्रेस में)

9.44 जयति जयति भारत: 100 पदों का खण्ड काव्य जो भारत माता की वंदना में लिखा गया है (प्रेस में)

जयपुर शाहपुर के राजा के सनिधी मे कवि सम्मेलन

अभिव्यक्तियाँ

हृदय भाव के कुंम कुंम, अक्षत,चंदन से मस्तकाभिषेक

सूर्य को दीपक की रोशनी और महा सिंधु को जलकणों से अलंकृत नहीं किया जा सकता वैसे ही पूर्णिमा को मावस की कालीमा और चंदन वन को कुछ पुष्प की गंध किसी परिधि में नहीं बांध सकती।

इस समानुपात में आदरणीय विद्वान साहित्य साधक, शब्द शिल्पी, एवं *रचनाकार* के संस्थापक सभापति माननीय श्री सुरेश चौधरी जी को शब्दों के रंग से विद्वता के कैनवास पर चित्रांकित कर पाना मेरे लिए अति दुर्लभ ओर अकल्पनीय है।

मेरी कांपती उंगलियां, अभी कलम को सही अंदाज में थामना भी नहीं जानती हैं, उम्र के 75 सावन और बसंत को आपने गीतों,रचनाओं ,कहानियों में श्रृंगारित किया हे आदरणीय !! आपको सादर नमन। वेद,ग्रंथ, रामायण गीता और अनेकानेक खंड काव्यों के मूल तत्व के विद्वान ,सनातन और वेद मंत्रों की सारगर्भित व्याख्या, को स्वयं की लेखनी से जन-जन के हृदय तक सरसता और सरलता से पहुंचने वाले, साहित्य साधना के परम तपस्वी, साधक की 75 वीं सालगिरह पर अनंत शुभकामनाएं और भावों के सुंदरतम पुष्पों से चरण वंदना करता हूं।
आपके विशाल व्यक्तित्व को अलंकृत करने की क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है मे नत मस्तक हूं।
आपके विशालतम व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में बांधने का प्रयास मात्र कर रहा हूं। स्वीकार कीजिए !!

नवस्वर, नवरस से गुंजित हो, सजते हैं जब गीत तुम्हारे
मोर, मोरनी के अधरों पर, रचते हैं तब गीत तुम्हारे
जब शब्दों के स्वर्णिम पक्षी मन मधुबन कलरव करते हैं

मंत्र ऋचाओं से अभिमंत्रित, लगते हैं तब गीत तुम्हारे

भव्य महोत्सव की चकाचौंध,ओर शुभ कामनाओं के अनमोल पलो में चुटकीभर बधाईयां मेरी भी स्वीकार कीजिए।

गीतेश्वर बाबू घायल
फिल्मी गीतकर
आष्टा, जिला सीहोर मध्य प्रदेश

व्यक्तित्व और कृतित्व-

शब्द, शास्त्र और साधना का सारस्वत संगम: सुरेश कुमार चौधरी “इन्दु”

सुरेश चौधरी 'इंदु' जी आधुनिक काल के उन विरल रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से यह सिद्ध किया है कि दर्शन जब काव्य की उंगली थामकर चलता है, तो वह सीधे आत्मा से संवाद करता है।

एक औद्योगिक शिखर से आध्यात्मिक काव्य की अनवरत यात्रा का सचल और जीवंत उदाहरण हैं- सुरेश कुमार चौधरी “इन्दु” जी। भारतीय वांग्मय में यह लोक स्वीकृत धारणा है कि लक्ष्मी और सरस्वती का वास एक ही स्थान पर दुर्लभ है, किंतु आधुनिक हिंदी साहित्य परिदृश्य में सुरेश कुमार चौधरी “इन्दु” एक ऐसे प्रखर अपवाद के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने व्यावसायिक जगत की ऊंचाइयों को छूने के उपरांत अपना सर्वस्व माँ शारदे के चरणों में अर्पित किया है। जमशेदपुर की लौह-नगरी में जन्मे और पले-बढ़े ‘इन्दु’ जी का जीवन वृत्तांत किसी आध्यात्मिक महाकाव्य की भांति है, जहाँ भौतिक उपलब्धियां अंततः आत्मिक शांति और सृजन की खोज में विलीन हो जाती हैं। 14 जुलाई 1952 को जन्मे सुरेश कुमार चौधरी की मेधा का आधार उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि में निहित है। विज्ञान (भौतिकी, रसायन, गणित) में स्नातक और तत्पश्चात् भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान से FCA (फेलो चार्टर्ड अकाउंटेंट) की उपाधि ने उनके चिंतन को तार्किक विस्तार और सूक्ष्म विश्लेषण की दृष्टि प्रदान की। लगभग तीन दशकों तक उन्होंने औद्योगिक जगत में एक सफल प्रवर्तक और आर्थिक सलाहकार के रूप में अपनी धाक जमाई, किंतु नियति उन्हें किसी और ही 'सृजन' के लिए तैयार कर रही थी। वर्ष 2006 में एक गंभीर अस्वस्थता ही उनके जीवन में 'टर्निंग पॉइंट' सिद्ध हुई। शैया पर पड़े हुए जिस आत्मचिंतन का बीजारोपण हुआ, उसने 2011 तक आते-आते उन्हें पूर्णकालिक लेखक और तत्वदर्शी दार्शनिक बना दिया। तब से लेकर आज तक, उन्होंने 36 ग्रंथों की रचना कर हिंदी साहित्य को अपने सृजन से समृद्ध किया है। 'इंदु' जी की बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल कवि नहीं, बल्कि एक सफल 'भाष्यकार' भी हैं। विश्लेषण करें तो आपका साहित्य सृजन की विविध धाराओं में प्रवाहित होता दिखाई देता है। सुरेश जी की विशिष्ट पहचान एक यह भी है कि इन्होंने कठिन संस्कृत शास्त्रों को जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया है। 'वेद से वेदान्त तक' में नौ उपनिषदों का काव्यात्मक अनुवाद और 'श्री दुर्गतिविनाशिनी' (दुर्गा सप्तशती का पद्यात्मक रूपांतरण) उनकी अनुवाद कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। 'भारतीय दर्शन', 'मनुस्मृति: परिचय एवं व्याख्या' और 'भ्रम और भ्रांतियाँ' जैसे अप्रतिम ग्रंथों के माध्यम से आप ने सनातन धर्म की वैज्ञानिकता और तार्किकता को स्थापित किया है। 'शून्य से शून्य तक', 'मैं जीवन दण्ड विधान हूँ' और 'इन्दु प्रभा' जैसी कृतियों में उनकी दार्शनिक गहराई और भावप्रवणता स्पष्ट झलकती है। आपकी एक कीर्तिमान उपलब्धि को मैं

अवश्य रेखांकित करना चाहूंगा- आपने 1100 दिनों में 1000 भक्ति कविताओं की रचना कर 'इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित कराया है। साहित्यिक और दार्शनिक साधना के लिए उन्हें 'राजभाषा गौरव सम्मान', 'विद्या वाचस्पति', और 'भारत गौरव' जैसे प्रतिष्ठित अलंकारों से विभूषित किया गया है। विशेष रूप से, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान द्वारा प्रदान किया गया “यू इन्स्पायर अस” पुरस्कार उनके उस प्रेरणादायी व्यक्तित्व का प्रमाण है, जो प्रोफेशनल जगत से निकलकर ज्ञान मार्ग पर अग्रसर हुआ। आप केवल शब्दों के शिल्पी नहीं, बल्कि कर्मयोगी भी हैं। 'शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन' के माध्यम से वे कैंसर पीड़ितों की सेवा और साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने का महती कार्य कर रहे हैं।

यकीनन सुरेश कुमार चौधरी “इन्दु” का साहित्य आज के कोलाहलपूर्ण समय में एक 'मौन प्रार्थना' की भांति शांत और गंभीर लगता है। आपकी आगामी कृतियां, विशेषकर 'चित्तौड़ का महाकाव्य' और 'रामकथा', भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का परिचायक होंगी। सुरेश चौधरी 'इंदु' जी आधुनिक काल के उन विरल रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से यह सिद्ध किया है कि दर्शन जब काव्य की उंगली थामता है, तो वह सीधे आत्मा से संवाद करता है।

मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूं कि समकालीन साहित्यकारों की कतार में मैं एक ऐसा भाग्यशाली रचनाकार हूं जो

सुरेश चौधरी 'इंदु' जी का विशेष स्नेह पात्र है। आपने अपनी साहित्यिक संस्था रचनाकार के अति प्रतिष्ठित सम्मान 'रचनाकार साहित्य गंधा प्रज्ञा विभूति से' मुझे न केवल अलंकृत किया है बल्कि अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति के हमारे कर्नाटक साहित्य महोत्सव (बेंगलुरु) तथा साहित्य अकादमी दिल्ली में आयोजित साहित्य शिरोमणि पंडित दामोदर दास चतुर्वेदी स्मृति सम्मान समारोह में सादर सम्मिलित होकर हमे गौरवान्वित किया है। साथ ही कोलकाता में आयोजित रचनाकार के वार्षिक महोत्सव में भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मुझे आमंत्रित कर मेरी प्रतिष्ठा की श्रीवृद्धि की है।

"बहुराष्ट्रीय पत्रिका 'प्रज्ञान विश्वम्' के माध्यम से साहित्य के इस मूर्धन्य मनीषी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर

विशेषांक प्रकाशित कर हमने जो साहित्यिक पुण्य अर्जित किया है, वह मेरे लिए अत्यंत तुष्टि और संतुष्टि का विषय है। साहित्य की साधना में रत ऐसे निष्काम तपस्वी साधक की ७५वीं वर्षगांठ (अमृत महोत्सव) के पावन अवसर पर, मैं उनके सक्रिय, सक्षम एवं स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायुष्य की मंगल कामना करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपकी यश-कीर्ति अक्षुण्ण और चिरंजीवी रहे-

पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद: शतम्।

श्रृणुयाम शरद: शतं प्रब्रवाम शरद: शतमदीना: स्याम शरद: शतं भूयश्च शरद: शतात्॥ तथास्तु!!

***पंडित सुरेश नीरव*, चिंतक प्रख्यात कवि, पत्रकार**

गौतम बुद्धि नगर, उत्तर प्रदेश

"सृजन, संस्कृति और सरस्वती के साधक : आदरणीय सुरेश दादा"
"विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।"

अर्थात् विद्या मनुष्य को विनम्रता प्रदान करती है और विनम्रता उसे श्रेष्ठता की ओर ले जाती है।

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो समय के साथ केवल एक नाम नहीं रहते, बल्कि स्वयं में एक परंपरा बन जाते हैं। वे जहां भी रहते हैं, वहां ज्ञान, संवेदना, संस्कृति और सृजन की एक नई ज्योति प्रज्वलित कर देते हैं। आदरणीय सुरेश दादा ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व हैं, जिनके भीतर साहित्य की गंभीरता, संस्कृति की आत्मा और मानवता की मधुर संवेदना एक साथ निवास करती है।

आज जब समाज में शब्दों की गरिमा धीरे-धीरे कम होती जा रही है, विचारों की स्थिरता टूट रही है और साहित्य को केवल औपचारिकता समझा जाने लगा है, ऐसे समय में सुरेश दादा अपनी लेखनी से साहित्य को जीवन का उत्सव बना रहे हैं। प्रतिदिन एक चिंतनशील, भावपूर्ण और समाजोपयोगी रचना लिखना कोई सामान्य कार्य नहीं है। यह केवल प्रतिभा नहीं, बल्कि साधना, अनुशासन और मां सरस्वती की अनुकंपा का परिणाम है। सच ही कहा गया है—

"न चोरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।"

अर्थात् विद्या ऐसा धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता, कोई राजा छीन नहीं सकता और जिसे जितना बांटा जाए, वह उतना ही बढ़ता जाता है।

सुरेश दादा ने इसी ज्ञानधन को समाज में बांटने का कार्य जीवनभर किया है। संस्कृत, हिंदी, बांग्ला और अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं पर उनकी समान पकड़ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाती है। धर्म, संस्कृति, राष्ट्रीयता, भारतीय सभ्यता और मानवीय मूल्यों पर उनकी रचनाएं केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि एक जागृत चेतना का स्वर हैं। उनकी लेखनी में भारतीय आत्मा की सुगंध है।

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियां उनके व्यक्तित्व पर अत्यंत सार्थक प्रतीत होती हैं—

"नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।"

वास्तव में सुरेश दादा ने अपने कर्मों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि जीवन केवल स्वयं के लिए जीने का नाम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने का माध्यम भी है। दर्जनों पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और

साहित्यिक मंचों के माध्यम से उन्होंने विचारों की ऐसी अलख जगाई है, जो नई पीढ़ी को प्रेरित करती रहेगी।

उनके द्वारा स्थापित “रचनाकार मंच” आज केवल एक संस्था नहीं, बल्कि साहित्य और संस्कृति का जीवंत परिवार बन चुका है। प्रतिवर्ष देश के विभिन्न राज्यों से साहित्यकारों, संगीतकारों, कलाकारों और विद्वानों को एक मंच पर आमंत्रित कर कार्यक्रम आयोजित करना अत्यंत कठिन कार्य है। इसके पीछे केवल आयोजन क्षमता नहीं, बल्कि साहित्य और संस्कृति के प्रति अटूट समर्पण चाहिए।

कोलकाता की सांस्कृतिक भूमि पर उन्होंने जिस प्रकार साहित्य और कला का वातावरण निर्मित किया है, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। शास्त्रीय संगीत, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, साहित्यिक गोष्ठियां और युवा प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना—ये सब उनके व्यापक चिंतन को दर्शाते हैं। वे निरंतर यह संदेश देते हैं कि भारतीय कला और संस्कृति केवल इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की भी पहचान हैं।

“सा विद्या या विमुक्तये।”

अर्थात् वही विद्या श्रेष्ठ है जो मनुष्य को संकीर्णता से मुक्त कर व्यापक दृष्टि प्रदान करे।

विशेष रूप से यह बात अत्यंत प्रेरणादायक है कि सुरेश दादा ने केवल वरिष्ठ और प्रतिष्ठित लोगों को ही महत्व नहीं दिया, बल्कि युवा पीढ़ी को भी अपने साथ जोड़कर रखा। आज के समय में जहां पीढ़ियों के बीच संवाद कम होता जा रहा है, वहां उन्होंने अनुभव और युवा ऊर्जा के बीच एक सुंदर सेतु का निर्माण किया है। यही कारण है कि देश के विभिन्न कोनों से लोग उनसे जुड़ते हैं और उनके प्रति आत्मीयता अनुभव करते हैं।

उनके व्यक्तित्व का एक अत्यंत संवेदनशील और प्रेरणादायक पक्ष उनका पारिवारिक दृष्टिकोण भी है। जिस समाज में अधिकांश स्त्रियां अपने पति के नाम से पहचानी जाती हैं, वहां उन्होंने अपनी धर्मपत्नी इंदु जी के नाम को अपने उपनाम के रूप में अपनाकर एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह केवल प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि स्त्री सम्मान और समानता के प्रति उनकी गहरी संवेदना का प्रमाण है।

महादेवी वर्मा की पंक्तियां यहां स्मरण हो आती हैं—

“मैं नीर भरी दुख की बदली,
स्पंदन में चिर निस्पंद बसी।”

स्त्री के सम्मान और उसकी गरिमा को समझने वाला पुरुष ही वास्तव में संवेदनशील समाज का निर्माण कर सकता है। सुरेश दादा का यह दृष्टिकोण उन्हें केवल साहित्यकार ही नहीं, बल्कि एक श्रेष्ठ मानव भी सिद्ध करता है।

उनका संपूर्ण परिवार—पुत्र, पुत्रवधू और अन्य सदस्य—सदैव उनके कार्यों में सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। मैंने स्वयं देखा है कि किस प्रकार पूरा परिवार उनके आयोजनों में समर्पण भाव से जुड़ा रहता

है। यह दृश्य केवल पारिवारिक सहयोग का नहीं, बल्कि उन संस्कारों का प्रमाण है जो उन्होंने अपने जीवन से अपने परिवार को दिए हैं।

आज के समय में जब लोग प्रसिद्धि के पीछे भागते हैं, सुरेश दादा ने कर्म को अपनी पहचान बनाया है। वे उन व्यक्तित्वों में हैं जिनके लिए सम्मान कभी मांगा नहीं जाता, बल्कि समाज स्वयं उन्हें आदर देता है। उनके प्रति लोगों का आत्मीय लगाव और समर्पण इसी बात का प्रमाण है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियां उनके जीवन पर अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होती हैं—

"मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।"

सुरेश दादा ने अपने अथक प्रयासों और निरंतर सृजन से यह सिद्ध किया है कि यदि व्यक्ति के भीतर संकल्प और समर्पण हो, तो वह अकेले भी एक सांस्कृतिक आंदोलन खड़ा कर सकता है।

उनके 75वें जन्मदिवस पर हृदय से यही कामना है कि वे निरंतर स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें और अपनी साहित्य-साधना से समाज को आलोकित करते रहें। मां सरस्वती की कृपा उन पर सदा बनी रहे। वे "शतायु" हों और आने वाली पीढ़ियों को इसी प्रकार प्रेरणा देते रहें।

"शतं जीव शरदो वर्धमानः।"

अर्थात् आप सौ वर्षों तक निरंतर उन्नति करते हुए स्वस्थ और सुखी जीवन व्यतीत करें।

आदरणीय सुरेश दादा का जीवन वास्तव में यह संदेश देता है कि साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि समाज की आत्मा है। संस्कृति केवल परंपरा नहीं, बल्कि हमारी पहचान है। और संवेदना ही वह शक्ति है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

उनकी 75वीं वर्षगांठ केवल एक जन्मोत्सव नहीं, बल्कि एक ऐसे युगधर्मी साहित्यकार का अभिनंदन है जिसने अपने कर्म, विचार और सृजन से अनगिनत लोगों के जीवन को स्पर्श किया है।

मां सरस्वती से प्रार्थना है कि उनकी लेखनी सदैव इसी प्रकार समाज को प्रकाश देती रहे।

डॉ केकी कृष्ण
हाजीपुर, वैशाली,   बिहार, 844101
7903202955

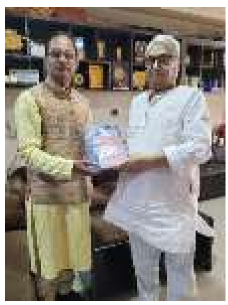

बिहार हिन्दी सम्मेलनी के अध्यक्ष अनिल सुलभ जी के साथ

भाव कलश

आदरणीय सुरेश चौधरी जी जिन्हे हम आदर और स्नेह से भाई जी कहते हैं आपके शुभ जन्मदिवस की अनंत शुभकामनाओं के साथ सादर अभिवादन

आपके विषय में जितना मैने जाना है तो यदि मैं एक लाइन में कहूँ तो आप एक सरल व्यक्तित्व वाले, सभी को प्रोत्साहित करने वाले एक संवेदनशील स्वभाव के धनी हैं।

आपने विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउन्टेनट्स, एकोल सुपेरियारेरोबोर्ट दी सौबोर्न फ़्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद (बीएससी, एफ़सीए, पीएचडी) की हुई है। आपके साहित्यक जीवन में आपकी अनेक उपलब्धियां आपके साथ कदम से कदम मिला कए चलती रही हैं।

आपके लिए पहले तो मैं यह कहूँ कि वास्तव में आप एक सहृदय और स्नेहिल व्यक्तित्व के धारक हैं। आप अपने जीवन में एक सफल अर्थशास्त्री रहे हैं साथ ही आप एक उच्चकोटि के साहित्यकार भी हैं आप के द्वारा रचित भजनमाला एवं अन्य ईश्वर के प्रति समर्पित अनेकों उच्चकोटि की रचनाएं आपको साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करने वाली हैं।

आपकी लिखित कुछ अद्भुत पंक्तियों को मैं उदृत करना चाहती हूँ जो आपके अंतस में व्याप्त कोमल संवेदनाओं को परिभाषित करती हैं--

हे चन्द्रशेखर अब तो बाहर आओ कैलाश से,
कालकूट निकल रहा अब भारत प्रभास से,
हलाहल ऊष्मा को तजने शीतलता पाने को
फिर से शशि धारण करना होगा ललाट पे

*

आप शब्द को परिभाषित करते हुए कहते हैं--

शब्द प्रेम शब्द अनुराह शब्द नेह बिखेरते हैं
शब्द विगत कटु स्मृतियां भी, कभी कभी उकेरते हैं
शब्दों के जग में खो गया, तो लुप्त ही साधना
शब्द गूँज इतनी थी, कर गई अशांत मन भावना

*

आपका प्रकृति के प्रति आकर्षण भी दर्शनीय है--

अर्ध निशा का सघन गगन द्युतमान था विधु प्रभा से
पलक पावनी तारिका माला विभावरी भी थी सजी हुई

उद्वेलित लहरें जलधि मध्य, चा~म्दनी सी थी रची हुई
चमकती बालुका रत्नाकर तट हेम-कणों सी बिछी हुई
*

आप समाज की विविध समस्याओं के निदान एवं उसके उत्कर्ष के प्रति सदैव सजग रहते जान पड़ते हैं। आपके द्वारा प्रथक-प्रथक विषयों पर लिखित आलेख वास्तव में सराहनीय हुआ करते हैं। साहित्य के क्षेत्र में आपको अनेक सम्मानों से अलंकृत किया गया है आपकी उपलब्धियों को जान कर तो ऐसा लगता है कि आपको सम्मानित कर सम्मान खुद ही स्वयं को सम्मानित महसूस करता होगा। आप लिखते हैं--

मानस की चौपाई हैं या, अतीत लिखी कथाएं हैं
तुलसी आँन बिरवा है माँ, या वेद की ऋचाएं हैं
*

आज के परिवेश में जब परस्पर संबन्धों के मूल्य क्षय होते जा रहे हैं तब आप कहते हैं--

उमड़ घुमड़ कर काले बादल, देख निराशा के आएंगे
दुख तो होगा ही जब अपने, स्वयं पराए हो जाएंगे

आपकी आध्यात्मिक सोच--

माटी तन माटी में मिलता, क्यूँ तू यूँ गुमान करे
एक बोल ही तेरे होंगे, क्यूँ न यह बात ध्यान धरे
*

आपने अपनी साहित्यक यात्रा में लगभग साठ वर्षों के बसंत पार किए हैं और यह यात्रा आपको स्वयं ही साहित्य की वासंतिक बेला तक लेकर आ पहुँची है।आप सदैव साहित्य की सेवा में निरंतर अपना योगदान बनाए रखिए यही कामना करती हूँ , क्योंकि आप एक महान विचारक और चिंतनशील व्यक्ति हैं ऐसे में आप जो भी लिखते हैं वह स्वतः ही वन्दनीय हो जाता है एवं हमारे समाज के लिए प्रेरणादायक भी।

यदि मैं अपनी बात करूँ तो मैं आपको जब से जानी हूँ तभी से मेरा आदर सदैव आपके प्रति रहा है।क्योंकि मैं भी थोड़ा बहुत लिखती रहती हूँ ऐसे में मेरी रचनाओं के प्रति आपके द्वारा प्राप्त उत्साहवर्धन मुझे सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आपने साहित्य के क्षेत्र में मुझे कुछ ऐसे रास्ते दिखाए हैं जिन पर चल कर मैं भी थोड़ा-बहुत आगे बढ़ सकी हूँ।

आपके लिए कुछ पंकियां--

सुभग मंगलकामना हैं आज शुभ दिन अनुकरण का।
प्रेरणा के स्रोत , जीवन है सरस पथ अनुसरण का।
आपका व्यक्तित्व शोभित , धर्म थामें आचरण का।।

हैं सुरेश स्वभाव के नम भाई अभिभावक गुरू भी।
स्वस्थ तन मन हो सदा खुशहाल जीवन बावली हो।
छंद में स्वर ताल की लय गीत की पुष्पांजली हो।
गंगा में रमें मन शारदे माँ का तनय तू।
मान श्रद्धा स्नेह में ज्यों घुल गई मिश्री डली हो।।
*
सुधा अहलुवालिया

जोधपुर से पधारे हरीदास जी एवं बंगलुरु से प्रेम तन्मय जी आवास में

परम श्रद्धेय, आदरणीय दादा सुरेश जी चौधरी

आपकी यशस्वी जीवन यात्रा के ७५ बसंत (हीरक जयंती) पूर्ण होने के शुभ अवसर पर समस्त साहित्य जगत, आपके अनुगामी और हम सभी प्रशंसक आपके पावन चरणों में सादर वंदन करते हुए गौरव का अनुभव कर रहे हैं।
इस मंगल बेला पर मैं आपकी उत्कृष्ट साधना के प्रति अपनी कृतज्ञता इन शब्दों में निवेदित करती हूँ-
*अगाध ग्रंथ ज्ञान के संवाहक- आपकी प्रज्ञा और मेधा ने अनेक प्राचीन एवं आधुनिक ग्रंथों के गूढ़ रहस्यों को आत्मसात किया हैआप ज्ञान के वह जीवंत विश्वकोश है, जिसे ज्ञानार्जन कर नई पीढ़ी संस्कारी और दिशावान बन रही है।
*सरस्वती के अनन्य साधक- आपका संपूर्ण जीवन माँ शारदा की अनवरत आराधना को समर्पित रहा है।आपकी सादगी, उच्च विचार और गंभीर विद्वता जो मैंने आपके सानिध्य में अनुभव की है। हम सभी के लिए यह सदैव अनुकरणीय और प्रेरणादायी रहेगी।
*मंगल कामनाएँ- परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको पूर्ण आरोग्य, शतायु और अविनाशी यश प्रदान करें।आपकी ज्ञान-गंगा निरंतर प्रवाहित होती रहे और आपकी लेखनी समाज को इसी प्रकार आलोकित करती रहे।

शुभाकांक्षी
वन्दना योगी 'जाह्नवी'
तिथि- १४ जुलाई २०२६
नीमच (म.प्र.)

सी ये पास करने के बाद की

सुरेश चौधरीजी

रचना-विशेषांक का प्रकाशित होना किसी भी साहित्यकार की सृजन-यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव होता है। यह केवल उनके लेखन का सम्मान नहीं, बल्कि उनके साहित्यिक सरोकारों, संवेदनाओं और विचार-दृष्टि की सार्वजनिक स्वीकृति भी है।

आपका गद्य और पद्य—दोनों से जुड़ा लेखन एक आध्यात्मिक स्पर्श प्रदान करता है। आपकी कविताएँ, दोहे, भजन तथा पुराणों की व्याख्या करता आपका लेखन अत्यंत प्रभावी है। विशेष रूप से आपकी भजन-पदावली मन पर अनूठी छाप छोड़ती है। धार्मिक ग्रंथों पर आपके विचार गंभीर, संतुलित और पठनीय हैं।

"ब्रह्म शून्य से भी परे,
आत्मा में है व्याप्त।
चक्षु खोल तू परख ले,
ईश्वर होंगे प्राप्त।।"

सिर्फ़ यही नहीं, जब आप आत्मीय रिश्तों और मानवीय भावनाओं को शब्द देते हैं, तब आपका लेखन पाठकों के मन को गहराई से स्पर्श करता है -

"जब असमान पर काली घटा घिर-घिर आए,
हटा बादलों को जीवन में उजास लाती है माँ।
अंतस जब दाह से जल-जल जाए,
फिरा हथेलियाँ शीतल फुहार बरसाती है माँ।
मन बेचैनियों से जब-जब घिरा हो,
खुशबू गुलाब की टपकाती है माँ।।"

आप साहित्य को संस्कारों की अंतर्धारा मानते हैं और आपका सम्पूर्ण सृजन उसी भावभूमि से उपजता हुआ प्रतीत होता है। आपका लेखन किसी एक वर्ग या समुदाय तक सीमित नहीं है; उसमें समाज के विविध पक्षों और संवेदनाओं का व्यापक स्वर उपस्थित है। श्रमिकों के जीवन-संघर्ष पर आधारित आपकी कविता के ये भाव अत्यंत मार्मिक हैं -

"अस्त-ध्वस्त-त्रस्त मेहनतकश,
काल के कपाल पर पस्त।
दैनंदिनी मात्र रोटी और श्रम,
ध्येय मात्र जीविका-उपार्जन।
उष्ण धरा या कठोर शीला,

कार्यरत श्रमिक,
सश्रम स्रवित स्वेद।
स्कंध से, तन से, मन से
श्रम-सुरभि आलोड़ित।

आपके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सकारात्मक दृष्टि है। जीवन के संघर्षों और विषमताओं के बीच भी आपका सृजन आशा, साहस और निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है -

"राह कठिन है, यह मान लिया मैंने।
पर रुकना नहीं, यह ठान लिया मैंने॥"

आपकी भाषा, व्याकरण-शुद्धता और अभिव्यक्ति की सशक्तता आपके लेखन को विशेष गरिमा प्रदान करती है।

मेरा सुरेशजी और उनके परिवार से 2025 में मिलना हुआ। सभी के आत्मिक व्यवहार से जुड़ी स्मृति आज भी जीवंत है। उनके परिवार का यही भाव पुनः मिलने की भावना को भी बनाए रखता है। मुझे लगता है किसी भी लेखक का कृतित्व उसके व्यक्तित्व का भी हिस्सा होता है, जिसमें परिवार की भूमिका विशेष होती है।

आपकी रचनात्मक ऊर्जा निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे और आपका साहित्य इसी प्रकार पाठकों के मन में संवेदना, संस्कार और सकारात्मकता का प्रकाश फैलाता रहे।

रचना-विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक मंगलकामनाएँ।

प्रगति गुप्ता
जोधपुर

वडोदरा एक उद्योगपति

अमृत महोत्सव : शब्द, साधना और संस्कृति के युगपुरुष सुरेश कुमार चौधरी "इन्दु" के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रस्तावना

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में कुछ व्यक्तित्व केवल व्यक्ति नहीं रहते, वे स्वयं एक युग, एक चेतना और एक जीवंत परंपरा बन जाते हैं। उनके जीवन का प्रभाव सीमित दायरे से निकलकर समाज की सामूहिक स्मृति में स्थायी स्थान बना लेता है। ऐसे ही बहुआयामी, प्रेरणास्पद और साहित्य-साधना में पूर्णतः समर्पित व्यक्तित्व हैं आदरणीय सुरेश कुमार चौधरी "इन्दु"। उनके 75वें जन्मवर्ष के पावन अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव केवल एक व्यक्ति विशेष का जन्मोत्सव नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य, संस्कृति, अध्यात्म और मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित एक दीर्घ साधना-यात्रा का अभिनंदन है।

साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं होता; वह संवेदनाओं का वह प्रवाह है जो समय की सीमाओं को लांघकर पीढ़ियों को जोड़ता है। सुरेश चौधरी "इन्दु" जी का सम्पूर्ण जीवन इसी सत्य का प्रमाण है। उन्होंने अपने कर्म, चिंतन और लेखनी से यह सिद्ध किया है कि जब साहित्य में दर्शन की गहराई, संस्कृति की सुगंध और अध्यात्म की प्रकाशमान चेतना समाहित हो जाती है, तब वह केवल पढ़ा नहीं जाता, बल्कि आत्मा में अनुभव किया जाता है।

उनका साहित्यिक अवदान जितना व्यापक है, उतना ही गंभीर और सारगर्भित भी। उन्होंने कठिन दार्शनिक और वैदिक विषयों को सामान्य जनमानस की भाषा में प्रस्तुत कर साहित्य को केवल बौद्धिक वर्ग तक सीमित नहीं रहने दिया। "वेद से वेदान्त तक", "भारतीय दर्शन", "मनुस्मृति : परिचय एवं व्याख्या", "भ्रम और भ्रांतियाँ", "शून्य से शून्य तक" जैसी कृतियां उनकी विद्वत्ता, तार्किकता और आध्यात्मिक दृष्टि की सशक्त परिचायक हैं। वे केवल कवि नहीं, बल्कि एक ऐसे मनीषी हैं जिन्होंने शब्दों को साधना का माध्यम बनाया।

भारतीय परंपरा में ज्ञान को सर्वोच्च धन कहा गया है—

"न चोरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।"

अर्थात् विद्या ऐसा धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता, कोई सत्ता छीन नहीं सकती और जिसे जितना बांटा जाए वह उतना ही बढ़ता जाता है।

विशेष रूप से सनातन परंपरा, वेद, उपनिषद, रामायण, गीता और भारतीय दर्शन के गूढ़ तत्वों को उन्होंने अत्यंत सरलता और सरसता के साथ प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य केवल विद्वानों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामान्य पाठक के हृदय तक सहज पहुंच जाता है।
उनकी लेखनी में अध्यात्म है, पर अंधविश्वास नहीं; दर्शन है, पर जटिलता नहीं; संस्कृति है, पर संकीर्णता नहीं। यही संतुलन उन्हें समकालीन साहित्यकारों की भीड़ में विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।
उनकी साहित्य-साधना का सबसे प्रेरणादायक पक्ष उनका अनुशासन और निरंतर सृजन है। प्रतिदिन चिंतनशील रचनाओं का सृजन, हजारों भक्ति कविताओं की रचना और साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से निरंतर सक्रिय रहना यह सिद्ध करता है कि उनके लिए साहित्य कोई शौक नहीं, बल्कि तपस्या है। 1100 दिनों में 1000 भक्ति कविताओं की रचना कर "इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" में स्थान प्राप्त करना केवल उपलब्धि नहीं, बल्कि अद्भुत साधना का प्रमाण है।
अपार साहित्यिक उपलब्धियों और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने के बावजूद उनमें कहीं भी अहंकार का भाव दिखाई नहीं देता। वे युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करते हैं, नवोदित प्रतिभाओं को मंच प्रदान करते हैं और साहित्यिक परिवार की अवधारणा को जीवंत बनाए रखते हैं।
उनके द्वारा स्थापित "रचनाकार मंच" आज एक साहित्यिक संस्था भर नहीं, बल्कि देशभर के साहित्यकारों, कलाकारों और संस्कृतिकर्मियों का एक आत्मीय परिवार बन चुका है। कोलकाता की सांस्कृतिक भूमि पर उन्होंने जिस प्रकार साहित्य, संगीत और कला का वातावरण निर्मित किया है, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। उनके आयोजनों में केवल औपचारिकता नहीं होती, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत आत्मा उपस्थित रहती है।
उनकी मानवीय संवेदनाएं केवल साहित्य तक सीमित नहीं हैं। "शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन" के माध्यम से वे समाजसेवा, विशेषकर कैंसर पीड़ितों की सहायता तथा साहित्यकारों के सम्मान और प्रोत्साहन का कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार उनका जीवन "कर्मयोग" का वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत करता है।
उनके साहित्य में केवल भक्ति और दर्शन ही नहीं, बल्कि राष्ट्र चेतना, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गौरव का स्वर भी अत्यंत मुखर है। वे भारतीयता को केवल अतीत का गौरव नहीं मानते, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शक्ति के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा देता है।
उनकी रचनाओं का प्रभाव इसलिए भी गहरा है क्योंकि वे जीवन को केवल बौद्धिक दृष्टि से नहीं, बल्कि अनुभूति की दृष्टि से देखते हैं। उनके शब्दों में अनुभव की तपिश, साधना की शुचिता और संवेदना की मधुरता समाहित रहती है। वे पाठक को केवल विचार नहीं देते, बल्कि भीतर से बदलने की प्रेरणा भी देते हैं।

आज जब उनकी 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर देशभर के साहित्यकार, चिंतक, पत्रकार, कलाकार और संस्कृति साधक उन्हें श्रद्धा, सम्मान और आत्मीयता के साथ स्मरण कर रहे हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि सुरेश चौधरी जी केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक जीवित परंपरा हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सच्ची सफलता वही है जो समाज को प्रकाश दे, संस्कृति को समृद्ध करे और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

उनका अमृत महोत्सव वस्तुतः साहित्य, संस्कृति, अध्यात्म और मानवीय मूल्यों के समन्वित उत्सव का प्रतीक है। यह उस तप, त्याग और साधना का अभिनंदन है जिसने शब्दों को समाज की चेतना में रूपांतरित किया।

मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है और ईश्वर से कामना करती हूं कि उनकी छत्रछाया
हमेशा मेरे सिर पर बनी रहे।
ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आदरणीय सुरेश कुमार चौधरी “इन्दु” सर जी स्वस्थ, सक्रिय और दीर्घायु रहें। उनकी लेखनी इसी प्रकार समाज को दिशा देती रहे।
आदरणीय सुरेश सर का जीवन वास्तव में इसी मंगलकामना का साकार रूप है।

चंदा प्रहलादका
प्रसिद्ध कवयित्री , समजसेविका
कोलकाता

पैंतीस साल पहले

साहित्य, संस्कृति और अध्यात्म के साधक : सुरेश चौधरी "इंदु"

आदरणीय सर से मेरा परिचय उन दिनों से है जब मैं फेसबुक से नई जुड़ी थी। एक मंच "सत्यम शिवम सुंदरम" में मेरा जुड़ना हुआ जहां सभी प्रतिष्ठित साहित्यकार थे। आदरणीय सर की रचनाएं उस वक्त दिल को छू जाती थी। साहित्य की गहन साधना और अध्ययन के बाद ही कोई साहित्यकार इतनी उन्नत रचनाएं लिख सकता है। धीरे धीरे हम वहां एक परिवार की तरह हो गए और सभी से एक आत्मीय लगाव-सा महसूस होने लगा। कुछ वर्षों बाद आदरणीय सर ने "रचनाकार" मंच की स्थापना की। संस्थापक के रूप में आज तक आपका अभिभावकत्व हम सभी को मिल रहा है। कोलकाता में हर साल संस्था की तरफ से अनेकों आयोजन होते रहते हैं जिनमें मुझे भी शामिल होने का मौक़ा मिलता रहता है।

हिंदी साहित्य जगत में सुरेश चौधरी "इंदु" एक ऐसे साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने साहित्य, अध्यात्म, संस्कृति और समाज के विविध विषयों पर गंभीर लेखन किया। उनका जन्म 14 जुलाई 1952 को जमशेदपुर (तत्कालीन बिहार, वर्तमान झारखंड) में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने विज्ञान स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंसी तथा पी-एच.डी. (अर्थशास्त्र) की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

व्यावसायिक जीवन में उन्होंने स्टील तथा संबंधित क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। व्यापारिक व्यस्तताओं के बावजूद साहित्य और लेखन के प्रति उनका समर्पण निरंतर बना रहा। वर्ष 2011 के बाद उन्होंने पूर्ण रूप से लेखन को अपना प्रमुख कार्य बना लिया। स्टील क्षेत्र में विशिष्ट कार्यों के लिए उन्हें "भारत गौरव सम्मान" से सम्मानित किया गया।

सुरेश चौधरी "इंदु" का साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यंत बहुआयामी है। उन्होंने साहित्य, अध्यात्म, संस्कृति और धर्म जैसे विषयों पर विशेष लेखन किया। हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा हेतु उन्हें राजभाषा विभाग, केंद्रीय सरकार द्वारा "राजभाषा गौरव" सम्मान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ द्वारा उन्हें "विद्यावाचस्पति" सम्मान से भी अलंकृत किया गया।

उनकी साहित्यिक उपलब्धियाँ अत्यंत प्रेरणादायक हैं। अब तक वे लगभग 25 पुस्तकों की रचना कर चुके हैं। उन्होंने "उड़ान" नामक हिंदी की बहुमुखी पत्रिका का संपादन भी किया तथा उनकी रचनाएँ देश की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं।

उनकी पुस्तकों में कविताएँ, अध्यात्म, धर्म-दर्शन, अर्थशास्त्र, बाल कविता, यात्रा-वृत्तांत और आलेख आदि विषय शामिल हैं। उनके लेखन में ज्ञान, संवेदना और भारतीय संस्कृति की गहरी छाप दिखाई देती है।

निस्संदेह, सुरेश चौधरी “इंदु” हिंदी साहित्य जगत के एक समर्पित साहित्यकार हैं, जिनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

- आराधना प्रसाद,

-पटना

नाथद्वारा साहित्य मण्डल
द्वारा प्रदत्त

साहित्य शिरोमणि सम्मान

अमृत महोत्सव : शब्द, साधना और संस्कृति के युगपुरुष
श्री सुरेश कुमार चौधरी "इन्दु" के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रस्तावना
डॉ शिवनाथ सिंह "शिव" की ओर से

कुछ दीप ऐसे होते हैं जो केवल अपना आँगन नहीं, युग का पथ आलोकित कर देते हैं। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो कागज पर नहीं, समय की शिला पर अंकित हो जाते हैं। *आदरणीय सुरेश कुमार चौधरी "इन्दु" दादा* ऐसा ही एक दीप हैं, ऐसे ही शब्दों के तपस्वी हैं।

75वाँ अमृत महोत्सव किसी आयु का उत्सव नहीं है। यह 75 वर्षों की उस अखण्ड साधना का महापर्व है जिसमें एक व्यक्ति ने स्वयं को तिल-तिल गलाकर **शब्द को वेद, साधना को राष्ट्र और संस्कृति को युगधर्म** बना दिया।

1. शब्द के साधक, मौन के तपस्वी

इन्दु जी ने सिद्ध किया कि साहित्य गोष्ठियों का श्रृंगार नहीं, जीवन का संस्कार है। ***"वेद से वेदान्त तक"*** लिखकर उन्होंने हिमालय को हथेली पर रख दिया – दुर्गम दर्शन को मातृभाषा की ममता दे दी। ***"शून्य से शून्य तक"*** कहकर उन्होंने बता दिया कि पूर्णता का आरंभ भी शून्य है और गंतव्य भी शून्य। यह कोई लेखन नहीं, ***उपनिषदों की ऋचा का नव-जन्म*** है।

1100 दिन – 1000 भक्ति कविता। यह आँकड़ा नहीं, ***अनाहत नाद है***। यह कलम की गति नहीं, ***हृदय की धड़कन है*** जो ईश्वर के नाम पर धड़कना सीख गई। इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने संख्या गिनी, पर काल ने साधना को नापा।

2. संस्कृति के सेतु, परंपरा के प्रहरी

आज जब बाजार शब्द को बेच रहा है और साहित्य विमर्श में उलझा है, इन्दु दादा ने ***"रचनाकार मंच"*** बनाकर शब्द को फिर परिवार बना दिया। कोलकाता की भूमि पर उन्होंने केवल मंच नहीं सजाया, ***भारतीयता का मंडप रचा*** – जहाँ गीत भी है, गीता भी है; कविता भी है, कबीर भी है।

उनकी दृष्टि में संस्कृति संग्रहालय की वस्तु नहीं, ***नदी की धारा है***। इसीलिये "मनुस्मृति: परिचय एवं व्याख्या" में वे टीकाकार नहीं, ***समय के संवादकर्ता*** बनकर उतरे। परंपरा और आधुनिकता का द्वंद मिटाकर उन्होंने ***संगम का सूत्र*** दिया।

*3. **युगपुरुष क्यों?***

युगपुरुष वह नहीं जो युग में जन्म ले। युगपुरुष वह है *जिसके कर्म से युग जन्म ले*।

1. ***शब्द को सेतु बनाया:*** दर्शन को लोक-भाषा दी, अध्यात्म को सरलता दी।
2. ***साधना को समाज से जोड़ा:*** "शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन" से कैंसर-पीड़ित की पीर हरी, नवोदित को मंच दिया। ज्ञान और करुणा को एक किया।
3. ***अहं को तिरोहित किया:*** राष्ट्रीय सम्मानों के शिखर पर बैठकर भी *"दादा"* ही बने रहे। विद्या ने विनय दिया, विनय ने पात्रता दी – और पात्रता ने उन्हें ***साहित्य का कुल-पुरोहित*** बना दिया।

*"**न चोरहार्यं न च राजहार्यं..."*** – इस श्लोक को उन्होंने जिया। विद्या बाँटी, पर घटी नहीं; सम्मान मिला, पर रुका नहीं। 75 वर्ष की आयु में भी वे *नित्य नव-सृजन के यौवन* में हैं।

4. अमृत महोत्सव का अर्थ

यह उत्सव इन्दु दादा का नहीं है। यह *उस भारत का उत्सव है जो अभी भी शब्द में ब्रह्म देखता है*। यह उस संस्कृति का जयघोष है जो अभी भी त्याग को भोग से बड़ा मानती है। यह उन सब रचनाकारों का अभिनंदन है जिन्हें दादा ने अँधेरे में दीप दिखाया।

रामधारी सिंह दिनकर कह गये: *"**मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।"***

सुरेश चौधरी "इन्दु" ने जोर लगाया – और ***पत्थर-सा समय, कविता की नदी बन बह निकला*।**

प्रार्थना नहीं, संकल्प

पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतम्– यह वैदिक कामना केवल उनके लिये नहीं है। यह हमारे लिये संकल्प है कि हम सौ वर्ष तक उनके शब्दों को पढ़ें, उनके दिखाये पथ पर चलें, उनकी जलाई ज्योति को बुझने न दें।

इन्दु दादा

आप व्यक्ति नहीं, ***संस्था हैं***।
आप कवि नहीं, ***काव्य-शास्त्र हैं***।
आप 75 के नहीं, ***शाश्वत हैं***।
आपकी लेखनी तब तक चलती रहे जब तक गंगा बहती रहे,
आपका यश तब तक गूँजता रहे जब तक वेद गूँजते रहें।

यह अमृत महोत्सव अंत नहीं, आरंभ है
शब्द के नये युग का, साधना के नये सोपान का, संस्कृति के नये सूर्योदय का।
साहित्य-जगत की ओर से, एक अनुज रचनाकार की ओर से
सादर नमन, सजल वंदन, सस्नेह अभिनंदन।*

डॉ शिवनाथ सिंह "शिव"
रायबरेली
मो: 9260996977
दिनांक: 01 जून 2026

आदरणीय सुरेश चौधरी जी के साथ मैंने रचनाकार परिवार के ```साथ कुछ ही समय बिताया है, क्योंकि मैं संस्था से नई नई जुड़ी हूं। इन थोड़े``` ही दिनों मे संस्था से गहरा अपनापन महसूस होता है। संस्था की सांस्कृतिक गतिविधियों ने हृदय छू लिया है और मन संतृप्त हो गया है। संस्था के सुचारू रूप से संचालन में सुरेश जी के नेतृत्व, अनुभव व मार्गदर्शन का बड़ा ही योगदान है।

जैसे नाविक नाव को बिना किसी बाधा के उस पार ले जाता है,उसी प्रकार सुरेश सर के मधुर व्यवहार तथा कुशल संचालन से हमारी सांस्कृतिक गतिविधियों को मूर्त स्वरूप प्राप्त होता है,और वह भी बिना व्यवधान के, बिना कोलाहल के।

सुरेश सर बड़े ही धैर्य से हमारी छोटी छोटी समस्या को सुनते हैं और समाधान देते हैं, जो उनकी विनम्रता का परिचायक है और उनका व्यवहार अनुकरणीय है। रचनाकार परिवार को वे मुखिया की तरह बाँधते हैं। उन्हें विविध भाषाओं का *ज्ञान* है। उनकी रचनाओं में भाषा शैली और भावों का अतुलनीय समागम है। संस्कृत जैसी कठिन और दैवीय भाषा में भी उनकी रचना का रसपान हमने किया। उम्र होने पर भी वे सक्रिय हैं। हिंदी साहित्य के भण्डार को उन्होंने विभूषित किया है। सुरेश जी हिन्दू संस्कृति की धरोहर के रक्षक हैं और भारत का गौरव हैं।

अंजू मनोत

यू इन्सपाइर अस

एक बहुमूल्य सम्मान
इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अककोउन्टेन्ट ऑफ इंडिया द्वारा

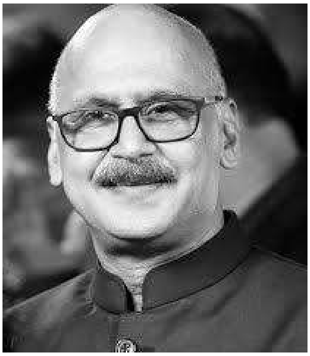

सुरेश कुमार चौधरी 'इंदु' जी से मेरा परिचय ही साहित्य के माध्यम से हुआ। मुझे आज तक नहीं मालूम कि सहित्य से अलग वह अपने लिए और अपने परिवार के लिए क्या करते हैं। उनके सान्निध्य में कभी कोई ऐसा विचार ही नहीं आया जिसका साहित्य से अलग कुछ लेना-देना हो। उनकी 'लघु उपनिषद त्रयी' पढ़ते हुए समझ आया कि इनके अंदर एक ऐसा रचनाकार है जो जितना अपने वर्तमान में रहता है उतनी ही उसकी सोच, उसका चिंतन उन वैचारिक परम्पराओं के प्रति भी सजग है जिन्हें वह वर्तमान के हित में रेखांकित करना चाहता है।

सुरेश कुमार चौधरी ‘इंदु’ हिन्दी साहित्य, भारतीय दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में एक विशिष्ट एवं बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं सफल उद्योगपति के रूप में दीर्घ कार्यकाल के पश्चात उन्होंने स्वयं को पूर्णतः साहित्य-साधना के लिए समर्पित कर दिया। उनकी 43 से अधिक प्रकाशित कृतियाँ वेद, उपनिषद, भागवत, भक्ति-साहित्य, दर्शन और काव्य के विविध आयामों को समेटे हुए हैं। संस्कृत ग्रंथों के मूल छन्दों को सुरक्षित रखते हुए हिन्दी में काव्यानुवाद करना उनकी विशेष पहचान है। भक्ति, ज्ञान और मानवीय संवेदना का संतुलित समन्वय उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। साहित्य, संस्कृति और समाजसेवा में उनका योगदान उन्हें समकालीन हिन्दी जगत के महत्वपूर्ण रचनाकारों में प्रतिष्ठित करता है।
आज के इस विशेष दिवस पर उनको शतकोटि बधाई और शुभकामनाएं।

सादर -
मृत्युंजय कुमार सिंह
पूर्व पुलिस महानिर्देशक पश्चिम बंगाल

लखी दा के संग श्रीमती जी के साथ

हमारे आज के साहित्य नभ में अनेक सितारे अपनी लेखनी का प्रकाश बिखेरकर दीप्तिमान हो रहे हैं और धरती को रोशन कर रहे हैं। इन सितारों में एक इंदु “सुरेश चौधरी जी” हैं। जो गध और पध की हर

विधा में अपनी चमकदार, धारदार लेखनी से 35 से अधिक पुस्तक लिख चुके हैं। पेशे से कभी चार्टड एकाउंटेंट रहे और पीएचडी से भी सुशोभित रहे और फिर निजी इस्पात के 18 कारखाने लगाये और इस क्षेत्र में सरकार से सम्मान भी प्राप्त किया। परंतु सुरेश जी को तो कहीं और ही नाम कमाना था। माँ सरस्वती पुकार रहीं थी और माँ शारदे की पुकार पर लेखनी उठाई और बन गये कलम के सिपाही, धारदार,चमकदार लेखनी की कलम की तलवार लेकर। सुरेश जी की अद्भुत कलम कभी तीखी होकर सत्य उजागर करती तो कभी भक्ति में डूबी वेद उपनिषद पुराणों का ज्ञान देती कलम , कभी इतिहास के घोडो पर सवार हमारे देश के वीरों की गाथा याद कराती कलम, कभी जो गलतियाँ पूर्वजों से हुई थी उनको न दोहराने की कसम खिलाती कलम । कभी पर्यटन कराती कभी हृदय में प्रेम के कमल खिलाती कलम।

सुरेश जी हिंदी के शब्द जो अभी लुप्त होते जा रहे है उनका बहुत ही लुंदर तरीके से प्रयोग करके वापस उनकी खूबसूरती समझाते है। अलंकारो का अद्भुत प्रयोग करना सुरेश जी का विशेष गुण है।

सुरेश जी साहित्य जगत के इंदु, जो चंद्रमा की तरह रातो में जगते है हर प्रात: प्रभु को एक स्वरचित भजन अर्पित करते हैं।

स्वस्थ रहे या अस्वस्थ रहें चिंतन के सागर में डूब कर साहित्य को अमूल्य मोती प्रदान कर रहे हैं ।

सुरेश सर की प्रकाशिक कुछ पुस्तकों के नाम पर मेरी कविता

कुछ माणिक कुछ मोती लाये, प्रांजली और स्वरांजली देकर,
वैदिक सनातन धर्म समझाये। वेद सूक्तों के काव्य बनाकर,
वेद वेदांत उपनिषद पढाये। ऋचाओं से पावन माँ बतलाकर,
दुर्गाविनाशिनी को प्रसन्न कराये। आदिशंकर रस माधुरी,
हरहर महादेव को दी भावांजली। चमत्कृत भाषा है संस्कृत,
सबको सुभाषितम सिखलाये । भारतीय दर्शन सबको दिखाया,
अन्य दर्शन भी समझाये। मनुस्मृति की कर समीक्षा,
सुर तरंगिनी के सुर गाये। बुलबुले सी है ये जिंदगी,
क्यु तो इसमें मोह लगाये। तिमिर ढलेगा भ्रम भ्रांति घटेगी,
मूल्यांकन जब स्वयं का पाये।हे गोविंद हे गोपाल पुकारा,
श्रीमद भागवत महापुराण समझाये।सुरेश सर की अनुपम पुस्तके, जो पढे ज्ञानवृद्धि वो पाये।

शालिनी गर्ग, क़तर , दोहा

सुरेश चौधरी 'इन्दु' : साहित्य, साधना और समाज का प्रेरक व्यक्तित्व

आदरणीय सुरेश चौधरी 'इन्दु' जी के 75वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ एवं सादर प्रणाम।

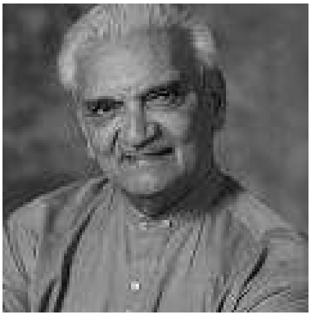

इन्दु जी का व्यक्तित्व बहुआयामी प्रतिभा का अद्भुत उदाहरण है। एक सफल चार्टर्ड अकाउंटेंट, उद्योगपति, दार्शनिक, कवि और साहित्य-साधक के रूप में उन्होंने जीवन के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। विशेष रूप से यह प्रेरणादायी है कि व्यावसायिक जीवन की ऊँचाइयों को प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने स्वयं को पूर्णतः साहित्य, अध्यात्म और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया।

उनकी रचनाओं में भारतीय दर्शन, वेदान्त, भक्ति, मानवीय संवेदनाएँ तथा सांस्कृतिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। चार दशकों से अधिक समय तक उद्योग जगत में सक्रिय रहने के बावजूद साहित्य के प्रति उनका समर्पण कभी कम नहीं हुआ। आज उनकी अनेक प्रकाशित कृतियाँ हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रही हैं और नई पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने का कार्य कर रही हैं।

इन्दु जी केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन के प्रेरक भी हैं। "रचनाकार इंटरनेशनल" जैसे मंचों के माध्यम से उन्होंने विश्वभर के हिन्दी प्रेमियों और साहित्यकारों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी विनम्रता, सादगी, अनुशासन और निरंतर सृजनशीलता हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

अमृत महोत्सव के इस शुभ अवसर पर हम उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं निरंतर साहित्य-साधना की कामना करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी लेखनी इसी प्रकार समाज को दिशा देती रहे और आने वाली पीढ़ियाँ उनके ज्ञान, अनुभव एवं साहित्यिक योगदान से लाभान्वित होती रहें।

शुभकामनाओं सहित।

डा. अनिल रस्तोगी , पद्मश्री
वरिष्ट नाटक कार, अभिनेता एवं वैज्ञानिक

बैलेंस शीट से वेदांत तक:
साहित्य के साधक सुरेश चौधरी 'इन्दु' के गौरवमयी 75 वर्ष

जीवन के ७५वें वर्ष में प्रवेश करना कोई साधारण बात नहीं है, और जब जीवन यात्रा जमशेदपुर की कोयला-इस्पात की धरती से शुरू होकर, कॉर्पोरेट जगत के शिखर को छूते हुए, सीधे उपनिषदों के काव्यानुवाद और अध्यात्म के सागर में गोता लगा जाए, तो यह यात्रा चमत्कारी बन जाती है। प्रख्यात चार्टर्ड अकाउंटेंट, दार्शनिक और अद्वितीय कवि सुरेश कुमार चौधरी 'इन्दु' जी आज जीवन के उस पड़ाव पर हैं जहाँ अनुभव की प्रतिष्ठा भी है और साहित्य का असीम आनंद भी।

इन्दु जी के जीवन की शुरुआत ही एक बेहद दिलचस्प साहित्यिक मोड़ से होती है, जहाँ उनकी दो-दो जन्मतिथियाँ देखने को मिलती हैं—वास्तविक जन्मतिथि १४ जुलाई १९५२ और सरकारी कागजों वाली ४ अगस्त १९५२। अब एक सीए (CA) का जन्म हो और उसमें 'तारीखों का हेरफेर' न हो, ऐसा कैसे हो सकता है? खैर, इस बहाने उनके प्रशंसकों को साल में दो बार बधाई देने का वैध बहाना मिल जाता है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा भारतीय मॉडल स्कूल (आर्य समाज) से हुई और आगे चलकर जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज से उन्होंने भौतिकी, रसायन और गणित में स्नातक किया। इसके बाद उन्होंने संख्याओं के सबसे बड़े खेल यानी आईसीएआई (ICAI) से चार्टर्ड अकाउंटेंसी (FCA) की प्रतिष्ठित डिग्री हासिल की।

एक समय था जब इन्दु जी उषा एलॉयज और बिहार एलॉय स्टील्स जैसी बड़ी कंपनियों में वित्त और वाणिज्य के शीर्ष पदों पर आसीन थे। वे बड़ौदा, गोधरा, जमशेदपुर से लेकर कोलकाता तक इस्पात से जुड़ी १८ औद्योगिक इकाइयों के संस्थापक और प्रवर्तक रहे। जरा सोचिए, जो व्यक्ति दिन-रात डेबिट-क्रेडिट, नफा-नुकसान और लोहे के कड़े व्यापार में व्यस्त रहा हो, उसके भीतर माँ सरस्वती की एक ऐसी धारा बह रही थी जो बस फूटने का इंतजार कर रही थी। व्यापार में उन्होंने खूब नाम कमाया, प्रधानमंत्री कार्यालय तक को अपनी आर्थिक नीतियों से प्रभावित किया, लेकिन नियति को उनके हाथों कुछ और ही लिखवाना मंजूर था।

हँसी-मज़ाक और व्यावसायिक सफलताओं के बीच वर्ष २००६ में एक ऐसा मोड़ आया जिसने हर किसी को स्तब्ध कर दिया, जब एक गंभीर बीमारी ने उनके जीवन के द्वार पर दस्तक दी। यह वह मार्मिक क्षण था जहाँ से उन्होंने बाहरी दुनिया के शोर को पीछे छोड़ दिया और अपने भीतर की यात्रा शुरू की। कहा जाता है कि लोहा आग में तपकर ही कुंदन बनता है; बीमारी की उस तपन ने इन्दु जी

को व्यावसायिक चिंताओं से मुक्त कर एक पूर्णकालिक लेखक, दार्शनिक और कवि के रूप में पुनर्जन्म दिया। वर्ष २०११ से वे पूरी तरह से माँ भारती की सेवा में समर्पित हो गए।

जब इन्दु जी ने लिखना शुरू किया, तो मानो शब्दों का सैलाब आ गया और अब तक उनकी ४३ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी लेखनी की रफ्तार का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जहां लोग कोविड-19 के दौर में अवसाद से घिरे थे, वहीं इन्दु जी ने आपदा को अवसर में बदलते हुए ३ वर्षों में १००० भक्ति-कविताओं की रचना कर डाली, जिसके लिए उनका नाम इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (२०२३) में दर्ज हुआ। उनकी लेखनी में 'वेद से वेदान्त तक' के माध्यम से नौ उपनिषदों का सुरीला काव्यानुवाद है, तो 'श्री दुर्गतिविनाशिनी' और 'गोपी गीत' जैसी रचनाओं में संस्कृत के कठिन स्तोत्रों को उनके मूल छन्द और लय में ढालने की अद्भुत कला है। उन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ६८ बांग्ला गीतों का हिन्दी में प्रथम छन्दबद्ध अनुवाद करके दो समृद्ध संस्कृतियों को जोड़ने का काम भी किया, जबकि ‘शून्य से शून्य तक’ और ‘मैं जीवन दण्ड विधान हूँ’ जैसी कृतियाँ उनके भीतर के गहरे दार्शनिक स्वरूप को दर्शाती हैं।

इन्दु जी की इस अनवरत साधना को देश-विदेश में भरपूर सम्मान मिला है। उन्हें पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा राजभाषा गौरव सम्मान, भारत गौरव सम्मान, विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि और 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड रिसर्च टेक्नोलॉजी' से मानद डॉक्टरेट जैसी अनगिनत उपाधियाँ मिली हैं। मजे की बात देखिए, साल २०२५ में खुद आईसीएआई (ICAI) ने भी उन्हें "You Inspire" सम्मान से नवाजा—मानो संस्था कह रही हो कि हमें गर्व है कि हमारे एक सीए ने बैलेंस शीट से आगे बढ़कर देश की सांस्कृतिक चेतना का ऑडिट किया है! लेकिन इन्दु जी सिर्फ शब्दों के जादूगर नहीं हैं, वे 'शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन' के माध्यम से कैंसर रोगियों और जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, जिसके जरिए लाखों रुपये की सहायता उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा 'रचनाकार इंटरनेशनल' के माध्यम से वे २१ देशों के साहित्यकारों को एक मंच पर जोड़ रहे हैं।

७५ वर्ष की इस गौरवशाली आयु में भी इन्दु जी की ऊर्जा किसी युवा जैसी है। वर्तमान में वे ७वीं शताब्दी से आधुनिक काल तक के चित्तौड़ के गौरवशाली इतिहास पर आधारित एक विशाल महाकाव्य की रचना कर रहे हैं और साथ ही "रामकथा : १०८ मणकों में" पर काम कर रहे हैं। सुरेश कुमार चौधरी ‘इन्दु’ जी का जीवन हमें सिखाता है कि उम्र महज एक संख्या है और अगर आपके भीतर कला, अध्यात्म और मानवता के प्रति प्रेम हो, तो जीवन की ढलती सांझ भी बेहद खूबसूरत और प्रकाशमान हो सकती है। इन्दु जी को जीवन के इस पावन अमृत काल पर कोटि-कोटि बधाई, आपकी कलम यूं ही चलती रहे!

(पंकज प्रसून)

वरिष्ट व्यंग्यकार , वैज्ञानिक

एक व्यक्ति नहीं, वरन् एक संस्था

अग्रज बन्धु माननीय श्री सुरेश चौधरी जी एक व्यक्ति नहीं, वरन् एक संस्था हैं। उनके व्यक्तित्व को शब्दों में पिरोना असम्भव है। वे एक ऐसे यशस्वी व्यक्तित्व हैं जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता। श्री चौधरी जी बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने अपने जीवन को समाज के लिये एक प्रेरक जीवन के रूप में स्थापित किया है।

श्री चौधरी जी का जीवन एवं कृतियाँ जहां एक ओर श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रतिपादित ज्ञान, कर्म एवं भक्ति मार्ग के समन्वय का प्रत्यक्ष उदाहरण है। उनकी शिक्षा, व्यवसाय व लेखन की त्रिवेणी अचंभित करती है। वे कवि, विश्लेषक, लेखक, चिन्तक, भारतीय शास्त्रों के ज्ञाता तथा दर्शन के अद्भुत संगम हैं।

उनके लेखन में निरन्तर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित मूलमंत्र—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥"

—के अनुसरण कर्ता के रूप में श्रेष्ठ आचरण कर्ता एवं समाज के लिये मार्गदर्शक के रूप में स्थापित करता है।

मेरा श्री चौधरी जी से सम्पर्क अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर साप्ताहिक स्तर पर आयोजित श्रीमद्भगवद्गीता वेबिनार के माध्यम से हुआ। इस वेबिनार में उनके भारतीय वेद, पुराण, उपनिषद, दर्शन, रामायण संबंधी ज्ञान के साथ साथ श्रीमद्भगवद्गीता के सूक्ष्म बिन्दुओं पर सरल एवं सारगर्भित व्याख्यान से मुझे अत्यधिक लाभ मिला, जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

मेरा अपने जीवन-संध्या काल में उनसे परिचित होना जहाँ एक ओर प्रेरणास्पद रहा, वहीं प्रसिद्ध शायर अहमद फराहज के शेर " जिंदगी से यही मिला है मुझे- तू बहुत देर से मिला है मुझे" बरबस याद आता रहता है क्योंकि उनके ज्ञान के साथ साथ उनका सौम्य स्वभाव 'सोने पर सुहागा' समान है। वे निश्चित रूप से वाणी तप के तपस्वी हैं।

"अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥"

मुझे अपने मित्र गणेश दत्त बजाज जी के साथ उनकी पस्टाक प्रांजलि का अंग्रेज़ी अनुवाद करने का सुखद अवसर मिला जिसके द्वारा उनकी भाषा न भाव दोनो पर कुशलता का अनुभव हुआ।

वे यथार्थ में 'योग: कर्मसु कौशलम" के श्रेष्ठ जीवंत उदाहरण हैं उनके जीवन की व्यापकता 'आसमां के नीचे हम आज अपने पीछे कदम के निशां बनाते चले' गीत को चरितार्थ करती है। मैं उनके सानिध्य के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ स्नेहमयी दीर्घायु की कामना करता हुआ उनको शत शत नमन करता हूँ।

डॉ. रविन्द्र कुमार गुप्ता
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
आर के एस डी कॉलेज
कैथल
हरियाणा

बड़ौदा ऑफिस मे आशीष के साथ

आदरणीय सुरेश चौधरी जी : साहित्य, संस्कृति और मानवता के समर्पित साधक
-आशुतोष कुमार, शायर, लंदन (यू.के.)

जीवन में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनसे परिचय केवल औपचारिक नहीं रहता, बल्कि समय के साथ वह आत्मीय संबंध में परिवर्तित हो जाता है। *आदरणीय सुरेश चौधरी जी* मेरे लिए ऐसे ही व्यक्तित्व हैं। वे एक प्रतिष्ठित कवि, चिंतक, साहित्य-संयोजक, समाजसेवी और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के सजग संवाहक हैं। उनसे जुड़ना मेरे साहित्यिक जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि और सौभाग्य है।

कोलकाता की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक भूमि से जुड़े सुरेश जी ने अपने व्यावसायिक जीवन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ साहित्य और समाज के प्रति अपने दायित्वों का भी पूरी निष्ठा से निर्वहन किया है। चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में सफल जीवन के उपरान्त उन्होंने स्वयं को साहित्य, भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक चेतना के प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। उनकी रचनाओं में वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता तथा भारतीय चिंतन की गहरी छाप दिखाई देती है। वे साहित्य को केवल भावाभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाली शक्ति मानते हैं।

सुरेश जी की लेखनी अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। कविता, दर्शन, अध्यात्म, साहित्यिक समीक्षा, अनुवाद तथा सामाजिक विषयों पर उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके लेखन में भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ाव, मानवीय संवेदनाओं की ऊष्मा और समकालीन समाज के प्रति गहरी प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार तथा नवोदित रचनाकारों को सशक्त मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उन्होंने 'रचनाकार' की स्थापना की। आज यह संस्था विश्वभर के हिन्दी साहित्यकारों, कवियों और साहित्य-प्रेमियों को जोड़ने वाला एक प्रतिष्ठित साहित्यिक मंच बन चुकी है। देश-विदेश के असंख्य रचनाकारों को उन्होंने अभिव्यक्ति का अवसर, सम्मान और आत्मीयता प्रदान की है। विशेषकर प्रवासी हिन्दी साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाने में उनकी भूमिका अत्यंत प्रेरणादायी रही है।

साहित्य के साथ-साथ समाजसेवा के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। 'शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन' के माध्यम से वे शिक्षा, संस्कृति, साहित्य और मानवीय सेवा के विविध कार्यों से जुड़े हुए हैं। उनका विश्वास है कि साहित्य तभी सार्थक है, जब वह समाज में करुणा, संवेदना और सेवा की भावना को सशक्त बनाए। यही कारण है कि उनकी साहित्य-साधना केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि जनसेवा से भी अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है।

व्यक्तिगत रूप से मैंने सुरेश जी में एक अत्यंत सरल, विनम्र और स्नेहिल व्यक्तित्व देखा है। वे नए रचनाकारों का उत्साहवर्धन करने में सदैव अग्रणी रहते हैं। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन अनेक साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे जितने बड़े साहित्यकार हैं, उससे कहीं अधिक बड़े हृदय के धनी हैं। उनकी सहजता, कार्यनिष्ठा और सकारात्मक दृष्टिकोण हर मिलने वाले के मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं।

उनके ७५ वें जन्मदिवस के इस शुभ अवसर पर मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन्हें उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, सतत सृजनशीलता और समाज-सेवा की निरंतर ऊर्जा प्रदान करें। उनकी लेखनी आने वाली पीढ़ियों को इसी प्रकार आलोकित करती रहे तथा 'रचनाकार' और 'शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन' साहित्य, संस्कृति और मानवता की सेवा में नए-नए आयाम स्थापित करते रहें।

आदरणीय सुरेश चौधरी जी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं उनके उज्ज्वल, स्वस्थ और दीर्घ जीवन की मंगलकामनाएँ।

सादर प्रणाम!

आशुतोष कुमार
लंदन, यूनाइटेड किंगडम

जिनके सामने स्वयं विस्मय भी अवाक रह जाता है

—सरोज कौशिक, प्रख्यात उपन्यासकार

श्री सुरेशजी चौधरी जी को जब भी देखती हूं तो विस्मय से भर उठती हूं। शायद विस्मय भी अवाक रह जाता होगा जब इनके व्यक्तित्व की ओर देखती हूं। हर साथ चलने वाले साथी के जीवन की उष्मा को बदल देना, सहज, सरल सा ,फूलों सा कोमल,लेकिन अपने विचारों में दृढ़ता,साथ में शामिल मिलता है फूलों का सौरभ।प्रभु का सहारा लेकर अनेकानेक दोहों के कमल खिलाए, जीवन की सांसों मे कृष्ण के दर्शन के दीप जलाए, मां शक्ति की माला में शब्द-दर-शब्द गूंथते गए, अनुराग का रस बिखेरते हुए, हर समय,हर हाल में औरों के लिए हाज़िर रहते हैं।इनके साथ कुछ भी नहीं है अन्तिम विकल्प। इनकी महानता गीतों के स्वर में आबद्ध रहती है।तभी इनका मन हमेशा शांत रहता है।सृजन करने वाला कलाकार में हमेशा एक विशिष्ठ अलगाव रहता है और जितना बड़ा कलाकार उतना बड़ा अलगाव होता है।इनकी विशिष्टता का कोई नाप-तोल नहीं।सचेतनता,जागरूकता इनकी अन्य विशिष्टता में शामिल हैं।बहुत कुछ अनकहा रह गया,क़ाश इनकी ज़िन्दगी किताब होती तो शब्द-दर-शब्द बयां कर देती तभी तो कहा कि इनके लिए पूर्णता से कुछ कहने में स्वयं विस्मय भी अवाक रह जाता है।इनको मेरा नमन।

अद्भुत लेखक
शिखर चंद जैन
प्रख्यात मोटीवेशनल लेखक एवं कालम्निस्ट

तीस से ज्यादा पुस्तकों के लेखक सुरेश चौधरी 'इंदु' जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इन्होंने ग्रेजुएशन साइंस स्ट्रीम से किया और फिर चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गए। कॉमर्स और साइंस अध्ययन की दो अलग धाराएं हैं। अगर बोलचाल की आम भाषा में कहें तो उत्तर और दक्षिण. इसलिए बहुत कम लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो ऐसा कर पाते हैं. बिल्कुल ऐसी ही विविधता इनके लेखन में है अब तक ये मूल रूप से अध्यात्म, धर्म और दर्शन पर लिखते रहे हैं, देशाटन पर भी लिखा है, छंदबद्ध कविताएं लिखीं हैं और अब कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर की बांग्ला कविताओं का हिंदी में अनुदित छंद संग्रह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया।

आदरणीय सुरेश जी को पढ़ने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि अगर आप इन्हें खालिस मनोरंजन या टाइमपास के लिए पढ़ रहे हैं, तो फिर इनका लेखन आपके लिए नहीं है। इनका लेखन उन पाठकों के लिए है जो एकरसता से ऊब चुके हैं। साहित्यजगत में कविता के नाम पर जो कुछ उबड़खाबड़ परोसा जा रहा है, उससे अलग कुछ चाहते हैं। जो लोग अपने विचारों में नयापन लाना चाहते हैं, विचारों को मंथन के लिए उकसाना चाहते हैं,अपने शब्द भंडार को समृद्ध करना चाहते हैं और हमारी समृद्ध संस्कृति व भाषा परंपरा से रूबरू होना चाहते हैं।

सातों भाई बहन माँ के साथ

सामान्य व्यक्ति का असामान्य व्यक्तित्व

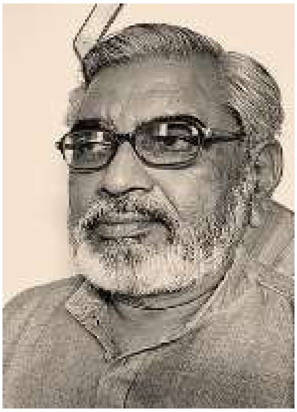

विज्ञान के छात्र का वित्तीय क्षेत्र में प्रवेश कर सफलता अर्जित करना, मध्य वित्तीय परिवार के किसी युवक का युवावस्था में ही उद्योगपति हो जाना, आर्थिक लेखा-जोखा में पारंगत व्यक्ति का काव्य-लेखन तथा भाषाई भावानुवादक बन कर साहित्यकार बन जाना और किसी रोगग्रस्त व्यक्ति का घर की चार दीवारी में सिमटने की बजाय सामाजिक सरोकार से जुड़े रहना, ऐसे विरोधाभासी व्यक्तित्व के धनी होने वाले मेरे परिचितों में पहला नाम है श्रीमान सुरेश चौधरी "इन्दु"।

सुरेश जी से मेरा परिचय लगभग ६-७ वर्ष पूर्व कोलकाता निवासी उम्मेदसिंह तथा स्नेहलता बैद दम्पति के माध्यम से हुआ था। वर्ष में २-३ बार कोलकाता आवागमन के क्रम में सुरेश जी से भी मिलना होता रहा परंतु इसी बीच कोरोना से बचाव की बाध्यता ने इसे भी बाधित किया। सहज और अनौपचारिक रूप से मिलने और वार्तालाप करने का जो भी अवसर मिला उससे प्राप्त इनके परिचय का एक वाक्यीय निचोड़ यही है कि असामान्य व्यक्तित्व के सामान्य व्यक्ति से मिलना हो तो चलें सुरेश जी से मिल आते है।

एक कवि के नाते ११४५ दिनों में १००० भजनों की रचना करने का वैश्विक कीर्तिमान सुरेश जी ने स्थापित किया है। सन २०११ से पूर्व तक लक्ष्मी की साधना में लगे रहने वाले ने केवल १२-१३ वर्षों की सरस्वती-साधना के परिणामस्वरूप १२-१३ प्रकार के सम्मान अर्जित कर लिये है। आरती, भजन आदि भक्ति भावी रचनाओं के साथ ही सामाजिक सरोकार से जुड़े हुए लेखों के संकलन के रूप में "भ्रम, भ्रमित एवं भ्रांतियां" इस पुस्तक का प्रकाशन इनके बहु आयामी चिंतन का उदाहरण बन गया है। भजन, आरती आदि भक्ति भावी रचनाओं के साथ ही युवा तथा शिशु मन को लुभाने वाले विविध विषयों पर कविता, लेख आदि की रचनाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि सुरेश जी का साहित्य बहुआयामी है। हिन्दी के साथ ही संस्कृत भाषा में भी श्लोकों की रचनाओं में अर्जित दक्षता के कारण उनको सामान्य व्यक्ति के असामान्य व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रमाण पत्र दिया जाना स्वाभाविक है।

अपनी जीवन यात्रा के अडसठ वें पडाव के अवसर पर अर्थात सरस्वती-साधना के मात्र १० वर्ष की अवस्था में कवीन्द्र रवींद्रनाथ ठाकुर के चुनिंदा अडसठ गीतों का बांग्ला से हिन्दी में भाषान्तर कर केवल भावानुवाद ही नहीं छन्दानुवाद करने का साहस जुटाना सामान्य बात नहीं है। यह चुनौती भरा काम साहित्य जगत का सराहनीय तथा प्रेरणादायी काम सिद्ध होगा।

संगीत की एक विशेष विधा स्वयं रवींद्र नाथ ने प्रचलित की थी, जो रवींद्र संगीत के नाम से जानी जाती है। अलग-अलग घरानों के शास्त्रीय संगीत के समान ही रवींद्र-संगीत भी एक घराना ही है। संगीत की परिपूर्णता जिन तीन विधाओं के मिलन से होती है उन तीनों विधाओं का अर्थात गायन, वादन और नृत्य का स्वयं रवींद्रनाथ ने भरपूर उपयोग किया है। रवींद्रनाथ इन तीनों विधाओं के जानकर थे, उनमें पारंगत थे और नव-सृजनकर्ता भी थे। ऐसे व्यक्ति के साहित्य-सृजन का छन्दबद्ध अनुवाद हर किसी के बस का नहीं है। श्रीमान सुरेश चौधरी "इंदु" जी के अनुवाद में भी कुछ स्थानों पर ऐसा प्रतीत होता है कि छन्द मिलाने की प्रधानता के कारण कुछ शब्दों का भाव अनुवादक को बदलना पड़ा है परन्तु इस साहस के सामने इसे अपराध नहीं अपवाद के रूप में क्षम्य मानकर स्वीकार किया जाना चाहिए।

शब्दों के खिलाडियों के द्वारा भावों के साथ होने वाली खिलवाड़ भी पाठकों के लिये अर्थो की बहुलता दे जाती है। "इंदु" जी के साहित्य की बहुलता में अर्थों की बहुलता को खोजने का आनंद भी पाठकों को प्राप्त होता है। यह आनन्द भविष्य में भी प्राप्त होता रहे, इसी कामना के साथ अपनी कलम को विराम देता हूँ। धन्यवाद।

--लक्ष्मीनारायण भाला "लक्खीदा"

रचनाकार द्वितीय अधिवेशन

बेतुके समय में छंद लिखते सुरेश चौधरी...
—---तेजेन्द्र शर्मा एम.बी.ई. ,लंदन

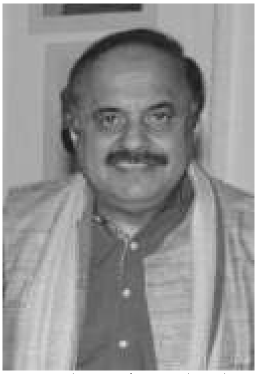

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिन्हें आप कभी आमने-सामने नहीं मिले होते मगर उनके लिये आपके दिल में अपार आदर एवं सम्मान होता है। भाई सुरेश चौधरी एक ऐसा ही व्यक्तित्व हैं। मेरी उनसे पहचान केवल उनके लेखन के ज़रिये है और संपर्क सोशल मीडिया के माध्यम से।
सुरेश भाई रहते तो कोलकाता में हैं मगर उनकी शख़्सियत की ख़ुशबू भारत की सीमाओं के पार विदेश तक फैली हुई है। इक बेतुक समय में जब कविता और गद्य में कोई अंतर दिखाई नहीं देता, भाई सुरेश चौधरी लगातार छंद में न केवल लिख रहे हैं बल्कि अपने समूह रचनाकार के साथियों को भी छंद लिखने के लिये प्रेरित करते रहते हैं।
भाई सुरेश चौधरी के लेखन की निरंतरता एवं प्रचुरता उन्हें अन्य साहित्यकारों से अलग रेखांकित करती है। उनकी एक विशेष उपलब्धि इंटरनेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में दर्ज है। दरअसल उन्होंने 1160 दिनों में एक हज़ार भजन लिखे। ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी सुरेश चौधरी में घमण्ड नाम मात्र का भी नहीं है। वे ज़मीन से जुड़े इन्सान हैं जो सबको केवल स्नेह और प्यार ही बांटते हैं।
हैरानी होती है कि जो इन्सान चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत करता है, वह अपने बाद के दिनों में केवल साहित्य को समर्पित हो कर रह जाता है। 14 जुलाई 1952 को जमशेदपुर में जन्मे सुरेश चौधरी 2011 में अपने कैरियर के शिखर पर पहुंच कर सेवा निवृत्त हो जाते हैं और अपना बाकी जीवन साहित्य सृजन के नाम कर देते हैं। ज़ाहिर है कि साहित्य के बीच उनके व्यक्तित्व में बचपन से रहे होंगे जिनको उनकी कैरियर ने कहीं दबा कर रखा होगा।
सुरेश चौधरी ने अपने आपको कविता की किसी एक विधा तक सीमित नहीं रखा। दोहे और गीत के अलावा वे हाईकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, बाल कविता के साथ-साथ आध्यात्मिक आलेख आदि लिखने में भी सक्रिय रहे। उनमें विशेषता यह है कि वे साहित्यिक सृजन के अलावा अपने सोशल मीडिया समूह को भी सुचारू ढंग से चलाने में निपुण हैं।
वे अपने से वरिष्ठ एवं कनिष्ठ सभी के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं। उनका छंदों का ज्ञान अद्भुत है। जितने छंदों के नाम आम हिन्दी साहित्यकार को मालूम भी नहीं होंगे उससे अधिक छंदों में वे रचनाएं लिख चुके हैं। उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर के 68 गीतों को देवनागरी में छंदबद्ध रूप में अनुवाद किया है। उनकी क़लम आर्थिक मुद्दों पर भी उसी शिद्दत से चलती है जिस प्रकार साहित्यिक सृजन में। सुरेश चौधरी अपनी राजनीतिक सोच के बारे में भी खुल कर बोलते हैं। आज के हालात पर वे भगवान शिव का आह्वान करते हैः

हे चंद्रशेखर अब तो बाहर आओ कैलाश से,
कालकूट निकल रहा अब भारत प्रभास से,
हलाहल उष्मा को तजने शीतलता पाने को
फिर से शशि धारण करना होगा ललाट पे

सुरेश जी की कविताओं मे विषय वैविध्य साफ़ दिखाई देता है। वे किसी विचारधारा के दबाव में सृजन नहीं करते।

थोडा सा ग्रहण क्या लगा, तिमिर के प्रहरी ने सूरज को दीपक दिखाया है
सांझ होते ही जुगनुओं ने शहर में अपनी रौशनी का शोर मचाया है |

सुरेश चौधरी जी को लगभग दर्जन भर सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। इनमें भारत सरकार के अलंकरण भी शामिल हैं और निजी संस्थाओं के भी। हम उन्हें यही कहना चाहेंगे – मंज़िलें और भी हैं, अभी उन्हें बहुत कुछ और लिखना है प्रकाशित करवाना है और सम्मानित होना है। शुभकामनाएं!

सुरेश चौधरी को मानद पीएचडी

■ छपते छपते समाचार सेवा

कोलकाता, 1 नवंबर। लागोस विश्वविद्यालय से अनुबन्धित इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिज़नेस मैनेजमेंट एंड रिसर्च टेक्नोलॉजी ने इस वर्ष की मानद पीएचडी प्रख्यात साहित्यकार, चिंतक, विचारक एवं अर्थशास्त्री श्री सुरेश चौधरी को प्रदान की है। यह उपाधि स्प्रिच्युअल वैदिक हिंदी लिटरेचर विषय पर उनके वैदिक सनातन दर्शन के आध्यात्मिक साहित्य पर किये गए कार्य के लिए दी गई है। श्री सुरेश चौधरी ने वैदिक साहित्य को आधुनिक परिवेश में परिभाषित कर कई पुस्तकों को लिखा है। सनातन धर्म में व्याप्त अनेक भ्रमों का निवारण करती उनकी पुस्तक भ्रम और भ्रांति बहुत चर्चित रही है। श्री सुरेश चौधरी

वेदों की व्याख्या और पुराणों की विवेचना पर आधारित साप्ताहिक कार्यक्रम प्रत्येक रविवार दिन साढ़े ग्यारह बजे अपने फेसबुक व यू ट्यूब चैनल के द्वारा प्रसारित करते हैं।

ज्ञात रहे कि दो माह पूर्व ही उन्होंने 1116 दिनों में 1000 भजन लिख कर विश्व कीर्तिमान बनाया है जिसे इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में संग्रहित किया गया है।

सद्गुणों के समुच्चय: सुरेश चौधरी

जीवन में कुछ व्यक्तित्व ऐसे मिलते हैं, जिनका परिचय उनके पद, प्रतिष्ठा या उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उनकी सहजता, आत्मीयता और मानवीय संवेदनाओं से होता है। आदरणीय सुरेश जी चौधरी ऐसे ही विरल व्यक्तित्व हैं। उनके पचहत्तरवें जन्मवर्ष-अमृत महोत्सव-के पावन अवसर पर मन श्रद्धा, स्नेह और कृतज्ञता से भर उठा है।
सुरेश जी के साहित्यिक अवदान पर लिखने वाले अनेक विद्वान होंगे। उनके द्वारा रचित ४३ से अधिक कृतियाँ, वेद, उपनिषद और वेदांत का गहन अध्ययन, गीतांजलि सहित अनेक उपनिषदों का उत्कृष्ट अनुवाद, 'रचनाकार' जैसी साहित्यिक संस्था की स्थापना, साहित्यिक गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, वार्षिकोत्सव तथा देश-विदेश के साहित्यकारों से उनका आत्मीय जुड़ाव—इन सबका सम्यक् मूल्यांकन विद्वद जन करेंगे। इसलिए मैं उनके साहित्यकार रूप की नहीं, बल्कि उस मनुष्य की चर्चा करना चाहती हूँ, जिसे हमने निकट से जिया और अनुभव किया है।

हमारे आवासीय परिसर में सात-आठ परिवारों का एक आत्मीय समूह है। प्रति माह हमारा मिलना-जुलना होता है। सुरेश जी और शारदा भाभी प्रत्येक आयोजन की आत्मा होते हैं। अपनी वैष्णव जीवन-पद्धति और सादगीपूर्ण दिनचर्या के बावजूद वे हर मिलन में पूरे उत्साह से सम्मिलित होते हैं। उनकी उपस्थिति से वातावरण में सहज अपनापन और उल्लास घुल जाता है।
उनके व्यक्तित्व का जो पक्ष मुझे सबसे अधिक आकर्षित करता है, वह है—उनकी विलक्षण विनम्रता। इतनी असाधारण प्रतिभा, इतना व्यापक अध्ययन, इतनी साहित्यिक उपलब्धियाँ—किन्तु अहंकार का नामोनिशान नहीं। वे कभी अपनी विद्वता का प्रदर्शन नहीं करते। जितने बड़े साहित्यकार हैं, उससे कहीं बड़े इंसान हैं। उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करती
डॉ. शिव ओम अंबर की पंक्तियाँ मुझे अनायास स्मरण हो आती हैं

हर उड़ान आकाश नापने की असफल गाथा है,
मंदिर में प्रवेश की पहली शर्त झुका माथा है।

सचमुच, सुरेश जी का झुका हुआ माथा ही उनकी सबसे बड़ी ऊँचाई है।

उनकी सदाशयता, करुणा, वात्सल्य और आत्मीयता का अनुभव हमारे पूरे समूह ने अनेक अवसरों पर किया है। किसी के सुख में सच्चे मन से प्रसन्न होना और किसी के दुःख में बिना कहे साथ खड़े हो जाना उनके स्वभाव का सहज हिस्सा है। ऐसे लोग केवल संबंध नहीं निभाते, वे संबंधों को सींचते हैं।
उनके व्यक्तित्व का एक और अत्यंत प्रेरक पक्ष है—उनका परिवार-भाव। आदरणीया शारदा भाभी सदैव उनकी छाया की तरह साथ रहती हैं और सुरेश जी जिस सम्मान, प्रेम और आदर से उनका उल्लेख करते हैं, वह आज के समय में सचमुच अनुकरणीय है। अपनी काव्य-कृति "कुछ माणिक, कुछ मोती" को उन्होंने शारदा जी को समर्पित किया है। प्रत्येक वैवाहिक वर्षगाँठ पर उन्हें प्रेम और कृतज्ञता से ओतप्रोत कविता समर्पित करना उनके दांपत्य की मधुरता और संवेदनशीलता का सुंदर प्रमाण है।

केवल परिवार ही नहीं, अपने मित्रों और आत्मीयजनों के जन्मदिन तथा वर्षगाँठ पर भी वे स्नेहभरी कविताएँ लिखकर उन्हें अमूल्य उपहार देते हैं। हमारी पचासवीं वैवाहिक वर्षगाँठ पर भी उन्होंने जो भावपूर्ण कविता लिखी, वह आज भी हमारे परिवार की अनमोल धरोहर है। कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहूंगी-
मंगल स्मृतियों की उजली धार,
आज सुवर्ण प्रभा बन उतरी
स्नेहा दीपिका की लौ पावन,
प्रेम उद्गम जलधार गंगोत्तरी।
आशीषों का यह नील गगन,
आगे भी पथ को आलोकित हो।
दांपत्य- सुधा का यह अमृत,
शत वर्षों तक मधुर स्पर्शित हो।।

सन् 2006 का वह भीषण सड़क दुर्घटना उनके जीवन में एक निर्णायक मोड़ बनकर आई। सामान्य व्यक्ति शायद परिस्थितियों के सामने टूट जाता, पर उन्होंने विपत्ति को ही अपनी साधना का माध्यम बना लिया। उसी के बाद उन्होंने स्वयं को पूर्णतः साहित्य-साधना के लिए समर्पित कर दिया। यह उनकी अदम्य जिजीविषा और सकारात्मक जीवन-दृष्टि का अनुपम उदाहरण है।
स्वास्थ्य आज भी उनका पूरा साथ नहीं देता। अनेक व्याधियों के कारण प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में औषधियाँ लेनी पड़ती हैं। किन्तु यह देखकर आश्चर्य होता है कि इन सबके बीच भी उनकी साहित्य-साधना, अध्ययन, लेखन और सामाजिक सक्रियता तनिक भी मंद नहीं हुई। सोशल मीडिया पर भी वे निरंतर सक्रिय रहते हैं और देश-विदेश के साहित्यकारों से आत्मीय संवाद बनाए रखते हैं। उनका जीवन

मानो यह संदेश देता है कि शरीर की सीमाएँ यदि मन स्वीकार न करे, तो साधना का दीपक कभी नहीं बुझता।

आलेख को अधिक विस्तार न देते हुए केवल इतना ही कहना चाहूँगी कि जीवन की इतनी ऊँचाइयों पर पहुँचकर भी इतने मानवीय गुणों से सम्पन्न बने रहना अत्यंत दुर्लभ है। सुरेश जी के व्यक्तित्व में विनम्रता, करुणा, आत्मीयता, स्नेह, संवेदनशीलता और पारिवारिक संस्कार सचमुच कूट-कूटकर भरे हैं।

मैं स्वयं को और अपने पूरे परिवार को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि हमें आपका स्नेह, मार्गदर्शन और आत्मीय सान्निध्य निरंतर प्राप्त हुआ है। आपके प्रति हमारे मन में जो आदर और श्रद्धा है, वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती।

अमृत महोत्सव के इस शुभ अवसर पर प्रभु से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वे आपको उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और सतत सृजन-शक्ति प्रदान करें। आपकी लेखनी निरंतर समाज और साहित्य को आलोकित करती रहे तथा आपका स्नेहिल सान्निध्य हम सभी को इसी प्रकार सदैव प्राप्त होता रहे।

सादर प्रणाम एवं अमृत महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्नेहलता बैद
संपादक ,कल्याण भारती पत्रिका
कोलकाता

, 2021 शुभ लाभ DAILY

सुरेश चौधरी को दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान

बैंगलुरु/शुभ लाभ ब्यूरो

विश्व प्रसिद्ध 'साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान' वर्ष 2021 के लिए कोलकाता के साहित्यकार, चिंतक, विचारक, कवि सुरेश चौधरी 'इंदु' का चयन किया गया है। यह सम्मान 26 दिसम्बर को बैंगलोर में होने वाले 'अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति' के अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन में प्रदान किया जाएगा। पूर्व में यह सम्मान टी एन चतुर्वेदी (तत्कालीन राज्यपाल तमिलनाडु), डॉ मृदुला सिंह(तत्कालीन राज्यपाल गोवा), कप्तान सिंह सोलंकी(तत्कालीन राज्यपाल पंजाब एवं हरियाणा) पद्मभूषण डॉ बिंदेश्वरी पाठक (संस्थापक सुलभ इंटरनेशनल), प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं राजनेता डॉ. करण सिंह, प्रसिद्ध गीतकार पद्मभूषण डॉ. गोपालदास नीरज को दिया जा चुका है। अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति देश-विदेश के दस हज़ार बहुभाषी लेखकों वाली देश की एक ऐसी, गैर-राजनीतिक, अग्रणी वैश्विक साहित्यिक (पंजीकृत) संस्था है, जो राष्ट्रपति भवन में कवि सम्मेलन के अलावा देश के विभिन्न चौदह राज्यों में अपने सफल और सार्थक राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित कर चुकी है। इसके संस्थापक अध्यक्ष पं. हैं। सुरेश चौधरी शिक्षा से विज्ञान स्नातक और चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। फ्रांस की सोर्बोन विश्वविद्यालय से अर्थ शास्त्र में पीएचडी स्वीकृत हो चुकी है। स्टेनलेस स्टील के उत्थान में भारत गौरव सम्मान मिल चुका है। स्टील के कारखाने लगाने के बाद गत 10 वर्ष से पूर्ण रूप से साहित्य को समर्पित हैं। इन्होंने अध्यात्म, यात्रा विवरण, बाल कविता, धर्म, साहित्य इत्यादि विषयों पर 29 पुस्तकें लिखी हैं। तत्कालीन राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी के हाथों से उन्हें विद्या वाचस्पति साहित्य गौरव सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन (पूर्वी सिंहभूमि) द्वारा हनुमान प्रसाद पोद्दार साहित्य आवर्ड सहित कई सम्मान मिल चुके हैं।

सुरेश चौधरी

काव्यमय अभिव्यक्ति

सौम्य, मृदुभाषी, शांत सरल, स्वभाव
मनमोहक है आपकी, सुमधुर मुस्कान

प्रतिभाशाली,बहुआयामी व्यक्तित्व से संपन्न
साहित्य-समाज के प्रति अनन्य समर्पण

प्रज्ञा से आलोकित,बुद्धि दिव्य,कुशाग्र
हैं ज्ञान के संवाहक,आपके प्रेरक विचार

शब्दों के साधक, भरते गागर में सागर
आपके सुंदर गीतों से सजते सप्त स्वर

स्नेह की दीप्ति से दीप्त, करुण चित्त
संवेदना,समानुभूति से प्रेरित, आपके प्रत्येक कृत

शक्ति,नेतृत्व,दिव्यता का आप हैं पर्याय
अनुकरणीय है आपके जीवन के हर अध्याय

आदरणीय आप हैं रचनाकारों का अभिमान
निस्वार्थ अविरत सेवा आपकी है पहचान

ज्ञान ओ गुणों का आप है सरस संगम
ऐसी महान विभूति को शत-शत नमन।

'शिवनंदिनी'कविता(कविता कोठारी)
स्वरचित,मौलिक रचना

जन्म दिन

जन्म दिन मुबारक हो आपको,
आगे ही बढते जायें आप।
पग-पग पर मिले सफलता,
कभी न दुख पायें आप।
चेहरे पर मुस्कुराहट हो सदा,
हर एक इच्छा पूरी हो आपकी।
स्वस्थ रहें आप सदा,
लम्बी उम्र हो आपकी।

उषा पांडे 'शुभांगी'

आप हैं गुणों के खान,
हम सब आप पर गर्व करते हैं।
आप हमारी प्रेरणा है,
आपको हर खुशी मिले, यही कामना करते हैं।
हम सब आपकी छत्रछाया में आगे बढ़ते हैं।
आप स्वस्थ रहें, चिरायु हो,
ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ऊर्जावान रहें आप हमेशा,
उल्लास जीवन में बना रहे।
सपरिवार खुश रहें हमेशा,
स्वजनों का जीवन, खुशियों से भरा रहे।
सारी खुशियाँ मिले आपको,
और खुशियाँ लुटायें आप |
जन्म दिन मुबारक हो आपको,
आगे ही बढ़ते जायें आप।

साहित्यसृजक, महाकवि, छंदसम्राट के गौरव एवं मेधा की प्रतिमूर्ति आदरणीय श्री सुरेश चौधरी:-

साहित्य सम्राट श्रीयुत सुरेश चौधरी जी के 75वें वर्ष में प्रवेश करने के ऐतिहासिक और भावुक अवसर पर, उनके व्यक्तित्व, उनकी विद्वता और आपके इस निश्छल, पितातुल्य संबंध को शब्दों में पिरोने का प्रयास कर रही हूँ।

कोलकाता की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गलियों में जहाँ कला और विचार साँस लेते हैं, वहाँ श्री सुरेश चौधरी एक ऐसा नाम हैं जो अपनी विद्वता, सादगी और गंभीर साहित्य साधना के लिए जाना जाता है। वर्ष 2026 के जुलाई का महीना केवल कैलेंडर का एक पन्ना नहीं है, बल्कि यह एक महान साहित्यकार, ओजस्वी कवि और प्रकांड बुद्धिजीवी के जीवन के गौरवमयी 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव है।

सुरेश जी का पूरा जीवन ज्ञान की खोज और शब्दों की आराधना को समर्पित रहा है। साहित्य जगत में उन्हें एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है जिनके पास न केवल अतीत का गहरा अनुभव है, बल्कि भविष्य को देखने वाली एक तीक्ष्ण बौद्धिक दृष्टि भी है। उनकी कविताओं में जहाँ जीवन का यथार्थ झलकता है, वहीं उनके निबंधों और लेखों में समाज को दिशा दिखाने वाली चेतना होती है।

परंतु, सुरेश चौधरी जी का व्यक्तित्व केवल उनकी साहित्यिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। उनका सबसे सुंदर रूप वह है, जो वे अपने करीबियों को एक वटवृक्ष की तरह छाँव देकर प्रकट करते हैं। किसी के लिए वे एक परम ज्ञानी गुरु हैं, तो किसी के लिए वे पिता के समान हैं। एक ऐसा पितातुल्य मार्गदर्शक ;जो बिना कुछ कहे अपनी मौन उपस्थिति से ही संबल दे जाता है; जो अपनी गहरी और शांत आँखों से जीवन की उलझनों को सुलझाने का हौसला देता है।

जब कोई उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ता है, तो वह केवल उनके ज्ञान से नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपे उस असीम वात्सल्य, साहित्यिक अनुभव

और अपनत्व एवं कला से जुड़ता है जो आज के दौर में दुर्लभ है। उनके जीवन के ये 75वें वर्ष इस बात का प्रमाण हैं कि उम्र केवल एक संख्या है, जब मन में साहित्य की लौ और हृदय में अपनों के लिए अगाध प्रेम जीवित हो। श्रीयुत सुरेश चौधरी जी के लिए उनकी वर्षगांठ पर कुछ पंक्तियाँ समर्पित करना चाहती हूँ।

✍ कविता:

"शब्दों के ऋषि, वात्सल्य के सागर(श्री सुरेश चौधरी)

कोलकाता की सांध्य हवा में, जो इक गूँज पुरानी है,

सुरेश चौधरी जी का जीवन, ज्ञान की एक कहानी है।
पचहत्तर वर्षों का अनुभ, गंगाजल की अविरल धार,
बिखरा जहाँ है केवल चिंतन, छंद सृजन का विस्तृत प्यार।

बुद्धि की ऊँचाई ऐसी, जैसे हैं गिरिराज विशाल,
प्रकृति के उन्मुक्त गगन में वचमके बनकर एक मिसाल।
लेखनी जब भी उठती उनकी, सच का चेहरा हँसता है
उनके हर एक शब्द में, जैसे कोई ऋषि बसता है।

साहित्यकार तो बहुत बड़े हैं, सारा जग यह गाता है,
पर मेरा मन तो उनमें, बस एक 'पिता' को पाता है।
वह साया जो हर धूप में, शीतल छांव बन जाता है,
मौन भी रहकर मार्गदर्शक बन सही राह दिखलाता है।

भावों की इस डोर से बंधकर, श्रद्धा के ये फूल खिले,
वर्षगांठ में पावन अवसर, खुशियों के संदेश मिले।
दीर्घायु हों,बस स्वस्थ रहें, यही दुआ हर पल गाए,
उनका आशीष सदा हम पर, अमृत बनकर बरस जाए।

श्रीमती अंशु त्रिपाठी -इंदौर

गुरु - गोविंद

कुछ अक्षर-सुमन चढ़ाएंगे
सर के चरणों में शीश झुकायेगे
कुछ सीख सकेगे ज्ञान-गुरु से
कुछ अर्जित करते जाएंगे

धन-वैभव का कुछ भान नहीं
सहज-सौम्य रुप अपनाते हैं
अध्ययन-अध्यापन का शौक हैं उनको
मार्ग-दर्शक वे कहलाते हैं

अनुशासन है रग-रग में उनके
भाषा - विद कहलाते हैं
वेदों के वे ज्ञाता हैं
शास्त्रों से गहरा नाता है

हम सीख सकें उनसे कुछ
बस इसकी ही अभिलाषा है
नतमस्तक उनको करते हैं
पद-पंकज पर भाव-सुमन हम रखते हैं

जीवन के सांध्य वेला में भी
सूरज सा वे हर क्षण दमकते हैं
हम चल सके उनके नक्शे-कदमों पर
बस ऐसी हसरतें रखते हैं

कई जन्मों के पुण्य-प्रतापों से
ऐसे गुरु-गोबिद से हम मिलते हैं

डॉ अल्पना सिंह (कोलकाता) शिक्षिका/कवयित्री

चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) और प्रतिष्ठित छंदकार कवि सुरेश कुमार चौधरी "इन्दु" गहरे चिंतक और विचारक,ज्ञान मार्ग के सच्चे मार्गदर्शक के इस अद्भुत व्यक्तित्व को नमन करते हुए यह विशेष कविता

डॉ केयूर मजमुदार

लेकर हाथों में बही-खाता, जो सुर-ताल सजाते हैं,
नंबर के संग शब्दों को भी, छंदों में चमकाते हैं
अकाउंट्स का हर पन्ना इनकी, लेखनी से छूटा है।
लेखा-जोखा और छंदों का संगमएक तरफ है
गवर्नर से सम्मान मिला, रिकॉर्ड भी नाम कराया है,
व्यापार और साहित्य का, ऐसा मेल दिखाया है।
नियम-कानून और धाराएँ, एक हाथ में रहती हैं,

दूजे हाथ कवि बन दिल जीत जाते हैं।
वो कवि बन, दुनिया के मैदानों में आज गूंजते हैं
सलाम है ऐसे रचनाकार को सलाम है
सीए की दुनिया, टैक्स और ऑडिट का काम,
दूजी तरफ है छंद साधना, "इन्दु" जी का पावन नाम।
अंकों की दुनिया के उस्ताद,
बजट और खातों के सरताज।
सीए बनकर राहदिखाई,
अर्थशास्त्र की समझ बढ़ाई।
सिर्फ व्यापार नहीं है जीवन,
साहित्य में भी रमता मन।
कवि बनकर जब कलम
उठाते, शब्दों से जादू बिखराते।

शब्दों के शिल्पकार शिव तांडव छंद को, हिंदी में ढाल दिया,
वैदिक ज्ञान और अध्यात्म को, जन-जन तक पहुँचा दिया।
अस्वस्थता को मात देकर, जिसने पकड़ी कलम-किताब,

चालीस से ऊपर ग्रंथ लिख दिए, रच डाला इतिहास बेहिसाब।
सच्चे चिंतक और विचारक, जन-मन के तुम हो मीत,
साहित्यकार बन रच डाला, मानवता का पावन गीत।
छंद-कविता के तुम महारथी, शब्दों से प्राप्त हर जीत ,
रचनाकार संस्थापक पंचम फहराया पथ यहीं जीवन रीत
गहरे चिंतक विचारक, ज्ञान मार्ग के सच्चे मार्गदर्शकव्यक्तित्व को नमन।

आपको है पिता मैंने माना – आलोक चौधरी
(आदरणीय सुरेश जी को समर्पित)

आपको है पिता मैंने माना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।
स्नेह बंधन न ये भूल जाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना॥

मुझपे अनुराग इतना लुटाया,
मुझको बेटा भी कहकर बुलाया।
अब ये नाता हमेशा निभाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।

आपने गर सम्भाला न होता,
बादलों में ये आलोक खोता।
आपसे मैंने खुद को है जाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।

अब भी है दूर मुझसे किनारा,
अब भी मैं ढूंढता हूँ सहारा।
हाथ मेरी तरफ तुम बढ़ाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।

उलझनों में उलझ मैं न जाऊँ,
रास्ते से भटकने न पाऊँ।
राह मुझको हमेशा दिखाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।

आपके पंथ में सिर झुकाऊँ,
शारदे माँ का आशीष पाऊँ।
माथ से हाथ अब ना हटाना,
यूँही पलकों पे मुझको बिठाना।

सर, आपको जन्म दिन की हार्दिक बधाई

साहित्य-साधना, संस्कार और अध्यात्म की सजीव प्रतिमूर्ति आदरणीय सुरेश सर को पचहत्तरवें जन्मदिवस की हार्दिक एवं अनंत शुभकामनाएँ।

सर, आपका व्यक्तित्व ज्ञान का एक ऐसा अनमोल शब्दकोश है जिससे जुड़कर हम सभी वैचारिक रूप से निरंतर समृद्ध होते रहे हैं। आपके जीवन के इस गौरवशाली पड़ाव पर आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए अत्यंत गर्व और सौभाग्य का विषय है।

साहित्य और अध्यात्म दोनों ही क्षेत्रों पर आपका असाधारण अधिकार है। जब भी आप काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र अथवा आध्यात्म की गूढ़ बातों को सरल, सटीक और सारगर्भित शब्दों में प्रस्तुत करते हैं, हम सभी आपके ज्ञान की गहराई के सम्मुख निःशब्द हो जाते हैं।

आध्यात्म का आलोक जगाया,
साहित्य का निखारा रूप।
गद्य, पद्य, कविता और गीतों को,
दिया आपने नव स्वरूप॥

निःशब्द हम हो जाते हैं,
ज्ञान-सागर के आगे।
शब्द स्वयं झुक जाते हैं,
आपके अनुभव के आगे॥

आदरणीय सुरेश सर, आपके नाम पर विचार करती हूँ तो उसमें भी एक अद्भुत आध्यात्मिक संकेत दिखाई देता है। 'सुरेश' अर्थात् देवताओं के ईश, दिव्यता और कल्याण के प्रतीक। वास्तव में आपका व्यक्तित्व भी ज्ञान, विनम्रता, संस्कार और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर संगम है। आप हम सबके लिए केवल गुरू ही नहीं, बल्कि एक प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक और जीवन-मूल्यों के संवाहक हैं।
ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और सतत सृजनशीलता प्रदान करें, आपके ज्ञान-ज्योति हमसब का पथ सदैव आलोकित करता रहे।

सादर प्रणाम एवं जन्मदिवस की अनंत हार्दिक शुभकामनाएँ।

सबिता भुवानिया

शीर्षक : शब्दों के साधक हैं इन्दु

शब्दों के साधक इन्दु जी, हिन्दी के श्रृंगार हो,
साहित्याकाश के उज्ज्वल, ध्रुव -तारे साकार हो।
भावों की गंगा है बहती, आपकी हर रचना में,
मानवता का दीप जले, जीवन की अभिलाषा में।
ज्ञान, विवेक, संवेदना के, अनुपम तुम आधार हो,
साहित्याकाश के उज्ज्वल, ध्रुव -तारे साकार हो।।
कलम आपकी सत्य - सुगन्धित, जन - मन का सन्देश दे,
राष्ट्र -संस्कृति की गौरव -गाथा , नव पीढ़ी को ज्ञान दे,
हिन्दी माँ के भाल सुशोभित, तुम अमूल्य उपहार हो,
साहित्याकाश के उज्ज्वल, ध्रुव -तारे साकार हो।।
शब्दों के साधक इन्दु जी, आप हिन्दी के श्रृंगार हो,

डॉ. अशोक गिरी, हरिद्वार

आदरणीय सुरेश सर के 75वें जन्मोत्सव पर

पचहत्तर बसंतों की यह उजली दहलीज़
शब्दों की तपस्या का अनुपम है भान
कुछ लोग उम्र से बड़े होते हैं
आप अपने कर्मों से युगों के बराबर हैं श्रीमान
आपकी लेखनी केवल लिखती नहीं
वह विचारों को दिशा है दे जाती
आपकी कविताएँ केवल पढ़ते नहीं
वे हिंदी का एक जीवंत विद्यालय है बन जाती
हर रचना में गहराई का सागर

हर पंक्ति में अनुभव का प्रकाश
शब्द जैसे मोतियों की लड़ी
अप्रतिम कविताएँ चूमती आकाश
विनम्रता आपकी पहचान है
सौम्यता आपका आभूषण
स्नेह से सबको अपना बना लेना,
आपके व्यक्तित्व का सबसे सुंदर गुण
"रचनाकार" केवल एक मंच नहीं,
यह तो अपनत्व का है एक विस्तृत परिवार
जहाँ हर स्वर को सम्मान है मिलता
हर भावना को मिलता शब्दों का संसार
इस परिवार की धड़कन हैं आप,
इसकी आत्मा, इसकी पहचान
जिस समर्पण से है आपने इसे सींचा
वह किसी साधना से कम नहीं जान
आपकी कलम यूँ ही अनवरत रहे चलती
आपका स्नेह यूँ ही हम पर बरसता रहे
यूँ ही साहित्य, संस्कार और सृजन का
अक्षय दीप सर्वदा जलता रहे
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ, आदरणीय सुरेश सर।

शुभकामनाएं

पचहत्तर वर्ष की यह यात्रा केवल आयु का पड़ाव नहीं, बल्कि अनुभव, सृजन और संस्कारों की एक सुंदर साधना है। हमारे रचनाकार के संस्थापक सभापति आदरणीय सुरेश चौधरी सर जी केवल एक लेखक या कवि ही नहीं, बल्कि हम सभी के लिए अभिभावक तुल्य व्यक्तित्व हैं।

मैं उन्हें बहुत गहराई से तो नहीं जानती, लेकिन उनकी लेखनी, उनके विचारों और शब्दों की गरिमा से उनके व्यक्तित्व की ऊँचाई सहज ही महसूस होती है। उनकी रचनाओं में संवेदनाएँ, जीवन के अनुभव और समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देता है। अनेक पुस्तकों और कविताओं के माध्यम से उन्होंने साहित्य जगत को समृद्ध किया है। उनका स्नेह और मार्गदर्शन सदैव पिता तुल्य अनुभव होता है। वे केवल शब्दों का सृजन ही नहीं करते, बल्कि लोगों को जोड़ने और प्रेरित करने का कार्य भी करते हैं।

उनकी इस डायमंड जुबली वर्षगाँठ पर मैं हृदय से उनके स्वस्थ, सुखमय और दीर्घायु जीवन की कामना करती हूँ। ईश्वर करे उनकी लेखनी यूँ ही निरंतर चलती रहे और हीरे जैसी चमक के साथ आने वाली पीढ़ियों के पथ को आलोकित करती रहे।

पूर्णिमा जयसवाल

बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी, कवि हृदय, अनेक विषयों के उद्भट विद्वान होते हुए भी सहज और सरल आदरणीय सुरेश चौधरी साहब मुझ अकिंचन को अनुज समान स्नेह करते हैं। श्री सुरेश चौधरी साहब के 75 वें जन्मदिवस के अवसर पर दिल की गहराइयों से बधाई देते हुए मैं ईश्वर से उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की कामना करता हूं।

-दीक्षित दनकौरी, दिल्ली

साहित्य के तपस्वी, युग चेतना के उद्घोषक ,मानवीय मूल्य के संरक्षक एवं संस्कृति के संवाहक आदरणीय सुरेशजी को उनके 75 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव पर

हृदयतल से बहुत-बहुत बधाई एवं, मंगल कामना। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु बनाएं। सुरेश जी के व्यक्तित्व पर कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। लेखनी में जिनके अनुभूतियों की गहराई तथा दर्शन की उदात्तता समन्वित रूप से अभिव्यक्त होती है। एक साहित्यकार के रूप में सुरेश सर की साहित्यिक प्रज्ञा इतनी व्यापक है जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में उतनी ही गहराई, गंभीरता एवं कालजयी रूप मे दिखाई देता है ।भारतीय साहित्य ,आध्यात्म ,संस्कृति, के प्रति समर्पित सुरेश सर के साहित्य ने कठिन से कठिन दर्शन,वेदों ,को साधारण जन मानस के लिए सरल बनाकर उनको एक नवचेतना की राह दिखलाई है। भारतीय दर्शन ,मनुस्मृति, शून्य से शून्य तक जैसी कृतियाँ उनकी विद्वता और आध्यात्मिक दृष्टि की परिचायक है। उनकी रचनाएं केवल साहित्यिक सौंदर्य से परिपूर्ण नहीं होती बल्कि सामाजिक चेतना की वाहक भी होती हैं। उनकी प्रतिभा बहुआयामी है ।उन्होंने साहित्यिक, सामाजिक सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अपनी कार्यशीलता को प्रदर्शित किया है ऐसे साहित्यकार एक अमूल्य धरोहर है और उनकी साहित्य साधना भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्तोत्र का कार्य करती है। हमे उनके आदर्शों और विचारों से प्रेरणा ग्रहण कर साहित्य ,संस्कृति एवं मानव मूल्यों के संरक्षण हेतु सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। साधना पथ पर अग्रसित युग पुरुष को शत-शत नमन।.

मंजूश्री गुप्ता

शब्दों के पुजारी, वेदों के अध्येता
भारतीय संस्कृति के पूजक, सनातन के पर्यायी
"रचनाकार "के अधिकारी
कविता ,गीत,गद्य, पद्य
सभी साहित्यिक विधाओं के रचनाकार, श्री सुरेश चौधरी जी को पचहत्तर वर्ष पूरक पर
स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन के शतवार्षिकी के लिए हार्दिक शुभकामनायें। साहित्य सृजन यात्रा चलती रहे।कर्मयोग की उपासना चलती रहे।स्नेह बना रहे।
चरैवेति -चरैवेति

विद्या भंडारी, वरिष्ट साहित्यकार कोलकाता

संस्मरण

प्रख्यात साहित्यकार ,कवि गणेश दत्त बजाज के उद्गार

श्री सुरेश चौधरी इंदु मूलतः एक दार्शनिक, हिंदी और संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान, एक प्रख्यात चार्टेड अकाउंटेंट और 43 प्रकाशित कृतियों के रचयिता, एक सरल हृदय चिंतक व्यक्तित्व हैं। उनसे परिचय पाकर ऐसा लगा, मानो एक विशिष्ट व्यक्तित्व से हमें आत्मीय, स्नेहिल बंधन मिला हो। कुछ वर्ष पूर्व उनके साथ भारतीय वेदान्त पर की गई ऑनलाइन चर्चा सत्रों में समभागी बनने का पवित्र अवसर मिला, जिससे हमें भारतीय दर्शन शास्त्र और वेदान्त पर उनके विचार सुनने को मिले। फिर अनेक कार्यक्रमों में उनका साथ मिलने लगा और मिलकर “रचनाकार” के साहित्यिक कार्यक्रमों में और श्रीमदभगवद गीता के श्लोकों पर ऑन लाइन विवेचन कार्यक्रमों में सहभागिता होती रही, जिससे उनके व्यक्तित्व को और अधिक जानने का मौका मिला। स्नातक विज्ञान विषयों में करने के बाद, चार्टर्ड अकाउंटेंट बनकर भी अपने साहित्यिक और दार्शनिक स्वभाव वश अपनी अनेकानेक जिम्मेवारियों को संभालते हुए अपने रचनाकार / साहित्यकार मन को सदैव आगे रखा। प्रबंधक (वित्त), उषा एलॉयज़ एंड स्टील्स (1977–1982), उपाध्यक्ष (वाणिज्य), बिहार एलॉय स्टील्स लिमिटेड (1982–1983), बड़ौदा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बारबिल एवं कोलकाता में इस्पात-सम्बद्ध 18 औद्योगिक इकाइयों के संस्थापक एवं प्रवर्तक (1983–2008), आर्थिक सलाहकार (2008–2011) के महटकपूर्ण दायित्व निभाने के बाद 2011 से पूर्णकालिक लेखक, दार्शनिक एवं कवि के रूप में कार्य कर रहे हैं। अपना जीवन हिन्दी साहित्य एवं भारतीय दार्शनिक चिन्तन की साधना को समर्पित करते हुए अपनी रचनाओं के माध्यम से अध्यात्म, सौन्दर्यबोध एवं मानवीय अनुभवों के विविध आयामों को एकसूत्र में जोड़ते हैं। 43 कृतियाँ प्रकाशित होने के बाद इनकी पाँच कृतियाँ प्रकाशनाधीन हैं। प्राचीन आध्यात्मिक अवधारणाओं को समकालीन संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते, सत्य, करुणा एवं आत्मज्ञान जैसे सनातन धर्म के मूल तत्त्वों पर आधारित ‘श्री दुर्गतिविनाशिनी’, ‘सुर तारिणी’, ‘गोपी गीत’ एवं ‘इंदु पदावली’ कृतियों के लिए सुरेश चौधरी ‘इंदु’ जी प्रसिद्ध हैं और अपने काव्य, निबन्धों एवं शास्त्रीय अनुवादों के माध्यम से इंदु जी आधुनिक भारतीय चिन्तन के एक महत्वपूर्ण स्वर के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। उनकी रचनाओं में छन्दानुशासन, भाषिक शुद्धता एवं भावात्मक तीव्रता का विलक्षण समन्वय मिलता है। इनकी कृतियाँ ‘वेद से

वेदान्त तक', नौ उपनिषदों — ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय एवं श्वेताश्वतर — का काव्यानुवाद, हर हर महादेव (शिव स्तोत्रों एवं मन्त्रों का संस्कृत से हिन्दी में छन्दबद्ध रूपान्तरण), सुभाषितम्, गोपी गीत, सुर तारिणी, भारतीय दर्शन, भारत के अन्य दर्शन, वेदान्त, श्रीमद्भागवत महापुराण (एक विश्लेषणात्मक समीक्षा), वेद – परिचय एवं समीक्षा, मनुस्मृति – परिचय एवं समीक्षा, भ्रम और भ्रांतियाँ, चमत्कृत करती भाषा संस्कृत कृतियाँ परम उपयोगी हैं।

इंदु जी की काव्य एवं साहित्यिक कृतियाँ - तिमिर ढलेगा, बुलबुले सी ज़िन्दगी, कुछ मानिक कुछ मोती, प्रांजलि, आसमान को छू ले, हे माँ, शून्य से शून्य तक, इंदु प्रभा, मैं जीवन दण्ड विधान हूँ, भक्तिरस, इंदु पदावली भाग I और II, दोहांजलि बहुत प्रभावशाली कृतियाँ हैं। इंदु जी की एक काव्य संग्रह पुस्तक 'प्रांजलि' को अंग्रेजी में मुझे और डॉ आर के गुप्ता जी को अनुवाद करने का अवसर भी मिला, जिसे 'SOUL ECHOES' के नाम से प्रकाशित किया गया है।

शोध, निबन्ध एवं सामाजिक-आर्थिक अध्ययन विषयक रचनाएं – मूल्यांकन, भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित — आर्थिक निबन्धों का संकलन, भारतीय काव्य संहिता, Accidental Tour in Hibernation, — सात माह की अनियोजित राष्ट्रीय यात्रा का संस्मरण, बूंद बूंद सागर, ऋग्वेदीय उपनिषद, अथर्ववेदीय उपनिषद, सामवेदीय उपनिषद, यजुर्वेदीय उपनिषद, लघु उपनिषद त्रयी, छन्द

इंदु जी ने कोविड-19 काल के दौरान एवं उसके पश्चात् तीन वर्षों में 1000 भक्ति-कविताओं की रचना की [International Book of Records (2023) द्वारा मान्यता प्राप्त]। अनेक प्राचीन हिन्दी छन्दों का पुनर्जीवन एवं पुनर्स्थापन की और भाषिक अनुशासन एवं दार्शनिक गहराई का अद्वितीय समन्वय बनाने में विशेष योगदान है।

अनेकानेक सम्मानों एवं अलंकरणों से सुशोभित इंदु जी के दीर्घ स्वस्थ और शांत-संतुष्ट जीवन की कामना करता हूँ।

गणेश दत्त बजाज
पंचकुला।

धवल व्यक्तित्व के धनी

मेरी कोलकोता साहित्यिक यात्रा के दौरान ,,, एक धवल मलमल का कुर्ता ,,पायजामा पहने ,,एक छड़ी हाथ में लिए एक सज्जन से मिलना हुआ। लगा कोई धन्ना सेठ होंगे ,,मुख्य प्रायोजक ,,धनबल से अग्रिम पंक्ति में विराजित हैं,,साहित्य से क्या सरोकार होगा।

लेकिन जब परिचय की किताब खुली तो अनगिनत ,मोती निकल आए।

यूं तो वे साइंटिस्ट ,,उद्योगपति समाज सेवी ,,,व्यापारिक वित्तीय सलाहकार और भी ना जाने क्या क्या अध्ययन व पदों को शोभित कर चुके व्यक्ति।

लेकिन सुखद आश्चर्य तब हुआ जब उनके लेखन से परिचय हुआ।

पिछत्तर की उम्र में पिछत्तर पुस्तकों के रचयिता। विषय भी कमाल के समाज से ले कर आध्यात्म तक ,,कोई विषय अछूता नहीं। उनकी प्रतिभा को बंगाल सरकार ने पहचान कर विभिन्न अवसरों पर विशेष सम्मानों से नवाज़ा ।

और मित्रों के मित्र ,,,मुझे और डॉ हरिदास व्यास को ख़ास मनुहार के साथ भोजन पर आमंत्रित करना। कोई भला कैसे भूल सकता है।

बकौल निदा फ़ाज़ली ,,,

एक आदमी में होते हैं दस बीस आदमी

जिसको भी देखना हो कई बार देखिये।

मैने जिस किसी कोण से देखा ,,,एक अलग शख्सियत दिखाई पड़ी।

उनके साहित्य की लंबी फहरिस्त उनके परिचय में मिल जाएगी ,,जो परिचय में नहीं है वह है एक नेकदिल इंसान ,अभिभावक सा व्यक्तित्व । चेहरे पर मासूम मुस्कान।

ऐसे हैं सुरेश चौधरी साहेब।

लिखने को बहुत कुछ है फिलहाल इतना ही।

डॉ प्रेम तन्मय

कवि साहित्यकार समीक्षक

बेंगलुरु

एक संस्मरण

आदरणीय सुरेश जी चौधरी साहब को में जब से फेस बुक से जुड़ा तब से परिचित हूँ|सुरेश जी सर बेहद मिलन सार और सब से स्नेह रखने वाले है फेस बुक के पुराने पटल एकल काव्य पाठ पर सर से परिचित हुआ आपका समृद्ध लेखन है उसके बारे में तो में क्या ही बात करूं वो मेरी सामर्थ्य में नहीं है,लेकिन सर से 2014 में पहली मुलाकात हुई जब एक कार्यक्रम में कोलकता जाना हुआ साथ में और भी कई साहित्यकार और भी थे जिसमें प्रमुख बड़े भैया जीपी पारीक सर गोपाल जी पारीक सर दीपिका द्विवेदी मेंम विश्वजीत शर्मा जी शामिल थे सर ने जो प्यार दुलार और मेहमान नवाजी की वो शब्दों में नहीं बाँधी जा सकती |दुबारा जब कोलकता जाना हुआ तब सुरेश जी सर को मैने जो कवि सम्मेलन हो रहा था उसमें उपस्थिति देने हेतु निवेदन किया स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के बाद भी सर आदरणीया भाभी जी के साथ पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे और भरपूर स्नेह बरसाया और भी कई यादें है जिनका उल्लेख में कर सकता हूं पर वो स्थानाभाव के कारण संभव नहीं,सर को इस जन्म जयंती पर प्रणाम सहित हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं आप हमेशा स्वस्थ और प्रसन्न रहें दीर्घायु हों यही महादेव से प्रार्थना है |शुभम

<u>प्रहलाद पारीक भीलवाड़ा राजस्थान</u>
<u>प्रसिद्ध मंच संचालक एवं कवि</u>

संस्मरण

मैं आदरणीय सुरेश चौधरी सर को गत छह: वर्षों से जानती हूँ। कोरोनाकाल में आपके सम्मानित मंच व पटल "रचनाकार" से मैं आनलाइन जुड़ी। तब से अब तक का साथ व सफर बहुत रोचक है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आदरणीय सुरेश चौधरी सर हमारे अभिभावक समान हैं। आपने रचनाकार के माध्यम

से समूचे विश्व व देश के साहित्यिकारों, लेखकों , कवियों व कलाकारों को एक मंच पर जोडा। नवांकुरों को भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का पूरा अवसर दिया। वरिष्ठ साहित्यकारों ,कवियों व लेखकों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं कलकत्ता कभी नहीं गई और अब ऐसा लगता है मानो मेरा अपना एक परिवार "रचनाकार परिवार" के रूप में कलकत्ता में है। प्रति वर्ष आदरणीय सुरेश चौधरी सर बहुत मन से सादर स्नेहिल आमंत्रण प्रेषित करते हैं हमें सितम्बर में होने वाले रचनाकार के वार्षिक उत्सव का और अधिकांश रचनाकार पहुँचते भी हैं। मुझे भी यह सौभाग्य शीघ्र अतिशीघ्र प्राप्त हुआ। हमेशा किसी न किसी अपरिहार्य व्यक्ति कारणों के चलते मैं कलकत्ता के उत्सव में शामिल न हो सकी किंतु आनलाइन आयोजनों में मेरी भागीदारी व उपस्थिति सदैव रहती है। आदरणीय सुरेश सर ने मेरी प्रतिभा को पहचान कर मुझे रचनाकार के पटल पर मंच संचालन, नाट्य प्रस्तुति, नृत्य प्रस्तुति,एक अभिनय, साक्षात्कार एवं काव्य पाठ हेतु बारम्बार अवसर दिया जिसके लिए मैं हृदय तल से आदरणीय सुरेश चौधरी सर को कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। सर के व्यक्तित्व व कृतित्व से मैं क्या सभी बेहद प्रभावित हैं। आज इस आयु में इतनी स्वास्थ्य समस्याओं के बाद भी आप निरंतर साहित्य साधना में समर्पित हैं। प्रतिदिन आप क्लिष्ट प्रांजल हिन्दी भाषा में अतिसुंदर काव्य कृतियां व लेख पटल पर प्रेषित करते हैं जो अत्यंत ज्ञानवर्धक होती हैं। हमारे देश के प्रथम सौ उद्योग पतियों में से एक आप भी रहे जो हम सभी के लिए अति गौरव का विषय है।मैं दो बार सुरेश सर व मैम से दिल्ली में मिल चुकी हूँ। दोनों ही भेंट अत्यंत आत्मीयता व ममत्व से परिपूर्ण रहीं। दिल्ली में माधुरी स्वर्णकार एवं विजय स्वर्णकार जी द्वारा आयोजित सुंदर काव्य गोष्ठी में सुरेश सर व मैम से प्रथम भेंट हुई।सुंदर मोतियों के पटके से सर ने हम सभी को सम्मानित किया। रचनाकार संस्था द्वारा "रचनाकार भूषण सम्मान -2021" एक अतिसुंदर कलात्मक स्मृति चिन्ह के रूप में डाक द्वारा हमें दिल्ली भेजा गया व साथ ही हमारी लिखी कविताएँ भी रचनाकार की पुस्तकों में प्रकाशित कर वे पुस्तकें भी हमें दिल्ली में डाक द्वारा प्राप्त हुई।मन भावविभोर हो उठा। जन्मदिन, सालगिरह हम लोग पटल पर मनाते हैं आनलाइन।लगता कि नहीं कि कोई दूरी भी है। द्वितीय भेंट आदरणीय सुरेश चौधरी सर व मैम से दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई थी जब आप दोनों वंदेभारत से देहरादून जा रहे थे। मैं मिलने रेवले स्टेशन पहुँची और बहुत आत्मीयता व ममत्व का

अनुभव किया। इतना स्नेह, आशीर्वाद देते हैं आप दोनों कि मन गदगद हो उठता । कब मैंने ऐसी कल्पना की थी कि कभी कलकत्ता से मेरा ऐसा नाता जुड़ जाएगा। आदरणीय सर आधुनिक तकनीक को पूरा महत्व देते हैं।बदलते परिवेश में ज्वलंत समस्याओं व सामाजिक मुद्दों पर भी चर्चा परिचर्चा हेतु सबको अवसर देते हैं।अभी मार्च में महिला दिवस पख़वाडा चला ।सर ने मेरे सुझाव पर गौर कर मुझे पूरा अवसर दिया कि चार कड़ियों के इस सुंदर आयोजन को मैं अपनी तरह से आयोजित करूं जिसमें मेरा पूरा सहयोग सुश्री रचना सरन जी ने किया। बहुत आनन्द आया। आजकल मैं विभिन्न क्षेत्रों से विलक्षण प्रतिभा के धनी सुविज्ञजनों के साक्षात्कार ले रही हूँ। आदरणीय सुरेश सर का जितना धन्यवाद करूँ कम है। आपने हम सबको बहुत कुछ दिया। मंच, सम्मान, प्रतिभा प्रदर्शन के अवसर और हमारे नवीनतम विचारों का स्वागत कर उन्हें संज्ञान में लिया। बहुत कम लोग इस धरती पर हैं आदरणीय सुरेश चौधरी सर जैसे जो निस्स्वार्थ भाव से न केवल माँ शारदा की सेवा कर रहे हैं बल्कि हम सबको भी पूरा अवसर दे रहे हैं। रचनाकार परिवार मेरे जीवन का अभिन्न अंग है और सदैव रहेगा। इतने ज्ञानी, विद्वान और सफल उद्योगपति होते हुए भी सुरेश सर मैं रत्ती भर भी अहंकार नहीं है। सभी छोटों बड़ों को बराबर का स्नेह व सम्मान देते हैं।कर्मठता और जिजिविषा कोई आप से सीखे। मैं धन्य हूँ जो आपका सानिध्य व स्नेहाशीष मिली। अपने जीवन संघर्षों के लिए भी मुझे आपके व्यक्तित्व - कृतित्व से बहुत प्रेरणा मिलती है। आदरणीय सर का जन्मदिन हम इसी प्रकार मनाते रहें यही कामना है।

प्रभात खबर
अक्टूबर

सुरेश चौधरी ने बनाया भजनों का विश्व रिकॉर्ड

कोलकाता. प्रख्यात कवि, लेखक, चिंतक, विचारक एवं अध्यात्मवादी सुरेश चौधरी चार अगस्त 2020 से प्रत्येक दिन एक भजन लिख कर सोशल मीडिया में पोस्ट करते रहे हैं. चार अगस्त 2023 को इस प्रकार भजनों की संख्या 1000 पूर्ण हुई, जिसे विश्व कीर्तिमान हेतु भेजा गया. इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड संस्था ने इस विश्व कीर्तिमान को जांच कर मंजूर किया एवं प्रमाण पत्र जारी कर इसे विश्व कीर्तिमान घोषित किया है. सुरेश चौधरी को साहित्य के क्षेत्र में कई सम्मान मिल चुके हैं एवं वे अंतरराष्ट्रीय संस्था रचनाकार के संस्थापक सभापति भी हैं.

कामना मिश्रा 'दीप'

सुरेश सर

लेखन शैली को मिला,अद्भुत है विस्तार,
वरद हस्त से आपके ,बढ़ते रचनाकार।

विस्तृत सागर सा लगे,अनुभव ज्ञान अपार,
ज्ञान सुधा रस की बहे,निश्छल अविरल धार।

प्रेम भाव से गूँजते,शब्द ये 'सर सुरेश '
अभिभावक हम मानते,स्नेहमयी परिवेश।

आदरणीय सुरेश सर,इसी रूप में हम उन्हें संबोधित करते हैं,इनसे मेरा परिचय लगभग दो वर्ष पूर्व हुआ ।परिचय व्यक्तिगत रूप में नहीं था।मैं सर द्वारा संस्थापित अंतर्राष्ट्रीय संस्था,रचनाकार,की एक काव्य गोष्ठी में भाग लेने आयी थी।इतनी प्रभावित हुई कि उसी दिन संस्था की सदस्यता स्वीकार कर ली।

सफेद कुर्ता-पाजामा ,चेहरे पर गंभीर भाव,आँखों में अत्यधिक गहराई:यह सर का बाह्य स्वरूप है जिससे दुनिया रूबरू होती है किंतु प्रतिदिन सर की लिखी रचनाएँ फिर वे कविताएँ हों,दोहे हों,कोई भी छंद अथवा कोई आलेख सर की समृद्ध भाषा,उनका शब्द ज्ञान अत्यंत प्रभावशाली जान पड़ता है ।अनेकों बार जब सर किसी कार्यक्रम में अपनी रचना का पाठ करते हैं वे रचनाएँ समृद्ध,तत्सम शब्दों का संकलन होती हैं ।मैं शरारतवश कविता समाप्त होते ही सर से कहती हूँ,अब इसकी संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।सर मुस्कुरा देते हैं।

कई बार ऐसा अनुभव रहा जब सर ने मुझपर विश्वास दिखाया,मेरी विभिन्न विषयों पर राय माँगी,यह मेरे लिए गौरवशाली अविस्मरणीय पल थे।

वार्षिक उत्सव जो रचनाकार संस्था प्रति वर्ष भव्य रूप में आयोजित करती है,उसमें सर ने मुझे मान देते हुए बड़ी ज़िम्मेदारियाँ सौंपी ।बड़ा अच्छा लगा।कार्यक्रम के पश्चात कुछ चुनिंदा सदस्यों से कार्यक्रम के विषय में स्पष्ट प्रतिक्रिया माँगी ।मैं भी उनमें से एक थी।मेरे हिचकिचाने पर सर ने ज़ोर दिया कि यदि मैं सही अनुभव नहीं साझा करूँगी तो अगले वर्ष वे सुधार कैसे करेंगे ।मेरी हिम्मत बढ़ी,मैंने अपने विचार रखे ।सुरेश सर ने बड़े धैर्य से मेरी बातें सुनीं और कई टिप्पणियों पर सहमति जताई ।यह उनके महान व्यक्तित्व का एक उदाहरण है।

गत वर्ष होली के अवसर पर एक काव्य गोष्ठी आकाशवाणी भवन में सुनियोजित की गयी थी।सर का मुझे कॉल आया।उन्होंने मुझसे पूछा,हास्य कवि सम्मेलन के लिए किसी का नाम सुझाओ।मेरी जानकारी में जो कुछ नाम थे,मैंने सर को बताए ।अचानक सर बोले,तुम लिखो न!मैंने कभी हास्य लिखा नहीं था किंतु सर के उत्साह वर्धन पर मैंने रचना लिखी ।मुझे आकाशवाणी केंद्र में बड़ी साहित्यिक विभूतियों के संग काव्य पाठ का अवसर प्राप्त हुआ ।यह मेरे जीवन की बड़ी उपलब्धियों में से एक है।
अभी पिछले दिनों सर ने मुझे फोन करके कहा कि उन्हें मुझ पर विश्वास है कि मैं संस्था के लिए समर्पण भाव से कार्य करूँगी,इसलिए वे मुझे संस्था में उपाध्यक्ष पद देना चाहते हैं ।मेरे झिझकने के वावजूद मुझे सम्मान दिया।मैं सर के प्रति कृतार्थ हूँ।
अक्सर जब मैं कोई रचना लिखती हूँ,सर को गाकर पोस्ट कर देती हूँ।सर के शब्दों के माध्यम से अपनी प्रशंसा सुन बहुत उत्साह मिलता है ।सर कई बार मुझसे कहते हैं कि वे अपनी रचना का गायन मुझसे करवाएँगे ।रचनाकार संस्था एक परिवार सी प्रतीत होने लगी है ।कई बार सर से अधिकार वश कुछ चीज़ों के लिए शिकायत भी कर देती हूँ।सर को जन्मदिन की अशेष मंगलकामनाएँ।आप सदैव स्वस्थ रहें।रचनाएं लिखते रहें।कीर्तिमान स्थापित करते रहें।हमें आप पर गर्व है।

भारती मिश्रा

बंग प्रदेश में मातृभाषा के साहित्यिक मनीषी

साहित्य और लेखन विशुद्ध माँ सरस्वती की कृपा से ही संभव हो पाता है। सबसे पहले मैं मेरी स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूँ, मैं भी छोटी-मोटी तुकबन्दी कर लेता हूँ। कभी-कभी खूब माथापच्ची करने के बाद भी दो लाइन नहीं लिख पाता हूँ। किन्तु जब माँ शारदे की कृपा होती है तो पूरी कविता या लेख एक ही झटके में लिख जाता हूँ।

मुझे यह जानकर अति प्रशन्नता हुई कि श्री सुरेश जी चौधरी के स्वर्णजयंती के अवसर पर कोलकाता का प्रतिष्ठित "रचनाकार" काव्य ग्रुप एक विशेषांक निकल रहा है। मेरे साहित्यिक मित्र श्री सुरेश जी चौधरी और मैं दोनों ही राजस्थान के एक ही भू-भाग से हैं और हमारी कुलदेवी भी एक ही हैं, जीणमाता भवानी। चौधरी जी के पूर्वजों ने जन्मभूमि राजस्थान से दूर देश के सुदूर पूर्व बिहार और बंगाल को अपनी कर्मभूमि चुना। सुरेश जी का जन्म स्व. सेठ श्री भोलारामजी चौधरी और माता श्रीमती दुर्गावतीजी चौधरी के यहाँ जमशेदपुर में हुआ और वहीं पढ़-लिखकर कर्मक्षेत्र में प्रवेश किया। वित्तीय प्रबंधन में महारत हासिल कर के आपने विभिन्न कंपनियों और संस्थानों/संस्थाओं से जुड़कर अपनी कार्यदक्षता के कीर्तिमान स्थापित किए। वित्तीय गतिविधियों वाले बहुत कम लोग ही साहित्यिक क्षेत्र से जुड़ पाते हैं। किन्तु चौधरीजी ने अपनी असाधारण बोद्धिक क्षमता के बल पर साहित्य के गूढतम सनातन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर अपनी लेखनी से कमाल कर दिखाया।

मैं भारत सरकार की वित्त तथा लेखा सेवा में कार्यरत रहा हूँ और जब तक सेवा में रहा, तब तक साहित्य लेखन तो दूर की बात थी। बल्कि उसके बारे में सोच भी नहीं पाया। हम दोनों वित्तीय सेवाओं से जुड़े रहे और दोनों ने ही सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य की ओर रुख किया। इस क्षेत्र में आते ही चौधरी जी साहित्यिक और अपने पूर्व कार्यवृत्त के एकदम विपरीत साहित्यिक क्षेत्र में ध्रुव तारे के समान दमकने लगे। आपका लेखन सनातन संस्कृति के उन्नयन की ओर लग गया।

सुरेश जी ने कविता की विभिन्न विधाओं (हाइकु, मुक्त छंद, छांदस कविताएँ) बड़ी शिद्दत के साथ जिया है।

अस्वस्थता के कारण आपने वर्ष 2011 में व्यवसायिक गतिविधियों को विराम देकर रुग्णावस्था में ही साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न हो गए। साहित्यिक क्षेत्र से जुड़ने के बाद कभी आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जिसके फलस्वरूप धर्मपरायण सुरेशजी सनातन धर्म लेखन में नये नये और उच्च कीर्तिमान स्थापित करते चले आ रहे हैं। आपने बहुत से धार्मिक ग्रंथों के सरल भाषा में अनुवाद कर जनसाधारण की सेवा की है। किन्तु गहन विषयों के सृजन में व्यस्त रहते हुए भी आप नियमित रूप से कविताएँ आलेख आदि लिखना नहीं भूले। देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। कोलकाता के ताजा टीवी और दूरदर्शन पर समय समय पर धार्मिक और आर्थिक विषयों पर चर्चाओं में अपने विचारों से प्रभावित करते रहे हैं। वेद, उपनिषद और गीता जैसे गूढ ग्रंथों का सरल भाषा में अनुवाद कार्य बहुत बृहद और शानदार रहा है; जैसेः

1. श्री दुर्गतिविनाशिनी
2. श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंदमुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा आदि।
3. वेद से वेदांत तकः मूल पाठ सहित
4. उपनिषद
5. आदिशंकर रसमाधुरी
6. भजगोविन्दम्
7. महिषासुरमर्दिनी आदि सहित और बहुत से ग्रंथों के काव्यमय तथा गद्य में अनुवाद किए हैं।

काव्य विधा की कुछ कृतियाँ:-

हे माँ, माँ, शून्य से शून्य तक, तिमिर ढलेगा, बुलबुले सी जिन्दगी, कुछ माणिक कुछ मोती, प्रांजलि आदि तथा आसमान को छू लें (बाल गीत) एक सरस बाल गीत पुस्तक आदरणीय सुरेश जी चौधरी और मेरा एक साझा संकलन भी प्रकाशित हुआ है। जिसकी भूमिका प्रसिद्ध बालगीत समीक्षक श्री संजय जायसवाल, लखनऊ और आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सुश्री सविता पौद्दार ने लिखी है। परम आदरणीय रविन्द्र नाथ टैगोर की गीतांजलि का हिन्दी में काव्यानुवाद बहुत ही सुंदर किया है। जिसे मैं प्रकाशन से पूर्व ही आद्योपांत आत्मसात कर चुका था।

मैं और आप समय समय पर एक दूसरे से व्यक्तिशः भी मिलते रहे हैं। सबसे ताजा जयपुर के हैरिटेज होटल 'शाहपुरा हवेली' में एच एफ टी आर के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सिंह जी शाहपुरा तथा जयपुर के अनेक साहित्यकारों के साथ आपका सानिध्य प्राप्त हुआ। जिसमें सुरेन्द्र सिंह जी ने आपको साफा पहना कर स्वागत किया तथा लोकेश कुमार सिंह 'साहिल" ने शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। साथ ही साहित्यप्रेमी और मेरे समधी श्री सुरेन्द्र सिंह जी राठोड़ ने मेरी पुस्तक "Divinity Centers of Jaipur" भेंट की।

कार्यक्रम संयोजक के नाते मैंने सभी आगुन्तकों और विशेषतौर से श्री चौधरी जी का आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व जयपुर तथा कोलकाता में हम मिलते रहे हैं।

आशा नहीं दृढ विश्वास कि हम आपके सारगर्भित, सुरुचिपूर्ण और सामयिक प्रकाशनों से निरंतर लाभान्वित हो रहे हैं। इसके साथ ही आने वाली पीढियाँ भी इस बृहद साहित्य भण्डार से ज्ञानार्जन कर सकेंगी। मैं इस बात से भी आश्वस्त हूँ कि आने वाले समय में बहुत से विद्यार्थी इनके साहित्य पर शोध कार्य करेंगे और इनकी साहित्यिक निधियों से बहुत कुछ सीख सकेंगे।
पहले का लिखा दोहा पुनः प्रस्तुत है:-
साहित्यिक आकाश में, दमके यथा दिनेश।
मरूधरा का रोहिड़ा, जुग जुग जिए सुरेश ।।

मैं अंतस्तल से श्री सुरेश जी चौधरी के उत्तम स्वास्थ्य और सफल जीवन की कामना करता हूँ। जिससे हम साहित्यिक क्षेत्र में आपके अवदान से सतत लाभान्वित होते रहें।
~कल्याण सिंह शेखावत
39-उमापथ, रामनगर सोडाला,
जयपुर-302019 मो. 6375284835

प्रेरणा स्रोत: सुरेश चौधरी 'इंदु'

 # रावेल पुष्प

मैं वर्षों से लेखन के साथ साहित्यिक पत्रकारिता भी करता रहा हूं और इसी क्रम में मेरे पास किसी सज्जन का फोन आया कि एक साहित्यिक पत्रिका के लोकार्पण का कार्यक्रम है इसकी रिपोर्टिंग करनी है अखबारों के लिए।उस पत्रिका के प्रकाशक आपकी सेवा चाहते हैं। मैं सहर्ष तैयार होता हूं और कार्यक्रम स्थल पर पहुंच जाता हूं।वो पत्रिका थी उड़ान और उसके प्रकाशक थे श्री सुरेश चौधरी जी। ये वाकया लगभग एक दशक पूर्व का रहा होगा। उसके बाद तो फिर मिलना-जुलना जारी रहा। उसके बाद मैं उन्हें कुछ कार्यक्रमों में आमंत्रित भी करता रहा और नगर में होने वाले कई कार्यक्रमों में हम शामिल होते रहे। इस बीच वरिष्ठ कवि अगम शर्मा जी का असामयिक निधन हो गया और छपते छपते कार्यालय के नये बने कक्ष में एक शोक सभा आयोजित थी। दरअसल कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड,अगम शर्मा,लखबीर सिंह निर्दोष और मैं रावेल पुष्प -हम चारो एक राष्ट्रीय साहित्यिक कार्यक्रम में शामिल होने माउन्ट आबू गये हुए थे और एक ही कमरे में हमारी व्यवस्था थी। वहीं हमारे सामने ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वे चल बसे। उनकी स्मृति में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात आपसी मेल-मिलाप के दौरान सुरेश चौधरी जी से मैंने एक चर्चा की। वो बात यों थी कि "मेरी बांग्लादेश यात्रा" उन दिनों धारावाहिक रूप से प्रभात खबर के रविवारीय अंकों में प्रकाशित हो रही थी और अब उसे पुस्तकाकार प्रकाशित करने की योजना थी। मैंने इसका जिक्र उनसे किया तो उन्होंने अपने शुक्तिका प्रकाशन से इसे प्रकाशित करने की मंशा जताई। मैं तो तैयार ही था। इस तरह मेरी भ्रमण साहित्य की पुस्तक शुक्तिका प्रकाशन से ही निकली और खुशकिस्मती ये रही कि उसकी प्रस्तावना साहित्य मनीषी पद्मश्री डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र जी तथा छपते छपते वार्षिक अंकों के सम्पादक श्रीनिवास शर्मा जी ने लिखी थी। पुस्तक का भव्य लोकार्पण तो हुआ ही, पत्र-पत्रिकाओं में चर्चा भी खूब हुई। इन सब के साक्षी सुरेश चौधरी जी रहे। इस तरह उनके साथ नजदीकियां बढ़ती रहीं और मित्रवत और भ्रातृवत सम्बन्ध बने। उस समय तक उनका साहित्य जगत के साथ भले ही सम्बन्ध उतना न बना हो, लेकिन वे सतत् समर्पित भाव से लेखन करते रहे। उसके बाद तो फिर उनकी एक-एक कर पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं और फिर चर्चा में भी आने लगीं। उन्होंने अपने 68 वें जन्मदिन पर कविगुरु रवीन्द्र नाथ ठाकुर के 68 गीतों को छंदों में अनुवाद कर अपनी श्रद्धा निवेदित

की- अड़सठ शरद: रवीन्द्र की शरण! वैसे तो रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कविताओं के अनेकों अनुवाद हुए हैं, लेकिन इस तरह छंदों में अनुवाद अप्रतिम है। मैंने स्वयं कई रवीन्द्र जयन्ती के कार्यक्रमों में उनके द्वारा अनूदित गीतों को प्रस्तुत किया है और लोगों ने काफ़ी पसंद भी किया। इसके अलावे उनकी एक और महत्वपूर्ण पुस्तक आई थी - चमत्कृत करती भाषा संस्कृत! इस पुस्तक में उन्होंने संस्कृत भाषा की दुर्लभ विशेषताओं से जहां परिचित करवाया है वहीं वेदों में वर्णित वैज्ञानिक सिद्धांतों को भी बखूबी रेखांकित किया है। इसके अलावा देश की विभिन्न संस्थाओं के संस्कृत ध्येय वाक्यों का शानदार और महत्वपूर्ण संकलन कर इसमें शामिल किया है मसलन - भारत सरकार: सत्यमेव जयते, लोकसभा: धर्मचक्र प्रवर्तनाय,आल इंडिया रेडियो: सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय, दूरदर्शन: सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, भारतीय जीवन बीमा निगम: योगक्षेमं वहाम्यहम्,डाक तार विभाग: अहर्निश सेवा महे तथा और भी अनेकों। ये काफ़ी खोजपूर्ण और श्रमसाध्य कार्य उन्होंने किया है।इसी तरह और भी दार्शनिक तथा वैदिक विषयों पर उनकी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं जो आम पाठकों को भी बोधगम्य हैं।वे उम्र के इस पड़ाव पर भी निरन्तर सृजनशील हैं और हर रोज एक भजन लिखकर एक हजार भजनों के साथ इंटरनेशनल बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना स्थान बना चुके हैं।उनके जीवन में आये उतार-चढ़ाव के बीच भी उन्होंने अपना संतुलन बनाए रखा और अपनी हमसफ़र के साथ जीवन यात्रा को मुकम्मल तरीके से जारी रखने में कामयाब रहे। हम सब तो आज उनके जीवन के 75 वें वर्ष में यही कामना करते हैं कि वे स्वस्थ रहकर दीर्घायु हों और इंदु की तरह शीतलता प्रदान करते हुए सबके प्रेरणा स्रोत बने रहें। आखिर में उनकी यानि सुरेश चौधरी 'इंदु' जी की ही पंक्तियों से उनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति दें -

गगन को चूम लेने की तमन्ना लिए हौसलों के पंख से
उड़ रहा था
राह में एक हमसफर मिला
और मंजिल मिल गई
एक सपना जो बसा था
अपनी आंखों में
आज पूरा हुआ
तो लगा
सारी कायनात मिल गई!

अध्यक्ष: कोलकाता ट्रांसलेटर्स फ़ोरम
साहित्य मंत्री: रचनाकार
ईमेल: rawelpushp@gmail.com मो. 9434198898

भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी और संवेदनशील साहित्य साधक : सुरेश चौधरी "इंदु"

कुछ रिश्ते रक्त से नहीं, विचारों और आत्मीयता से बनते हैं। आदरणीय सुरेश चौधरी "इंदु" जी से मेरा परिचय भी साहित्य की आभासी दुनिया में हुआ था, परन्तु समय के साथ यह संबंध सगे भाई से भी बढ़कर आत्मीय हो गया। वर्ष 2012 में "सत्यम शिवम सुन्दरम" साहित्यिक मंच पर होने वाले संवादों के माध्यम से उनसे निकटता बनी, जो आज भी उसी ऊष्मा और विश्वास के साथ बनी हुई है।

कोलकाता प्रवास के दौरान उनके परिवार से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भाभी जी का स्नेह, घर का आत्मीय वातावरण और विशेष रूप से उनकी 96 वर्षीय माताजी का वात्सल्य आज भी स्मृति-पटल पर अंकित है। उन्होंने मुझे अपने पास बिठाकर जयपुर की अनेक बातें पूछीं, "रावत मिष्ठान्न भंडार" वाली गली तक याद की और बिना चश्मे के अपनी डायरी में मेरा पता लिख लिया। उस क्षण में मुझे लगा कि भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप ग्रंथों में नहीं, ऐसे ही आत्मीय संबंधों में जीवित रहता है।

सुरेश चौधरी "इंदु" जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी आध्यात्मिक दृष्टि है। भगवद्गीता के श्लोकों और वैदिक वाङ्मय के प्रति उनकी गहरी आस्था केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक भी है। वे ज्ञान और विज्ञान के अंतर को अत्यंत सहज उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं। उनके अनुसार केवल यह जान लेना कि काष्ठ में अग्नि विद्यमान है, ज्ञान है; परंतु उस अग्नि को प्रकट करने की विधि जानना विज्ञान है। यही दृष्टि उनके समस्त लेखन का मूलाधार है। वे केवल तथ्य प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उनके पीछे निहित तत्त्वज्ञान और जीवनोपयोगिता को भी उद्घाटित करते हैं।

आ. सुरेश भैया की साहित्य साधना बहुआयामी है। भजन, लेख, सांस्कृतिक विमर्श, आध्यात्मिक चिंतन और भारतीय परंपराओं की व्याख्या..सभी क्षेत्रों में उनकी लेखनी समान रूप से सक्रिय है। उनके भजनों में भक्ति की माधुर्य धारा प्रवाहित होती है। श्रीराम और श्रीकृष्ण के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा उनकी रचनाओं में सहज रूप से अभिव्यक्त होती है। "तुलसी के प्रभु अयोध्यानाथ, भैया के स्वर में मुस्कराते" जैसी पंक्तियाँ उनके भावलोक की गहराई को प्रकट करती हैं।

उनकी चर्चित कृति "भ्रम और भ्रांतियाँ" भारतीय संस्कृति के संबंध में प्रचलित अनेक मिथकों और भ्रांत धारणाओं का तार्किक एवं शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत करती है। वे भारतीय संस्कृति को स्त्री-विरोधी अथवा दलित-विरोधी मानने वाली धारणाओं का प्रामाणिक खंडन करते हैं। गार्गी, लोपामुद्रा, उभय भारती जैसी विदुषी नारियों के उदाहरणों द्वारा वे सिद्ध करते हैं कि वैदिक संस्कृति में स्त्री को सम्मान और बौद्धिक

स्वतंत्रता प्राप्त थी। इसी प्रकार वे शम्बूक प्रसंग, सीता निर्वासन तथा अन्य विवादास्पद प्रसंगों पर भी अपने अध्ययन के आधार पर वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय संस्कृति के विविध आयामों..तुलसी पूजन, सूर्य नमस्कार, नमस्ते, तिलक, सिन्दूर, व्रत, चरण-स्पर्श, शिवलिंग पूजा आदि की.. वैज्ञानिक और सांस्कृतिक व्याख्या उनके अध्ययन की व्यापकता का प्रमाण है। वे मानते हैं कि सनातन संस्कृति केवल आस्था नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित और मूल्यवान बनाने वाली जीवन-पद्धति है।

सुरेश भैया केवल लेखक नहीं, एक कर्मशील सांस्कृतिक योद्धा भी हैं.. अंतरराष्ट्रीय संस्था "रचनाकार" के संस्थापक के रूप में वे साहित्य और समाज की उत्कृष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित कर निरंतर प्रोत्साहित कर रहे हैं। उनकी सक्रियता साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों में समान रूप से दिखाई देती है। अनेक पुस्तकों का अनुवाद, विभिन्न मंचों पर सहभागिता तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु सतत प्रयास उनकी कर्मनिष्ठा के परिचायक हैं।

उनके लेखन में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। वे भारतीय संस्कृति के गौरव का गान करते हुए भी उसे जीवनोपयोगी तर्कों से पुष्ट करते हैं। उनकी दृष्टि समन्वयवादी है, जो समाज को विभाजित नहीं बल्कि जोड़ने का कार्य करती है।

निस्संदेह सुरेश चौधरी "इंदु" जी भारतीय संस्कृति के गंभीर अध्येता, सरस्वती के साधक और बहुआयामी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनका साहित्य केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि चिंतन और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना और उसके वास्तविक स्वरूप को जन-जन तक पहुँचाने के उनके प्रयास निश्चय ही अभिनंदनीय हैं।

"आज जब साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में मूल्य-संकट की चर्चा होती है, तब सुरेश चौधरी 'इंदु' जी जैसे साधक विश्वास जगाते हैं कि भारतीय संस्कृति की अविच्छिन्न धारा आज भी अपने सजग प्रहरियों के कारण प्रवहमान है। उनकी लेखनी, उनका चिंतन और उनका कर्म निरंतर समाज को आलोकित करता रहे।

ऐसे साहित्य-साधक, संस्कृति-पुरुष और आत्मीय अग्रज को हृदय से प्रणाम।

~ ज्योत्सना सक्सेना"प्रकाश"

साहित्य साधक

रूबी भूषण

सुरेश चौधरी को जब पहली बार मैंनें देखा, उनको जाना और उनकी रचनाओं से रू-ब-रू हुई तो ऐसा भान हुआ कि एक दिव्य महापुरूष अपने हृदय में सबके लिए प्यार अपनत्व सम्मान का भाव रखते हैं।

सुरेश चौधरी जी कलकत्ता की या बंगाल की या पूर्वोतर प्रदेश से कहीं आगे विदेश में भी अपने देश के साहित्य का परचम फैला रहे है और अपनी विरासत को बचाये है।

प्रतिदिन एक ईश्वर को समर्पित कविता, गीत लिखने वाले सुरेश दादा से मेरी मुलाकात यूँ हुई कि रचनाकार की बिहार शाखा की, की सदस्या आराधना प्रसाद ने मुझे फोन किया और कहा कि सुरेश चौधरी जी के आयोजन में कलकत्ता चलियेगा क्या?

मैंनें पूछा, कलकत्ता! हाँ दीदी कलकत्ता, बहुत अच्छा और भव्य साहित्य को समर्पित कार्यक्रम होता है। वहाँ के श्रोता भी बहुत मनयोग से रचनाओं को सुनते और दाद देते हैं। आप मेरे साथ चलिये आपको अच्छा लगेगा। उनकी बातों को सुनकर मेरा मन भी जाने को शोर मचाने लगा। मैंनें अपने पतिदेव से बात की और चल पड़ी कलकत्ता की ओर। वहाँ का फ़ोन नंबर हमलोगों को पहले ही दे दिया गया था। जिससे अगर हमें कोई कठिनाई हो तो हम उस नंबर पर बात कर सकते हैं। होटल पहुँचे, वहाँ बड़े प्रेम से हमारा स्वागत हुआ। मैं तैयार हो रही थी कि दरवाज़े पर नॉक हुई, सामने सफ़ेद कुर्ता पैजामा, हाथ में एक छड़ी लिये सुरेश चौधरी जी खड़े थे। उनके गरिमामई व्यक्तित्व को देखकर सहज मुँह से उनके लिए दादा का संबोधन निकला।

सरल व्यक्तित्व के धनी मृदुभाषी, लब्धप्रतिष्ठित, साहित्यकार ने मुझे प्रथम दृष्टि में ही प्रभावित किया। हॉल में ये भाभी (अपनी पत्नी) के साथ बैठे देश के कोने-कोने से आये प्रत्येक साहित्यकारों से उनका कुशलक्षेम पूछ रहे थे। दोनों पति-पत्नी के चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर अर्धनारिश्वर रूप का ध्यान आया और श्रद्धा से सर झुक गया।

किसने नाश्ता किया, किसे कलकत्ता घूमने जाना है, उसके लिए गाड़ी की व्यवस्था करना। हर कार्यक्रम की रूप-रेखा मिनट-टू-मिनट बनी हुई थी। रात में हुगली नदी में एक बोट से घुमाना और बोट पर ही भोजन की व्यवस्था, नृत्य, संगीत, हंसी-मज़ाक का अद्भुत आयोजन करवाया। मुझे याद आई वो पंक्ति यथा राजा-तथा प्रजा। इनकी पूरी टीम अपने पूरे मनयोग के साथ एक-एक साहित्यकार का, कलकत्ता के करीब-करीब सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों, साहित्यकारों का आना और उनका यथोचित स्वागत, अभी भी याद आता है।

अत्यंत सादगी भरे व्यक्तित्व वाले सुरेश चौधरी जी अपने बातें बहुत ही संतुलित ढंग से रखते हैं। जब ये मंच से बोल रहे थे तब इनकी बोलने की क्षमता और विषय पर पकड़ देखकर आश्चर्यचकित और अभिभूत हुई। इनका हर शब्द कर्णप्रिय और स्पष्ट होता है। कार्यक्रम तो समाप्त हो गया और हम वापस पटना की ओर चल पड़े। चलते समय उनका कहना, 'अगली बार जरूर आइयेगा' लगा कि मैं किसी साहित्यिक आयोजन से नहीं बल्कि अपने घर से चल रही हूँ। जिस प्रकार एक बेटी, एक बहन बिदा होती है उस प्रकार हमारे रास्ते का खाना भी हमारे साथ रखा गया। खाना रखना बड़ी बात नहीं थी। पर जिस प्यार से एक बड़े भाई की तरह उन्होंनें मेरा ध्यान रखा, ख़्याल रखा वह बड़ी बात थी। मैंनें देश-विदेश में अनेक आयोजनों में हिस्सा लिया परंतु वह बात नहीं मिली। वहाँ से मिले प्यार को अपने हृदय की कोठियों में सहेज़ कर रख लिया है।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि सुरेश चौधरी जी हमेशा स्वस्थ्य रहे, सानन्द रहे और अपनी कलम की खुश्बू से साहित्य की बगिया में सुगंध बिखेरते रहें। जब भी हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा जायेगा उसमें आदरणीय सुरेश दादा का स्थान अग्रिम पंक्ति में होगा।

रूबी भूषण

विलक्षण विद्वान हैं श्री चौधरी जी।

****

कोई तीन बरस हुए होंगे,बाबू भाई घायल का फोन आया -

भाई साहब कलकत्ता में एक कार्यक्रम है,चलेंगे क्या?

मैंने बिना कुछ पूछे,हाँ कर दी, और कहा कि आने जाने के रिज़र्वेशन करवा लो। वन्दना को पता लगा तो वह भी तैयार हो गई।

वहाँ पहुँचे तो पता चला कि भाई संजय शुक्ला जी ने दिन में ही एक गोष्ठी रख ली है।गोष्ठी निर्धारित समय के काफ़ी विलम्ब से शुरू हो सकी तो समाप्त भी देर से हुई।

मुख्य कार्यक्रम,जिसके लिये आए थे वहाँ पहुँचने में भी देर हो गई।वहाँ पहुँचे तो शाम का भोजन चल रहा था।

मुझे पता था कि यहाँ पहली बार आए हैं, कोई पहचानता तो है नहीं, इसलिये पूछ-परख का तो कोई प्रश्न ही नहीं है लेकिन जब भाई श्री सुरेश चौधरी जी ने कहा कि आइये रामावत जी,तब थोड़ा आश्चर्य भी हुआ कि ये कैसे पहचानते हैं? फिर अनुमान लगाया कि शायद बाबूभाई ने फोन पर जानकारी दी होगी।

उन्होंने उलाहने भरे लहजे में कहा कि आप लोग काफ़ी लेट हो गए,सभी लोग भोजन कर के जा चुके हैं वरना सभी से मिलना हो जाता। मैं भी संकोच ग्रस्त था, फिर बाबू भाई ने बताया कि शुक्ला जी ने एक गोष्ठी रख ली थी , उसमें लेट हो गए।

चौधरी जी बोले,चलो पहले भोजन कर लो बस आप लोग ही बचे हो।

उनका वह स्नेहसिक्त आतिथ्य हृदय पर अंकित हो गया।

दूसरे दिन शाम को कवि सम्मेलन था। मैं जानता हूँ कि मुझे सुनने के बाद ही,लोग मान-सम्मान देते हैं वरना पहले तो कोई पूछ-परख इसलिये नहीं होती कि कोई जानता ही नहीं है। बाबू भाई की उधर पर्याप्त लोकप्रियता होने से वे घिरे रहते हैं।

।दूसरे दिन आयोजन में सुरेश जी ने मुझे सुना। मैंने भी उन्हें यथा संभव जाना।वे पहली बार में पूरी तरह जान लेने जितने संक्षिप्त नहीं हैं।वे काव्य मर्मज्ञ,तपोनिष्ठ साधक हैं। वेदों - उपनिषदों के ज्ञाता और समर्थ रचनाकार हैं संस्था 'रचनाकार'

उनके व्यक्तित्व-कृतित्व की प्रतिध्वनि है।

१४ जुलाई २६ को उनका अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है,उसी परिप्रेक्ष्य में एक पत्रिका का भी प्रकाशन होने जा रहा है।

मैं भाई श्री सुरेश चौधरी जी के स्वस्थ -सानन्द और शतायु जीवन की मंगलकामना करते हुए उनका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।
उनके प्रति मेरे सम्मान के ये शब्द यदि उपयुक्त लगें तो कृपया इन्हें पत्रिका में स्थान प्रदान कर कृतार्थ करें।

प्रमोद रामावत 'प्रमोद'।

समीक्षा पुस्तक

प्राचीन वैदिक वांगमय में कालांतर में अनेक भ्रान्तियाँ आ गयी हैं। प्रज्ञापुरूष सुरैश चौधरी जी ने उन भ्रान्तियों को अपनी व्यापक दृष्टि से छानकर सनातन संस्कृति की निरंतरता, अविछिन्नता का आदर्श स्तंभ स्थापित किया है। भारतीय संस्कृति स्त्री विरोध और दलित विरोधी नहीं है। ऋगवेद में ऋषि तत्व द्रष्टा हैं। ऐसी स्थिति में शम्बूक बध एक शूद्र की साधना तपस्या के लिए बध सर्वथा झूठा है। शम्बूक तंत्र साधना के बल पर समाज का अहित करना चाहता था। ऐसी स्थिति में उसकी कुप्रवृत्तियों को नष्ट करना राम का लक्ष्य था। यह भी झूठा लगता है कि राम के द्वारा शम्बूक हत्या हास्यास्पद लगता है। कोई राजा स्वयं किसी की हत्या नहीं करता है। उसके कर्मचारी हत्या करते हैं।

वैदिक काल की स्त्रियाँ शास्त्रार्थ करती थीं। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था। अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा नें अगस्त्य को दीक्षित किया था। मिथिला में मंडन मिश्र और शंकराचार्य का शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है, जिसमें शंकराचार्य ने उभय भारती को निर्णायिका की भूमिका प्रदान किया है। यही नहीं शंकराचार्य ने उनके नाम से शारदा पीठ की भी स्थापना किया है।

सीता निर्वासन की बात आती है उसमें रामराज्य की मौलिक कल्पना है। राजा का अपना कुछ नहीं होता है। प्रजा को निर्भीक होकर अपनी बात राजा के समक्ष रखने की अनुमति है। राम ने स्पष्ट कहा है"जौ अनीति कहुं भाखौं भाई/तो मोहे बरजहुं भय बिसराई/प्रजा के कहने पर सीता का निर्वासन हुआ और बाल्मीकि दशरथ के परम मित्र थे। आधुनिक युग के दून जैसा उनका आश्रम था। बाल्मीकि ने लव कुश को धनुर्विद्या, गन्धर्वविद्या सब विद्या सिखाया है। अयोध्या में राम के राज्याभिषेक में लवकुश ने रामायण को अपने स्वर माधुर्य की प्रतिभा का कुशल प्रदर्शन किया है। सीता के निर्वासन के

राम ने एक तपस्वी का जीवन धारण किया है। शिवलिंग की पूजा पुरुष प्रकृति की पूजा है। हमारी भारतीय संस्कृति में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना है। शक्ति के बिना शिव शव है। कालिदास ने रघुवंशम् कहा है -" वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये/जगत:पितरो वन्दे पार्वती परमेश्ववरो/

जब जब पृथ्वी पर अनाचार बढ़ता है भगवान का अवतार होता है"जब-जबहोहिं धरम के हानि बाढ़हिं असुर अधम अभिमानि"कृष्ण ने भी कहा "संभवामि युगे युगे "

हर युग में आतंकवादी मारा जाता है रावण, कंस को मारकर ही धर्म की स्थापना हुई है। आधुनिक काल मे ं बुरहानबानो जैसे आतंवादी का मारना आवश्यक था। तुलसी दास भी कहते है"भय बिनु होत न प्रीत" सुरेश चौधरी जी नै विकसित भारत बनाने के लिए सभी की आस्था और भाव को समादृत करके एक समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है-"जयति जयति राघवेन्द्र, जयति जयति जानकिवल्लभ श्री राम "भारतीय संस्कृति में राम जेसा कोई आदर्श नहीं है। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। रामराज्य की कल्पना अयोध्या की संस्कृति है। जहाँ सत्त दो भाइयों के बीच गेंद की तरह उछल रहा है। भारतीय संस्कृति में पत्नी अपने को घर और समाज की ध्वजा मानती है। सुरेश चौधरी जी ने अपनी रचना के माध्यम से नारी को जगाने का प्रयास किया है- "जाग -जाग हे नारी जाग;दर्गा बन महिषासुर का संघार करे, माँ टेरेसा बन जन-कल्याण करे"मनुस्मृति में तो नारी का गौरवगान हुआ है-"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "आधुनिक युग मैं जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कामायनी में कहा है" नारी तुम केवल श्रद्धा हो" वैदिक काल से ही नारियाँ पूजी जाती हैं। उनकी शक्ति अक्षुण्ण है। नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। कभी -कभी नारियांॅ भी अपनी मर्यादा आदर्श को भूल जाती हैंतो उसकी लिए भी क्रान्तिकारी कदम उठाना आवश्यक हो जाता है। बंगाल साहित्य संस्कृति कला, राष्ट्रीयता की धरती है। सतीप्रथा, विधवा विवाह का विरोध इसी धरती से उठा है। राष्ट्र गान और राष्ट्रगीत की धरती यही बंगाल है। स्त्री को समादृत रामकृष्ण ने किया है। नटी विनोदनी वेश्या की लड़की थी। वेश्या में अगर सीता, सावित्री के रूप में मंच पर उतरती है तो वह सर्वथा पूज्य है। खुदीराम बोस ने वन्देमातरम की अभ्यर्थना करके फाँसी के फन्दै को माँ का माल्यार्पण समझकर खुशी से गले लगा लिया। वंगाल की धरती विकृतियों सै भर गई थी ऐसे समय में ममता, अहंता का उन्मूलन आवश्यक था। हिन्दुत्व को पुन:प्रतिष्ठापित करना राष्ट्र की रक्षा का व्रत था। एकता, संगठन के बिना कोई महायज्ञ नहीं होता है। बंगाल की धरती जागी है। सनातन संस्कृति की रक्षा की है। सनातन निरंतरता है, अवि छिन्नता है, मनुष्यता का राग है। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना है।

संस्कृत भाषा देवभाषा है। संस्कृत कम्प्युटर की भाषा है। सेक्युलरिज्म शब्द का संविधान में कहीं जिक्र नहीं है। इन्दिरा गाँधी ने आपातकाल में एक नया शब्द सेक्युलरिज्म जोड़ दिया। डाॅ अम्बूडकर ने कहा है"मैं राजनीति मे सुख भोगने नहींबल्कि अपने सभी दबे कुचले भाईयों को उनका अधिकार दिलाने आया हूंँ" अम्बेडकर ने राजभाषा संस्कृत बनाने की वकालत भी किया था। गांधी

नेहरु ने अंबेडकर की प्रतिभा को दबादिया था। कांशीराम मे अंबेडकर को जन -जन का नेता बनाया। सुरेश चौधरी जी भारतीय संस्कृति के उद्भट विद्वान हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति की विस्तृत व्याख्या किया है। एक गोत्र में शादी क्यों नहीं, कान छिदवाना, बिन्दी कुमकुम तिलक, जमीन पर बैठकर भोजन, हाथ जोड़कर नमस्ते करना, पीपल की पूजा, सूर्य नमस्कार, सिर पर चोटी, व्रत रखना, चरण पर्श करना, सिन्दूर लगाने की महत्ता, तुलसी पेड़ की पूजाआदि सभी भारतीय संस्कृति का विशद वर्णन किया है। हमारी वैदिक संस्कृति में अवतारों का कितना क्रमिक और वैज्ञानिक विकास है।

सुरेश चौधरी जी ने शिवलिंग पूजन के महत्त्व को बड़े सुंदरढंग से रेखांकित किया है -"शिवलिंग का मतलब है पवित्रता का प्रतीक"शिव और शंकर के अंतर को भी बड़ी सूक्ष्मता से समझाया हे। उन्होंने प्रकृति से शिव का क्या संबंध है? इसकी भी विशद चर्चा किया है"लिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और उपर महादेव हैं। केवल लिंग की पूजा में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा अन्तर्भूत है।

सुरेश चौधरी जी भारतीय संस्कृति के महान अध्येता हैं। चौधरी जी सरस्वती के साधक, तपस्वी हैं.। उनकी प्रतिभा बहुआयामी है। कितने पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। अनेक सम्मानों से सम्मनित हैं। उन्होंने साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों मैं अपनी गतिशीलत, क्रियाशीलता का परिचय दिया है। वे अन्तर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार के संस्थापक हैं। यह संस्था उत्कृट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है और नगद राशि भी देती है।

भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए आदरणीय सुरेश चौधरी जी को साधुवाद।

प्रख्यात अध्येता, विदुषी मनीषि डॉ. सुशीला ओझा जी का आशीर्वाद पुस्तक भ्रम और भ्रांतियां को प्राप्त हुआ।

पत्र संदेश

आदरणीय सुरेश चौधरी जी,
सादर चरणस्पर्श।

सूर्य, चंद्र, आकाश, पृथ्वी आदि अनायास ही जीवन-धन लुटाते हैं। वृक्ष, नदी, अग्नि, वायु आदि सम्पूर्ण प्रकृति की प्रकृति ही परोपकारी है। किसी भी प्रकार के प्रति उपकार की कामना नहीं, सम्पूर्ण निष्काम भाव।
माता-पिता-गुरु बालक को सदा अपने से उत्तम बनाने का प्रयास करते हैं और वे ही हैं जो बालक की प्रगति से ईर्ष्या नहीं करते, सदैव उत्तरोत्तर उन्नति का आशीष ही देते हैं।
आपको मैं उपर्युक्त तीन वर्गों में से किस के समतुल्य कहूँ? आप अनायास स्नेह-धन के स्रोत, निष्काम-परोपकार की निधि और अमूल्य-आशीष की अविरल धारा हैं।

संसार और समाज में ऐसे बिरले ही होते हैं जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से कभी मिले बिना भी अपना मान लें। आप उनमें से हैं।

21 जनवरी 2021 को वहाट्स ऐप पर पहली चर्चा से निरन्तर आपके सम्पर्क-सान्निध्य प्राप्ति में सोशल मीडिया की ही कृपा रही। कुछ एक बार भारत आने पर आपसे भेंट करने की योजना बनाई किन्तु सभी योजनाएँ सांसारिक व्यस्तताओं की भेंट चढ़ गईं। इस बार प्रभु इच्छा रही तो आपके 75वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आपसे भेंटवार्ता और स्नेहाशीष का सौभाग्य प्राप्त हो।

ऐसा लगता है न जाने कब से जानते हैं, फिर भी आपको सम्पूर्णता से जान नहीं पाए। जहाँ आपके महान उद्योगपति, प्रतिष्ठित आर्थिक सलाहकार, वरिष्ठ चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में अर्थजगत के प्रति बहुमूल्य योगदान रहे, वहीं आप बहुआयामी साहित्यकार और आध्यात्मिक विश्लेषक के रूप में साहित्य और आध्यात्मिक जगत के प्रति अमूल्य योगदान कर रहे हैं।

आप कठिन व्यावहारिक भूमिकाओं में नेतृत्व की कुशलता के साथ साथ-साथ हृदय में सुकोमल संवेदनाएँ भी रखते हैं।

ज्ञानगंगा, श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस के साप्ताहिक कार्यक्रमों में आपके आध्यात्मिक व व्यावहारिक विचारों को सुनने का आनन्द वही जान सकता है, जिसने सुना हो।

आपके भजन, कविताएँ और लेख सदा ही गूढ़, भावपूर्ण, सार्थक और सूचनाप्रद होते हैं। आपकी सभी प्रकाशित पुस्तकें कुछ नया जानने और सीखने के लिए हैं। आपको प्राप्त अनेक सम्मान आपको पाकर स्वयं सम्मानित हुए हैं। मैं अपने आप को यहीं रोकता हूँ, क्योंकि आपके साहित्य की प्रशंसा करना सूरज को दिया दिखाने जैसा ही होगा।

आपने मुझे सदा प्रेरित किया है। अस्वस्थता के उपरान्त भी शिथिल न पड़ना, विचारों में साहस और सकारात्मकता, कुछ भी नया आरम्भ करने का उमंग और उत्साह, ये सब विशेषताएँ किसका मनहरण न कर लें? शायद ही कोई हो जो आपके स्नेहिल और गुणसम्पन्न व्यक्तित्व से प्रभावित न हुआ हो।

आपके मार्गदर्शन और सान्निध्य में बहुत कुछ सीखने-समझने को प्राप्त होता है। आप सदैव मेरा उत्साहवर्धन करते रहते हैं, कभी मेरे साहित्य की प्रशंसा करके और कभी मेरी प्रस्तुति की प्रशंसा करके। किस-किस के काव्य की तुलना करते हुए मेरी कविता को बेहतर कह देना आपकी प्रियता ही है। मैं यह भी जानता हूँ कि आपका मेरे प्रति विशेष लगाव है। और मेरा भी आपके प्रति।

प्रभु आपको सानन्द रखें। आपके स्नेहाशीष की वर्षा होती रहे।
ऐसी कामना के साथ,

आपका

अजय गोयल
युगांडा